दक्षिण भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास

लेखक :—
प्रतापचन्द्र 'आजाद'
एम० ए०, एल-एल० बी०

स्वराज्य प्रकाशन
बरेली

दक्षिण भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता

का

इतिहास

लेखक :—
प्रतापचन्द्र 'आज़ाद'
एम० ए०, एल-एल० बी०

स्वराज्य प्रकाशन
बरेली

दक्षिण भारत की
कला,
संस्कृति
एवं
सभ्यता
का

इतिहास

लेखक :—

प्रतापचन्द्र 'आजाद'

एम० ए०, एल-एल० बी०

स्वराज्य प्रकाशन

बरेली

दक्षिण भारत की
कला,
संस्कृति
एवं
सभ्यता
का

इतिहास

लेखक :—
प्रतापचन्द्र 'आजाद'
एम० ए०, एल-एल० बी०

स्वराज्य प्रकाशन
बरेली

प्रकाशक
सत्यवीर
स्वराज्य प्रकाशन,
बरेली।

मूल्य : १ रुपया
प्रथम संस्करण : १९३५
मुद्रक हिन्द प्रिन्टर्स बरेली

समर्पण

उन महान् आत्माओं की जिन्होने संकीर्णता
के विरुद्ध आवाज उठाकर
उत्तर और दक्षिण भारत को एक प्रेम और
सद्भावना की लड़ी
में
पिरो दिया है।

—'आज़ाद'

मेरी अपनी बात

१६६० ई० में मैंने लंका की यात्रा की थी। उत्तर भारत से लंका जाते समय मुझे दक्षिण भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध स्थानों को देखने का अवसर मिला। मैंने लंका प्रस्थान करने से पूर्व मद्रास, मैसूर, ट्रावनकोर कोचीन और आंध्र प्रदेश का [illegible] का भ्रमण किया और उन सभी स्थानों की यात्रा की जो सांस्कृतिक, धार्मिक या राजनीतिक दृष्टि से प्रसिद्ध है या प्रसिद्ध रहे है। दक्षिण भारत की इस यात्रा से मुझे वहां की कला संस्कृति एवं सभ्यता और साहित्य के अध्ययन करने का भी शुभअवसर मिला। मुझे यह अनुभव करके बड़ी प्रसन्नता हुई कि दक्षिण भारत की कला, संस्कृति न केवल प्राचीन समय से लेकर अब तक उच्च कोटि की रही है वरन प्राचीन भारत की गौरव एवं उदारता का भी एक प्रतीक रही है। उसी समय से मेरी यह इच्छा हुई कि मैं दक्षिण भारत की कला संस्कृति, एवं सभ्यता पर कोई पुस्तक लिखूं। मैंने लंका में "भारतीय संस्कृति की छाप" के शीर्षक से कई लेख लिखे और वह भारत के कई उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी के पत्र पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुये। इसी विषय पर मेरी एक वार्ता आल इन्डिया रेडियो स्टेशन लखनऊ से भी प्रसारित हुई। किंतु दक्षिण भारत की कला, और संस्कृति एवं सभ्यता पर मुझे कोई लेख अथवा पुस्तक लिखने का अवकाश न मिल सका।

नवम्बर सं० १६६४ ई० में मुझे फिर दक्षिण भारत जाने का अवसर प्राप्त हुआ और मैं इस बार आन्ध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में लगभग एक मास [illegible] रहा। वहां से इस बार मुझे हैदराबाद से आन्ध्र प्रदेश के लगभग सभी ऐतिहासिक और प्रसिद्ध स्थानों को देखने का अवसर मिला। अजन्ता और एलोरा किसी समय हैदराबाद राज्य के औरंगाबाद जिले मे थी। अब यह जिला महाराष्ट्र में शामिल कर दिया गया है, मुझे वहां भी जाने और बौद्ध काल की उच्च कोटि की सभ्यता, कला एव संस्कृति को बहुत नजदीक से देखने का अवसर मिला। जब मैं हैदराबाद से लौटा तो मैंने अपने हृदय में यह ठान लिया था कि इस बार अवश्य ही मैं दक्षिण भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता पर पुस्तक लिखूंगा, किन्तु मेरी कुछ कहानियों आदि [illegible] पुस्तकें अधूरी पड़ी हुई थी। अतः मुझे पहिले उन पुस्तकों को पूरा करना पड़ा। [illegible] पुस्तकों के प्रकाशित होने के पश्चात मैंने इस पुस्तक को लिखना प्रारंभ किया [illegible] बीच में कुछ ऐसी बाधायें आती रही जिनसे मैं इस पुस्तक [illegible]

मैंने इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने के लिये डाक्टर सम्पूर्णानन्द राज्यपाल राजस्थान से प्रार्थना की थी क्योंकि उन्हे सदैव भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता से बडी रुचि और बड़ा लगाव भी रहा है। उन्होंने मेरी एक अन्य पुस्तक "१८५७ की क्रान्ति और रुहेलखंड" पर भी प्रस्तावना लिखी है। इस बार जब मैंने उनसे यह आग्रह किया तो उनके नेत्रों में कुछ कष्ट था। इस कारण मैं इस प्रतीक्षा में रहा कि उनके नेत्रों का कष्ट दूर हो। कुछ समय पश्चात् मैंने उनसे पुनः आग्रह किया और छपे हुये किताब के पन्ने एवं चित्र मैंने उन की सेवा में भेजे। उन्होंने पुस्तक को पढ़कर उसे बड़ी ही उपयोगी और रोचक बताया किन्तु साथ ही उन्होंने यह भी लिखा कि वह दक्षिण भारत की विभिन्न भाषाओं का उतना ज्ञान नही रखते जो इस पुस्तक पर प्रस्तावना लिखने के लिये होना आवश्यक है।

मैंने इस बात का भी पूरा प्रयत्न किया कि दक्षिण भारत के समस्त प्रसिद्ध मन्दिरों ऐतिहासिक इमारतों आदि के चित्र प्राप्त हो सकें। मैं जब दक्षिण भारत गया था तो दोनों ही बार अपना फोटो कैमरा लेकर गया था। मैंने अधिकांश चित्र अपने इसी कैमरे मे लिये हैं। कुछ चित्र मुझे मद्रास, मैसूर, एवं आंध्र प्रदेश की सरकारों द्वारा प्राप्त हुये और कुछ चित्र मैंने वहां के स्थानीय फोटो ग्राफरों की सहायता से प्राप्त किये। जहा तक सम्भव हो सका है मैंने उन सभी स्थानों के चित्र प्राप्त किये है जो ऐतिहासिक अथवा सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है।

यह पुस्तक केवल मेरी दक्षिण भारत की यात्रा पर ही आधारित नहीं है वरन मुझे बहुत सी अन्य पुस्तकों और इतिहास के पन्नों को भी लौटना पडा है कुछ सामिग्री मैंने ऐतिहासिक स्थानों पर पुरातन विभाग के अधिकारियों से भी एकत्रित की है और कुछ सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालयों मे। मैं इन सभी महानुभावों का बड़ा ही आभारी हूँ कि उन्होंने इस कठिन कार्य मे अपना सहयोग प्रदान करके आसान बनाया है। मैं विशेषतया मद्रास मैसूर और आंध्र प्रदेश सरकार का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे कई महत्वपूर्ण स्थानों के चित्र एकत्रित करने में मेरी सहायता की है।

मैंने जहा तक सम्भव हो सका है सत्य को खोजने का प्रयत्न किया है किन्तु फिर भी हो सकता है कि कुछ स्थानों के सम्बन्ध मे जानकारी में कुछ त्रुटि रह गई हो। मुझे आशा ही नही वरन विश्वास है कि पाठक इस पुस्तक को केवल एक इतिहास के रूप में नही देखेंगे वरन दक्षिण भारत की उच्च कोटि की कला, और 'संस्कृति पर भी अपनी दृष्टि दौड़ायेंगे।

जहा तक सम्भव हो सका है मैंने इस पुस्तक में आसान शब्दों का प्रयोग किया है ताकि जनता के हाथों मे भा यह पुस्तक पहुच सके मैं इस पुस्तक द्वारा

दक्षिण भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता का दिग्दर्शन कराने में कहां तक सफल हुआ हूँ इस का निर्णय तो केवल पाठक ही कर सकते है। मै यह तो दावा नही कर सकता कि इस पुस्तक द्वारा मैं उत्तर और दक्षिण को मिलाने में सफल हो सकूंगा किन्तु मुझे यह आशा अवश्य है कि उत्तर और दक्षिण भारत के जनसाधारण, साहित्यकार और राजनीतिज्ञ इस पुस्तक का अध्ययन करके एक दूसरे के समीप आने और संकीर्ण भावनाओं पर आधारित जनता के दृष्टिकोण समाप्त करने की ओर एक कदम अवश्य बढ़ायें।

इस पुस्तक से यह भली भांति अनुमान लगाया जा सकता है कि दक्षिण भारत के लोगों का दृष्टिकोण अन्य संस्कृतियों भाषाओं और कलाओं के प्रति कितना उदार रहा है। राम और कृष्ण की जितनी कथायें और मान्यतायें उत्तर भारत में मिलती है उससे कहीं अधिक दक्षिण भारत में मिलती हैं। बौद्ध और जैन धर्म की स्मृतियां दक्षिण भारत में भी उत्तर भारत से कम नहीं हैं। मुस्लिम कला और वास्तुकला उत्तर भारत से कम दक्षिण भारत में नही है। आधुनिक युग की संस्कृति और कला दक्षिण भारत में उत्तर भारत से कम नहीं दिखाई पड़ती है। इन सब बातों को देखने से यही सिद्ध होता है कि उत्तर और दक्षिण भारत सदैव एक रहे है। उनकी संस्कृति, सभ्यता और कला एक दूसरे पर आधारित है। संकीर्ण दृष्टि कोण संस्कृति, कला, साहित्य और भाषा के प्रति दक्षिण भारत में कभी रहा ही नहीं, आज भी नहीं, होना चाहिये।

मैं इन थोड़े से शब्दों के साथ इस पुस्तक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

—प्रतापचन्द्र 'आजाद'

विषय सूची

चित्र सूची

आर्यों से पूर्व

दक्षिण भारत की संस्कृति, कला एवं सभ्यता भारत के अन्य भागों से अधिक प्राचीन है। इतिहासकारों का कथन है कि दक्षिण भारत की सभ्यता और संस्कृति एवं कला आर्यों के पूर्व की है। इसमें कोई संदेह नहीं कि दक्षिण भारत में आर्यों के आगमन के पूर्व द्रविड़ जाति की कला और संस्कृति बहुत प्राचीन थी। यह भी सत्य है कि आर्यों के आने से पूर्व दक्षिण में चित्रकला आदि के काफी चिन्ह मिलते है। उस समय के मन्दिर, उस समय की इमारतें और उस समय की गुफाओं आदि के भीतर खुदाई की कला प्राचीन कलाओं में से हैं।

उत्तरी भारत तथा भारत के अन्य भागों की संस्कृति, कला एवं सभ्यता, इमारतें और मन्दिर आदि बनते बिगड़ते रहे, किन्तु दक्षिण में इस प्रकार की तोड़फोड़ नही के बराबर हुई। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि जितने भी आक्रमण भारत मे विदेशी राष्ट्रों के हुए वे सब उत्तर और पश्चिम से हुए, और जो भी विदेशी भारत में आये वे दक्षिण के भीतर तक नहीं घुस सके और यदि घुसे भी तो उन्हें वहाँ तोडफोड़ की कार्यवाही में सफलता प्राप्त नही हुई। उत्तर में तो प्राचीन कला के बडे बडे मन्दिर जैसे अयोध्या, मथुरा, सोमनाथ और अन्य तीर्थ स्थानों पर न जाने कितनी बार बने और कितनी बार टूटे। महमूद गजनवी से लेकर औरंगजेब के समय तक इस प्रकार की तोड़फोड़ होती ही रही, किन्तु दक्षिण भारत में न महमूद गजनवी ही पहुंचा और हजार प्रयत्न करने के पश्चात् भी औरंगजेब के पैर दक्षिण में न जम सके। विजय नगर राज्य के नष्ट होने पर कई मुस्लिम वंशों ने गोलकुंडा और बीजापुर में राज्य स्थापित किये। जिसमें बेहमनी वंश और कुतुब-शाही वंश विशेषतया प्रसिद्ध है, किन्तु इन मुस्लिम नरेशों ने बड़ी बुद्धिमानी से कामकिया, और दक्षिण की पुरानी कला, संस्कृति को नष्ट करने के बजाय उसकी उन्नति की। एक भी ऐसा उदाहरण इन बादशाहों के समय का नही मिलता कि इन्होंने किसी भी प्राचीन मन्दिर को तोड़ा हो, या किसी को जबरदस्ती मुसलमान बनाया हो। इन वंशों के पश्चात् हैदरअली और टीपू का राज्य हुआ तो उन्होंने भी इसी नीति को अपनाया। मुगल साम्राज्य के बादशाह औरंगजेब ने दक्षिण भारत के कुछ भाग पर अधिकार किया तो दक्षिण भारत के हिन्दू और मुसलमानों ने एक साथ मिलकर औरंगजेब के पैर इसी कारण नही जमने दिये कि औरंगजेब के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध था कि वह जहाँ

जाता है और जिस प्रदेश पर विजय प्राप्त करता है, वहाँ तलवार के बल पर लोगों को मुसलमान बनाता है, मन्दिरों का नाश कर मस्जिदें तैयार करता है। जब औरंगजेब ने गोलकुंडा पर विजय प्राप्त की और निजामुल मुल्क को गोलकुंडा का गवर्नर बनाकर भेजा, और उससे अपनी बनाई हुई नीति पर चलने को कहा तो निजामुल मुल्क के सामने एक बड़ी कठिन समस्या खड़ी हो गयी। उसने अनुभव किया कि दक्षिण भारत में यहाँ की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और प्राचीन भाषायें लोगों के दिलों में इतना घर कर गई हैं कि उनको मिटाना पहाड़ से टकराना है, अतः उसने औरंगजेब की नीति के खतरे से बचने के लिए औरंगजेब के मरते ही अपने आपको स्वतंत्र बादशाह घोषित कर दिया और दक्षिण का वह राज्य जिसके प्राप्त करने के लिये औरंगजेब ने अपनी सारी फौजी शक्ति, सारा धन जुटा दिया और वर्षों तक भयंकर लड़ाई में फंसा रहा उसका वह स्वप्न कि वह दक्षिण का सम्राट बनेगा–कुछ ही वर्षों में निजामउलमुल्क ने स्वप्न में बदल लिया।

दक्षिण की कला, संस्कृति एवं सभ्यता को छै भागों में विभाजित किया जा सकता है।

१—आर्यों से आने से पूर्व-द्रविड़ समय की।
२—आर्यों के आने के पश्चात्–रामायण और महाभारत काल की।
३—जैन बौद्ध काल
४—पल्लव, चालूक्य, चौल पाड़िया आदि नरेशों का समय।
५—मुस्लिम काल
६—आधुनिक काल

(२) द्राविड़ काल

द्रविड़काल :-द्रविड़ काल की सभ्यता एवं संस्कृति दक्षिण की सबसे पुरानी सभ्यता और संस्कृति है इतिहासकारों का इस सम्बन्ध में बहुत बड़ा मतभेद है।कुछ का विचार है कि द्रविड़ काल रामायण-महाभारत के पूर्व का था।कुछ का विचार है कि बौद्ध धर्म से पूर्व का था। किन्तु द्रविड काल की कला और उनकी संस्कृति आर्यों के काल से पहले की है। द्रविड़काल की महत्वपूर्ण कला पत्थरों की खुदाई, पहाड़ों की गुफाओं को काटकर घरों का बनाना, धातु के आभूषणों की कला-, इस युग की विशेष देन है। यह भी कहा जाता है कि द्रविड़ वंश के लोग अस्त्र शस्त्र भी पत्थर एवं लकड़ी के बनाते थे। तीर और कमान उस समय के विशेष शस्त्र थे। यह भी कहा जाता है कि द्रविड़ लोग देवी की पूजा करते थे और दक्षिण के बहुत से स्थानों में पत्थरों को काटकर द्रविड़ लोगों ने मन्दिर बनाये थे। हड़प्पा और मोहन जोदड़ों में जो खुदाई हुई है कहा जाता है कि उसमें भी जो इमारतों के खँडहर या मन्दिरों के खडँहर मिले है वह द्रविड़ काल की कला से मिलते जुलते हैं। यह भी कहा जाता है कि उस समय पेड़ और पशुओं की भी पूजा होती थी। स्त्रियों की जो मूर्तियाँ पत्थर को काट कर बनाई जाती थी वे गले और हाथों में आभूषण पहने दिखाई देती थीं। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय भी स्त्रियाँ आभूषण पहनती थी। पुरुषों की जो मूर्तियाँ मिली हैं वे भी वस्त्र पहने हुए दिखाई देती है। इसी कारण इतिहासकारों का कहना है कि द्रविड़ लोगों का पत्थर धातु, और लोहे का युग बना अर्थात् पहले द्रविड़ पत्थरों को काटकर वस्तुएँ एवं शस्त्र बनाते थे,, फिर पत्थरों से इमारतें बनाने लगे। इसके पश्चात् लोहे की वस्तुएं बनाना शुरु की, और फिर पीतल और ताँबे का सामान एवं शस्त्र बनने लगे। अब भी दक्षिण भारत के कई स्थानों पर खुदाई होने पर पत्थर के बने हुए बर्तन, अस्त्र वस्तुयें जैसे हथौड़ा आदि मिले हैं। इसी प्रकार धातु के युग में तांबे एवं पीतल की बनी हुई वस्तुएँ बर्तन, अस्त्र शस्त्र और आभूषण मिले है। उस समय की लोहे की धातु से बनी हुई बहुत सी वस्तुएँ मिलती हैं। हांला कि कुछ इतिहासकारों का कथन है कि ईसा से एक हजार वर्ष पूर्व लोहे के अस्त्र के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं बनी। किन्तु यह असत्य प्रतीत होता है।

उपरोक्त कथन से यह बात अवश्य पूर्ण रूप से सिद्ध होती है कि द्रविड़ काल मे भी दक्षिण भारत में कला और संस्कृति उचित कोटि की थी। उस समय की भाषा संस्कृत नही थी किन्तु संस्कृत से मिलती जुलती अवश्य थी। उनके बहुत से शब्द प्राचीन काल से अब तक प्रयोग किये जाते हैं।

आजकल जो भाषायें दक्षिण में प्रसिद्ध है उनमें तामिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़ है। उनमें भी उस समय के बहुत से शब्द मिलते है, किन्तु उस युग की तस्वीर बहुत धुंधली है, और स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि उस समय कौन सी भाषा बोली जाती थी और कौन सा धर्म प्रचलित था। उस समय का युग जो बताया जाता है उसके सम्बन्ध मे भी इतिहासकारों और विद्वानों मे बहुत बड़ा मतभेद है। कुछ लोगों का कहना है कि यह युग १० हजार वर्ष ईसा से पूर्व का था, कुछ कहते है कि ५ हजार वर्ष से कुछ अधिक का था। दक्षिण की कला और संस्कृति के सम्बन्ध में जो द्रविड़ काल में थी बहुत कम खोज की गई। किन्तु पल्लव वंश के पश्चात् दक्षिण में जो कला-संस्कृति और सभ्यता थी उसका लेखकों, साहित्यकारो एवं इतिहासकारों ने काफी विवरण दिया है। यही कारण है कि पल्लवो से पूर्व दक्षिण का इतिहास किसी भी भाषा में बहुत कम मिलता है। द्रविड़ों के समय के राजाओं के वंश भी नही मिलते है। उस समय के खुदाई के कुछ पत्थर, मूर्तियाँ और खण्डहर दक्षिण में कई स्थानों में पाये गये। जो कुछ भी मिलता है वह गाथाओं और कथाओं के रूप में मिलता है।

रामायण और महाभारत काल

२—इस समय दक्षिण भारत में आन्ध्र प्रदेश, मद्रास, मैसूर, केरल एवं मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ भाग सम्मिलित हैं। दक्षिण प्रदेश रामायण और महाभारत काल की कथाओं के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। स्थान २ पर रामायण काल की कथाएँ, मूर्तियाँ, और मन्दिर बनाकर दिखाई गई हैं। इसका कारण यह है कि कि रामायण काल में श्री रामचन्द्र जी के बनवास की कथा यही से सम्बन्ध रखती है। कहा जाता है कि भगवान राम ने अपने बनवास के १४ वर्ष यहीं व्यतीत किये थे और यही से अपनी सेनाएँ एकत्रित करके नल और नील जैसे इन्जीनियरों की सहायता से रामेश्वरम् मे सेतुबंध पुल बांध कर लंका में उतरे थे। सेतुबन्ध के पुल के संबंध में नाना प्रकार की कथायें हैं। मुसलमान सेतुबन्ध के पुल को आदम के पुल के नाम से पुकारते हैं और उनके अनुसार बहश्त से हज़रत आदम को यहीं भूमि पर लाया गया था। रामायण की कथा के अनुसार इस पुल को नल और नील जैसे इन्जीनियरों ने पत्थरों को समुद्र में डालकर बाँधा था। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि यह पुल प्राकृतिक चट्टानों के कारण बना हुआ था। यह पुल कहाँ था इसके सम्बन्ध में रामायण की कथा के अनुसार लंका से रामेश्वरम् तक था। किन्तु इस समय यह पुल वही है जिस पर होकर रेल मान्ड़पम्प से लेकर रामेश्वरम् तक जाती है। यह पुल भारत को रामेश्वरम् टापू से जोड़ता है। जो समुद्र में एक मील लम्बा बनाया गया है। रेल का पुल प्रसिद्ध सेतुबन्ध की चट्टानों के ऊपर बना है। किन्तु यह भारत को लंका से नहीं जोड़ता। हो सकता है उस समय लंका रामेश्वरम् से जुड़ी हुई हो-किन्तु अब तो लंका और रामेश्वरम् दोनों अलग अलग टापू है। रामेश्वरम् पर भारत का प्रसिद्ध मन्दिर बना है, जिसे देखने प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में यात्री आते हैं। रामेश्वरम् के मन्दिर के सम्बन्ध में जो कथा प्रचलित है, वह इस प्रकार है कि भगवान राम लंका विजय करने के पश्चात् जब अयोध्या लौटने लगे तो उन्होंने भारत वर्ष की भूमि रामेश्वरम् में अपने कदम रखते ही सर्वप्रथम शिवजी की स्थापना करके उनकी पूजा की, और उनके अनुयायियों ने उसी समय वही पर एक छोटे से मन्दिर का निर्माण करा दिया। उसी समय से यह मन्दिर रामेश्वरम् के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है और फिर उस समय से लेकर चालूक्यवंश तक कई राजाओं ने इस मन्दिर को बहुत कुछ विस्तार दिया। अब यह एक विशाल मन्दिर के रूप में रामेश्वरम् में स्थिति है, जहाँ प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में यात्री

जाते हैं और इस मन्दिर में पूजा करते हैं। इस मन्दिर की कला भी निराली है। इसका दरवाजा बहुत बड़ा है। और गोपुरम ऊपर की ओर पतला होता हुआ बना गया है। इस पर नाना प्रकार के चित्र खोदे किये गये हैं, जो दक्षिण की प्राचीन कला और संस्कृति के प्रतीक हैं। मन्दिर के ऊपर जो मूर्तियाँ के चित्र बनाये गये हैं उनमें अधिकतर पूजा करने की दशा में हैं। शिव और पार्वती के चित्रों के अतिरिक्त भी कई प्रकार के चित्र हैं। स्त्रियाँ रंगीन वस्त्र और आभूषण धारण किये हुए हैं। मनुष्य धोती पहने हुए और कमर तक ऊंचा कुरता पहने हुए है। इन चित्रों को देखकर दक्षिण की प्राचीन कला एवं संस्कृति का अनुमान किया जा सकता है। मन्दिरों की दीवारों आदि पर कहीं २ संस्कृत भाषा में श्लोक भी लिखे हुए हैं। इससे प्रतीत होता है कि यह मन्दिर बहुत प्राचीन है और उस समय बना है जब संस्कृत भाषा प्रचलित थी। दक्षिण भारत में यह मन्दिर मदुराई के समान सबसे बड़ा मन्दिर है। इस के अन्दर यात्रियों को देखने में काफी समय लगता है।

नासिक :—रामायण काल की कथा का दूसरा प्रसिद्ध स्थान गोदावरी नदी के किनारे महाराष्ट्र में है। नासिक नगर गोदावरी नदी के एक तट पर है और दूसरे तट पर पंचवटी नाम का नगर बसा हुआ है। रामायण की कथा के अनुसार वनवास के समय भगवान राम यहीं रहते थे। पंचवटी में पहाड़ों के भीतर एक बहुत बड़ी गुफा है और कहा यह जाता है कि इसी गुफा में सीता जी राम और लक्ष्मण के साथ रहती थी, और यहीं रावण की बहिन सुर्पनखा की नाक काटी गई थी। इसी कारण उस नगर का नाम नासिक पड़ गया। नासिक संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है बिना नाक के :—नासिक के बीच से गोदावरी नदी बहती है। गोदावरी नदी के बीच में एक राम मन्दिर बना हुआ है जिसमें सफेद पत्थर को काट कर राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। इस मन्दिर को देखने से दक्षिण भारत की कला का अनुमान लगाया जा सकता है। इसमें जो मूर्तियाँ बनी हैं और जो मन्दिर बना है वह सब पत्थर को काट कर ही बनाया गया है। चित्रकारी बड़ी ही उच्च कोटि की है। इस मन्दिर के सम्बन्ध में कई कथाएं प्रचलित हैं। कुछ लोगों का कथन है कि यह मन्दिर ईसा से पहले का है और रामायण काल के समय में ही बनाया गया है। रामायण की कथा के अनुसार पंचवटी से ही रावण सीता जी को हरण करके उन्हें लंका ले गया था। पंचवटी की गुफा में सोने का मृग बना है, जो मायावी था और जिसने सीता हरण के समय रावण की सहायता की थी।

बिनूकोंडा :—बिनूकोंडा का प्रसिद्ध मन्दिर गंटूर जिले में स्थित है। यह मन्दिर आंध्र प्रदेश का बहुत प्राचीन मन्दिर माना जाता है इसका [illegible]

कहते हैं। इस पहाड के सम्बन्ध में यह कथा प्रचलित है कि इसी स्थान पर सर्वप्रथम भगवान राम ने सीता को रावण द्वारा ले जाने का समाचार सुना था—और यहीं पर रावण और जटायु का युद्ध हुआ था—अब यह नगर गंटूर जिले का मुख्यालय (हेड-क्वार्टर) है। इस नगर में दो पहाड़ की चोटियाँ हैं—एक पहाड की चोटी बहुत ऊंची है, जिस पर से पुराना किला और मकानों के खंडहर दिखाई देते हैं। यह कब बने, इसकी खोज अभी तक नहीं हो पाई है। इस पहाड़ की चोटी तक पहुंचना असम्भव सा हो गया है। १५ वी शताब्दी मे इन चोटियों के किनारे विजयनगर के राजा कृष्ण देव ने एक किला बनवाया था। १५८६ में यह किला गोल कुन्डा के सम्राट के हाथ मे आ गया।

रामतीर्थम् :—यह स्थान आन्ध प्रदेश में विशाखापटनम में है, और एक पहाड़ी पर बडे सुन्दर ढंग से बना हुआ है। इस मन्दिर में राम, लक्ष्मण और सीता के पत्थरों द्वारा काटी हुई मूर्तिया है और तेलगू भाषा में कई स्थानों पर कुछ शब्द लिखे हुए हैं, जो जगह जगह मिट गये हैं। कुछ ही दूर अरसावल्ली स्थान पर एक सूर्य देवता का मन्दिर भी बना हुआ है। यह मन्दिर श्री का कुल्लम से दो मील दूर है—कहते है कि सूर्य देवता रामायण काल के पूर्वजों के देवता थे।

भद्रचलम् मन्दिर :—यह प्रसिद्ध मन्दिर गोदावरी नदी के घाट पर आंध्र प्रदेश में बना हुआ है। इस मन्दिर के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि भगवान राम ने अपने बनवास के समय में सीता और लक्ष्मण के साथ विश्राम किया था। यहाँ रामायण काल की कथा के बहुत से मन्दिर बने हुए हैं। इस मन्दिर को कला बहुत प्राचीन है—और इन मन्दिरों पर संस्कृत भाषा में कहीं २ श्लोक लिखे हुए हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि यह स्थान पुराणों के काल के पहले से चले आ रहे हैं।

नन्दीगांव :—यह कृष्णा जिले में रामायण काल का सबसे बड़ा प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान के सम्बन्ध में कथा प्रचलित है कि भगवान राम के छोटे भाई भरत अयोध्या से आकर यहीं राम से मिले थे। उस समय यह स्थान क्षयबाग की राजधानी बताया जाता था। दूसरी कथा इस के सम्बन्ध में यह भी है कि रामचन्द्र जी अपने छोटे भाई लक्ष्मण एवं सीता के साथ बनवास काल में बहुत समय तक यहीं रहे थे। यहां स्थान स्थान पर रामचन्द्र के बनवास के समय की कथाए प्रचलित हैं। मन्दिरों आदि में जो भाषा लिखी हुई है वह संस्कृत या प्राकृतिक है। इससे यह पता चलता है कि इन स्थानों की महानता रामायण और महाभारत काल में अवश्य थी और उसी समय से यह स्थान तीर्थ स्थान के रूप में प्रसिद्ध हैं।

बमर्पसी ... आंध्र प्रदेश मे कुर्नाक जिला में ... काल का बहुत

ही प्रसिद्ध स्थान है। इस पहाड़ का नाम पागा था एवं पागामी नाम है। यहाँ के सम्बन्ध में यह कथा प्रचलित है कि जब राम ने रावण को मारकर सीता को छुटकारा दिलवाया तो उन्होंने इस स्थान से अपनी विजय का समाचार आन्ध्र प्रदेश के उन स्थानों को भेजा था, जहाँ वह वनवास के समय रहे थे। यह समाचार सुनकर इस स्थान का राजा सोने के फूलों को लेकर भगवान राम को भेंट करने आया था। कहते हैं कि घाटी में अब भी सोने के फूल पड़े हुए हैं, जो दिखाई नहीं देते हैं। प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक सर टामसन मुनरो एक बार इस घाटी को देखने गये थे। इस स्थान पर जो मन्दिर बना है उसकी कला बिल्कुल ही अनोखी है। मन्दिर के बाहर और ऊपर के पत्थरों को खोदकर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी बनाई गई है। इस चित्रकारी में पुराने देवताओं की मूर्तियाँ, स्त्रियों एवं मनुष्यों के चित्र, भक्तो और भगवान की पूजा सभी दृश्य दिखाए गये हैं। मन्दिरों के चित्र भी पत्थरों द्वारा खोदकर इस मन्दिर में लगाये गये हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय की कला बड़ी उच्च स्तर की कला थी और स्त्री और मनुष्य वस्त्र पहनते थे। देवताओं की पूजा होती थी।

इन स्थानों के अतिरिक्त दक्षिण में और भी अनेकों स्थान हैं जो रामायण काल की कथाओं से भरे हुए हैं। इन स्थानों को देखने से यह अनुमान भली भाँति लगाया जा सकता है कि दक्षिण की सभ्यता एवं कला बहुत ही पुरानी और उच्च स्तर की थी। रामायण काल का ठीक २ अनुमान तो लगाना असम्भव है क्योंकि इस सम्बन्ध में विभिन्न इतिहासकारों एवं विद्वानों का बहुत बड़ा मतभेद है, किन्तु रामयण काल के समय के स्थानों एवं पुस्तकों को देखकर यह सिद्ध होता है कि रामायण काल का समय—महाभारत काल से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व का था। उस समय की भाषा संस्कृत थी और लोग वेदों को मानते थे। वाल्मीकि रामायण जो उस समय के एक ऋषी-वाल्मीकी ने लिखी है, संस्कृत भाषा में है। रामायण में स्थान स्थान पर वेदो का उल्लेख किया गया है। साथ ही साथ आर्य शब्द भी अनेक श्लोकों में आया है। इसी से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रामायण काल आर्य लोगों की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं कला का काल था—उस समय की कला के भी अनेकों उदाहरण मिलते हैं। रामायण काल के पश्चात कई प्रकार की भाषायें दक्षिण में प्रचलित हुई। रामायण में दक्षिण भारत के अनेक देशों एवं नगरों और नदियों का उल्लेख किया गया है। उनमें से बहुत से नगर व स्थान आज भी उसी नाम से स्थित है जैसे पंचवटी, लंका, और गोदावरी नदी आदि आदि। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान राम जिनकी राजधानी अयोध्या थी। वह आर्य वंश से सम्बन्ध रखते थे। जब वह वनवास के समय दक्षिण भारत में रहे, तो वहाँ के जो लोग द्रविड़ या दूसरे वंश के थे उनकी भाषा संस्कृत नहीं थी किन्तु संस्कृत से भिन्न [illegible] थी। वह

ामेश्वरम का मन्दिर
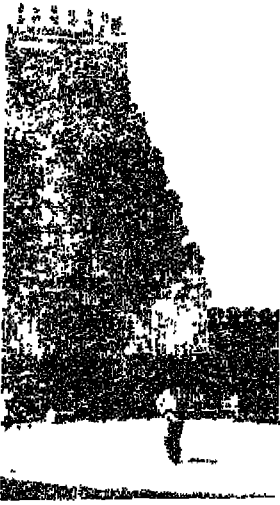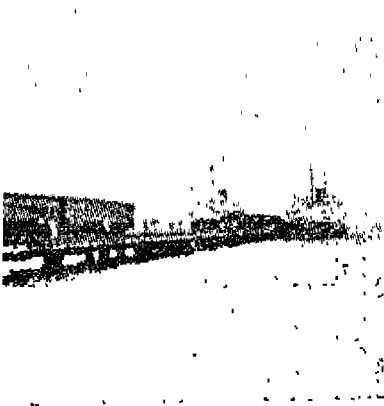
ु कोटि का एक दृश्य

रामेश्वरम मन्दिर तथा उसके आस पास का पृ

एक हजार स्तम्भों का प्रसिद्ध नागन्ना का मन्दि

वेदों को नहीं मानते थे किन्तु दूसरी धार्मिक पुस्तकें-वेदों के स्थान पर थी। वेदो की कथाएं दक्षिण भारत में कुछ स्थानों पर प्रचलित थीं और यह भी कहा जाता है कि उस समय की लंका का राजा रावण और दक्षिण के अन्य राजा जो रावण के आधीन थे वह वेदों के ज्ञाता थे। वह उन्हें मानते हों या न मानते हो यह दूसरा प्रश्न है। दक्षिण भारत में लंका तक रामायण की कथा भलीभाँति इस समय भी प्रचलित है, और लंका के भीतर कैलानियाँ और नूरऐलिया आज भी ऐसे प्रसिद्ध स्थान है जहाँ विभीषण और रावण की मूर्तियाँ स्थापित हैं। कैलनिया में विभीषण की बहुत बड़ी धातु की मूर्ति है, इस मूर्ति पर सदैव परदा पड़ा रहता है। मैंने मन्दिर के पुजारी से पूछा कि इस मूर्ति पर सदैव परदा क्यो पड़ा रहता है। इस का कारण क्या है? तो उसने मुझे बताया कि विभीषण को लंका का द्रोही कहा जाता है और किसी भी गद्दार का मुंह देखना घोर पाप है। इस कारण विभीषण की मूर्ति पर परदा डाल दिया गया है ताकि उसका मुंह कोई देख न सके।"

यह भी कहा जाता है कि कैलानियां-विभीषण की राजधानी थी-। कैलानिया मे बहुत बड़ी संख्या में खण्डहर पड़े हुए है। कहा जाता है कि यह खण्डहर रामायण काल के समय के ही है। लंका में भी इन स्थानों के पुजारियों का अनुमान है कि रावण का युद्ध ईसा से १० हजार वर्ष पूर्व हुआ था। नूराऐलिया में लंका के प्राचीन सम्राट रावण की मूर्ति है। वहाँ कुछ लोगों का विचार यह है कि रावण ब्रह्मा का अवतार था और संसार का सबसे बड़ा विद्वान था। लंका से दक्षिण भारत तक रामायण काल की कथाएं स्थान २ पर सुनाई जाती है। दक्षिण भारत के लोगों का विश्वास है कि श्री रामचन्द्र ने सीता और लक्ष्मण के साथ अपने १४ वर्ष के बनवास का समय यही व्यतीत किया था। इस कथन की पुष्टि मे स्थान २ पर उनके मन्दिर और उनकी स्मृति के स्थान बने हुए है। जहाँ प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में यात्री दर्शन करने जाते हैं। दक्षिण के विद्वानों का मत है कि रामायण काल की कला, संस्कृति, सभ्यता बड़ी उच्च स्तर की थी। इस समय की जो कथाएं वाल्मीकि रामायण एवं अन्य पुस्तकों में लिखी गई है उनमें बड़े २ ऋषि और विद्वानो के नाम आये है। इससे यह प्रतीत होता है कि उस समय के लोग विद्वान, पढ़े लिखे, बहादुर उच्च नैतिक स्तर के होते थे। इसीलिये शायद गांधी जी ने रामायण काल में राम राज्य को आदर्श राज्य के नाम से उपाधि दी है।

रामायण काल की संस्कृति एवं सभ्यता को आदर्श माना गया है। जिस क अनुसार लोग भगवान से डरते थे और कोई भी अनुचित कार्य नहीं करते थे। स्त्रिया अपने पति को भगवान के तुल्य समझकर उनकी पूजा और उनका सम्मान करती थीं

पुत्र माँ बाप को ईश्वर समझकर उनकी आज्ञा का पालन करते थे। गुरुजनों की प्रतिष्ठा और मान्यता साधारण बातों तक में थी। राजा प्रजा की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य करना पाप समझता था और उसे शास्त्रों के विरुद्ध मानता था। प्रजा राजभक्त थी और उस के कष्ट को अपना कष्ट समझती थी। इसीलिये महात्मा तुलसी दास जी ने एक स्थान पर राम राज्य के आदर्शों का वर्णन करते हुए लिखा है।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी—सो नृप अवस नरक अधिकारी।

देवताओं की घर २ में पूजा होती थी। अधिकतर लोग शिवजी को मानने वाले थे छोटा भाई अपने बड़े भाई को पिता और भावी को माता के समान समझता था।

महाभारत

रामायण काल के पश्चात् महाभारत काल का आरम्भ हुआ तो भी ऐसा ज्ञात होता है कि दक्षिण भारत में कई स्थानों पर उस काल के राजाओं ने भी यात्री के रूप मे या भ्रमण कर्ता के रूप में समय २ पर अपने स्मरण के चिन्ह छोड़े हैं। कथाएं तो यहां तक प्रचलित हैं कि पांडवों ने अपने बनवास काल में मंगलगिरी नाम के स्थान पर अपने बनवास के दिन व्यतीत किये थे, और इसीलिए मंगलगिरी पहाड़ पर एक बहुत बड़ा मन्दिर पांडवों के राजा युधिष्ठिर के नाम का बना हुआ है। कहते हैं कि इस स्थान पर सबसे पहले राजा युधिष्टिर ने एक मन्दिर बनवाया था।

मंगलगिरि :—मंगलगिरि गंटूर जिले में आन्ध्र प्रदेश में पहाड़ों पर स्थिति है। यहाँ ६ मील के लगभग दूर कृष्णा नदी बहती है। मंगलगिरि दक्षिण भारत में पूर्वी घाट पर एक बड़ा सुन्दर स्थान है। यहाँ पर एक प्रसिद्ध मन्दिर है जिसका नाम पान-कला-लक्ष्मी-नरसीमा-स्वामी है। इस मन्दिर को भगवान विष्णु का स्थान बताया जाता है। पुराणों को कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु ने इसी स्थान से अपने जादू की शक्ति से अपने शरीर को लक्ष्मी के शरीर में बदल दिया था। इसी मन्दिर के समीप महाराज युधिष्टिर का वह मन्दिर है जो कि उन्होंने महाभारत काल मे बनवाया था। इस मन्दिर का प्रसिद्ध गुम्बद गोपीराम के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार के गुम्बद दक्षिण भारत में अद्वितीय है। इस मन्दिर की कला अन्य मन्दिरों से निराली है। नाना प्रकार की मीनाकारी, महलों एवं मन्दिरों के चित्र, पत्थरों में खोदकर इस मन्दिर के ऊपर लगाये गये हैं। इससे ऐसा ज्ञात होता है कि महाभारत काल में जो इमारतें अथवा मन्दिर बनते थे वह इसी प्रकार की वास्तुकला द्वारा निर्माण होते थे। किन्तु कुछ इतिहासकारों का अनुमान है कि यह मन्दिर अब से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व का है।

चेजरला :—दूसरा प्रसिद्ध स्थान चँजरला का है। यह स्थान भी गंटूर जिले में ही है। यहाँ पर भी महाभारत काल की बहुत सी कथाएँ प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार इस स्थान पर एक गिद्ध की हड्डी पाई जाती थी जिसको संस्कृत में 'अस्थ' कहते हैं। यहाँ पर सीबी नाम के राजा ने महाभारत के समय में अपने शरीर के मास को काट काट कर गिद्ध को खिला दिया था। इस गिद्ध का नाम—कापोत था।

[illegible] मन्दिर बना हुआ है। [illegible] प्रसिद्ध नहीं। यह मन्दिर [illegible] प्रसिद्ध है। इस मन्दिर में जो चित्रकारी है वह [illegible] कि प्राचीन भारत की [illegible] कुछ भू विज्ञान जानने [illegible] चौथी शताब्दी के लगभग बना है।

विजयवाड़ा : इसी प्रकार विजयवाड़ा दक्षिण भारत में महाभारत की कथाओं का केन्द्र है। इस स्थान के नाम से ही इस बात का पता चलता है कि यह किसी की विजय के समय स्थापित हुआ है। इसके सम्बन्ध में जो कथायें हैं वह बड़ी ही रोचक एवं प्रसिद्ध है। यह स्थान ऊँची-नीची पहाड़ियों पर बना हुआ है। इसी [illegible] समीप [illegible] नामक नदी बह रही है और उसके समीप ही कृष्णा नदी बहती है। कहा जाता है कि महाभारत के समय में पांडवों के प्रसिद्ध योद्धा अर्जुन को यहां भगवान शिव से एक बहुत शक्तिशाली शस्त्र-जिसको 'पशुपतास्त्र' कहते हैं प्राप्त हुआ था। पुराणों की कथा के अनुसार इस शस्त्र को स्वयं शंकर ने प्रकट होकर अर्जुन को एक उपहार के रूप में भेंट किया था, और आशीर्वाद दिया था कि वे इस शस्त्र से महाभारत के युद्ध को जीतेंगे। इसी कारण इस नगर का नाम विजयवाडा पड़ा क्योंकि यहीं से अर्जुन को महाभारत के विजय का आशीर्वाद मिला था। यहां पर जो मन्दिर बना है उसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि यहाँ के जंगल में अर्जुन ने शिव एवं इन्द्र की प्रार्थना करके दुर्योधन पर विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद मांगा था। इस मन्दिर में मंडप ढंग की कला और दूसरी प्रकार की पत्थर की खुदाई की बड़ी सुन्दर २ कलाएँ मिलती है। जो मूर्तियां खुदी हुई हैं उनमें गाय, बछड़ा, भीम, अर्जुन, आदि को बड़े सुन्दर रूप में बनाया गया है।

ह्वानसांग एक चीनी यात्री जो ६३६ शताब्दी में भारत आया था, उसने भी इस स्थान का भ्रमण किया था और यहां की कला और वास्तुकला की प्रशंसा की है।

श्री रंगपटनम :—महाभारत काल का तीसरा सुन्दर स्थान मैसूर राज्य में श्री रंगपटनम् है। यहां भगवान कृष्ण का मन्दिर-रंग जी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। यह मन्दिर बहुत विशाल और प्राचीन है। इस मन्दिर पर जो चित्रकला है वह भी अनोखे ढंग की है। महाभारत समय की कृष्णलीला आदि की खुदी हुई पत्थरों

सिद्ध मन्दिर जिसके सामने शाहू मंडपम दिखाई दे रहा है

की पहाड़ी चोटी पर बना हुआ प्रसिद्ध किला
जिसका दृश्य अति सुन्दर है।
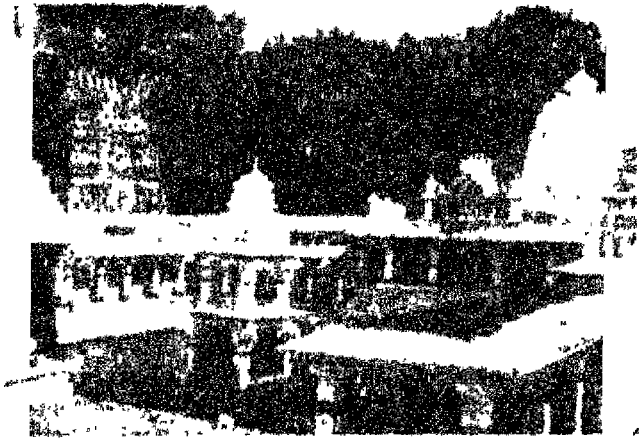
महानदी का प्रसिद्ध मन्दिर, जो रामायण काल से प्रसिद्ध

श्री रंग जी का मन्दिर श्री रंगपटनम

की मूर्तियों के चिन्ह भी यहाँ मिलते हैं। एक कथा के अनुसार भगवान कृष्ण ने अपनी स्त्री रुकमणी के साथ इस स्थान का भ्रमण किया था। तभी से इस स्थान का नाम रंगपटनम पड़ा। यह स्थान टीपू सुल्तान के समय तक मैसूर राज्य की राजधानी रहा। कावेरी नदी के किनारे ऊंची-नीची पहाड़ियों पर बड़े सुन्दर २ दृश्य दिखाई देते हैं।

कृष्णा नदी जो मैसूर प्रदेश की प्रसिद्ध नदी है उसका नाम भी भगवान कृष्ण के नाम पर कृष्णा नदी पड़ा और इसी नाम पर कृष्णा-नगर बसा। अब कृष्णा नाम का जिला आंध्र प्रदेश में है। जिसके सम्बन्ध में नाना प्रकार की कथाएँ प्रचलित है।

मलेशुरा मन्दिर पर संस्कृत भाषा में बहुत से श्लोक अंकित है। यह श्लोक महाभारत के योद्धा अर्जुन ने इन्द्र भगवान की प्रार्थना में लिखे थे। यह समस्त श्लोक अर्जुन के नाम से ही अंकित है। इससे पता चलता है कि यह स्थान महाभारत के समय में किसी न किसी रूप में अवश्य रहे होंगे।

पुष्पगिरि :—पुष्पगिरि का स्थान भी महाभारत की कथाओं के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यह स्थान कुढ़प जिले में आंध्र प्रदेश में है। पुष्पगिरि का अर्थ है फूलों का पहाड़। इस पहाड़ पर आठ मन्दिर बने हुए है जो विभिन्न नामों से प्रसिद्ध है। काशी, विश्वनाथ, राघवाचार्य, वैद्यनाथ, त्रिकोटीसुरा, भीमसेन, इन्द्रनाथसुरा, कमला-भवनसुरा, और एक मन्दिर केसरस्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान के सम्बन्ध मे महाभारत काल की एक कथा प्रसिद्ध है। इस कथा के अनुसार यह स्थान उपहार के रूप में शिवजी ने अर्जुन और पारसारथी को भेंट किया था, और यही पर अर्जुन ने गीता का अध्ययन किया था।

गीता के बहुत से श्लोक और महाभारत युद्ध के बहुत से चित्र इस मन्दिर पर अंकित है। इससे यह पता चलता है कि यहां की सभ्यता, संस्कृति एवं कला बहुत प्राचीन है।

महाभारत का युग उत्तर भारत की प्राचीन कथाएं और गाथायें बहुत से स्थानों पर प्रचलित है और यह कथाएँ एक तो श्री कृष्ण के कार्यों से सम्बधित है दूसरे पांडवों से। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि श्री कृष्ण जब मथुरा से द्वारिका पधारे और

जैन और बौद्ध काल

महाभारत के पश्चात् पुराणों की कथा के अनुसार कलियुग का प्रारम्भ हुआ इस युग में वैदिक धर्म का लोप होने लगा । कारण यह भी था कि महाभारत के युद्ध मे विद्वान, योद्धा और राजनीतिज्ञ आदमी मारे गये । लम्बे युद्ध के कारण देश में वेकारी और वेकारी के कारण अशान्ति फैल गयी । लोग एक भगवान के स्थान पर सैकड़ों की संख्या में देवी देवताओं को मानने लगे । नानाप्रकार के धर्म और सम्प्रदाय उठ खड़े हुए, और आपस में मन मुटाव रहने लगे । देश में छोटे २ राज्य स्थापित हो गये । सन्त और महापुरुषों की भी कमी हो गई । प्राचीन कला, कौशल, संस्कृति में भी उलट फेर हुई । इस युग में दो प्रसिद्ध धर्म प्रचारक हुए एक महावीर स्वामी दूसरे गौतम बुद्ध । महावीर स्वामी का समय ईसा मसीह से ५२७ वर्ष पूर्व का वताया जाता है । किन्तु इस सम्वन्ध में कुछ इतिहासकारों में मतभेद है । कुछ का कहना है कि महावीर स्वामी का समय ईसा मसीह,से ४७० वर्ष पूर्व का है । महावीर स्वामी के बाद वौद्ध धर्म का उदय हुआ । जिसकी नीव गौतम बुद्ध ने डाली । गौतम बुद्ध का समय ईसा मसीह से ६२३ वर्ष पूर्व वताया जाता है । किन्तु कुछ इतिहास कारों ने कहा है कि उनका समय ईसा से ५०० वर्ष से पूर्व अधिक का था । हमें इतिहास के अधिक आंकड़ों से सम्वन्ध नही है । हमारा तात्पर्य यहां केवल इतना है कि दक्षिण भारत में जैन-वौद्ध धर्म का प्रचार वड़ी तेजी से हुआ और उस समय की संस्कृति, कला, सभ्यता कुछ ही समय में पूरे दक्षिण भारत मे फैल गई ।

दक्षिण भारत में वौद्ध धर्म का ही प्रचार नही हुआ परन्तु वौद्धकाल की कला, संस्कृति का प्रदर्शन भी बड़े वेग से हुआ । अजन्ता, अलौरा दक्षिण भारत में वौद्ध संस्कृति, कला एवं सभ्यता के मुख्य केन्द्र हैं । अजन्ता, एलौरा की गुफाओं में न केवल इस संस्कृति एवं कला का प्रदर्शन है बल्कि गौतम बुद्ध के जीवन की समस्त झाकियां अजन्ता की चित्रकारी में प्रदर्शित है । इतिहासकारों का कथन है कि यह चित्रकारी गुप्त और चालुक्य वंश के समय की है । जिसका तात्पर्य यह हुआ कि तीसरी शताब्दी से लेकर छठी शताब्दी तक अजन्ता और एलौरा जैसे स्थानों में चित्रकला और मूर्तियाँ खोदी गई हैं । अजंता की चित्रकला देखने से ऐसा प्रतीत होता है ।

कि दक्षिण भारत में बौद्धकालीन समय में कला, संस्कृति और वास्तुकला में उसका स्थान बहुत उच्च होगा। स्त्री और पुरुष नानाप्रकार के रंगीन कपड़े पहनते रहे होंगे। चित्रों के चित्रों से यह बात स्पष्ट होती है कि स्त्रियाँ रंगीन कपड़ा के साथ आभूषण भी पहनती होंगी। बौद्धकाल के जो सिद्धान्त, पाली और प्राकृतिक भाषा में लिखे हैं, उनसे उस समय की सभ्यता का भलीभांति पता चलता है। अजंता में लगभग २८ महत्वपूर्ण चित्र बने हैं, और इन सब चित्रों में गौतम बुद्ध का पूरा जीवनचरित्र अंकित है। सबसे पहला चित्र जिसको कुछ भूगर्भ विज्ञान जानने वालों ने बताया है कि छटी शताब्दी का बना हुआ है। इसमें यह दिखाया गया है कि भगवान बुद्ध को किस प्रकार रोशनी प्राप्त हुई और उन्हें ज्ञान अपनी अंतरात्मा से मिला। दूसरे चित्र में जिसे भी छटी शताब्दी का बताया जाता है यह दिखाया गया है कि गौतम बुद्ध ने अपने राज्य को छोड़ने का निश्चय किया। किस प्रकार सत्य अहिंसा का व्रत धारण किया और संसार की और मानव जाति की सेवा करने का प्रण किया। तीसरे चित्र में यह दिखाया गया है कि वह अपने राज भार छोड़ने की घोषणा कर रहे हैं। इस चित्र को छटी या सातवीं शताब्दी का बताया जाता है। चौथे चित्र में भी इसी प्रकार का दृश्य है। पाचवे चित्र में गौतम बुद्ध के गद्दी पर बैठने और राज्यअभिषेक आदि का दृश्य दिखाई पड़ता है। किन्तु सही रूप से इस चित्र के सम्बन्ध में पता लगाना असंभव है। ६ वे चित्र में एक स्त्री अपने शृंगार का वस्तुएँ लिए दिखाई पड़ती है। यह चित्र भी बौद्धाकालीन समय का है। सातवी गुफा में जो चित्र बना है उससे यह अनुमान लगाया जाता है कि युवराज के भेष में गौतम बुद्ध किसी साधू के आश्रम में बैठे हुए हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय मे साधू और महात्माओं का बड़ा सम्मान था और राज्य दरबार के बड़े लोग भी साधू और महात्माओं के आश्रम में आकर उनका बड़ा मान करते थे। आठवे चित्र में एक नृतकी एवं कुछ गाने वालों और सायत एवं बासुरी बजाने वाली लड़कियों के चित्र हैं। इस चित्र से यह अनुभव न भलीभाति लगाया जा सकता कि उस समय की चित्रकला और वास्तुकलाकी उन्नति के साथ २ संगीत और नृत्य कला भी उच्चकोटि की थी। नवे चित्र में भी इस प्रकार नृत्य करने वाली और गाने बजाने वाली स्त्रियों के चित्र हैं। दसवें चित्र में एक बड़े विशाल महल का दृश्य है। महल को देखने से उस समय की वास्तुकला का अनुमान भलीभाति लगाया जा सकता है। महल मे रगीन मीनाकारी और नाना प्रकार के बेलबूटे दिखाई पड़ते है।

११ वें चित्र में भगवान गौतम बुद्ध का वह चित्र है जिनमें वह वस्त्र पहने हुए बैठे दिखाई देते हैं। १२ वे चित्र में एक हाथी एक तालाब में नहाता गया है और तालाब कमल के फूलों से भरा हुआ हे इस चित्र के देखने से यह सिद्ध होता है कि उस

समय के चित्रकार बड़े उच्चकोटि के थे जो फूल, तालाव, हाथी आदि के चित्र बड़े सुन्दर ढंग से और रंग विरंगे बनाते थे। १३ वे चित्र में जो कि दूसरी गुफा मे बना हुआ है बड़ा ही विचित्र है। इसमें भगवान बुद्ध की एक हजार तस्वीरे बनी हुई है। जो नाना प्रकार के रंगों से रंगी हुई है। इस चित्र में भगवान बुद्ध प्रार्थना मे मग्न दिखाई पड़ते हैं। चौदहवें चित्र में जो कि ११ वी गुफा में बना हुआ है। भगवान बुद्ध विचारों में लीन दिखाई देते हैं। इस चित्र की कला भी बड़ी ही अनोखी एवं उच्चकोटि की है। १५ वे चित्र में जंगल और पहाड़ों के दृश्य में एक बत्तख की तस्वीर है। इससे यह अनुमान लगता है कि बौद्धकालीन समय में लोग पशु, पक्षियों से काफी रुचि रखते थे और अपने मकान एवं दिवारों में उनके चित्र खींचते थे। १४वे चित्र मे भगवान बुद्ध तपस्या करते हुए दिखाये गये है। उनके चारो ओर एक कुंडली बनी हुई दिखाई देती है। यह चित्र छठी शताब्दी के समय का बताया जाता है। १७ वे चित्र में बौद्ध भगवान को अपने शिष्यों को उपदेश देते दिखाया गया है। इस चित्र मे उनके शिष्यों की बहुत सी तस्वीरे है। सब हाथ जोड़े बैठे हैं। इससे यह भी अनुमान लगता है कि उस समय शिष्यों का व्यवहार अपने गुरुजनों के प्रति कैसा रहा होगा। इस चित्र के सम्बन्ध मे भूगर्भ विज्ञान के लोगो का कथन है कि लगभग पांचवी शताब्दी के समय का है। १८ वे चित्र में एक नौकरानी को मक्खी उड़ाने वाले चवर को लिये दिखाया गया है। स्त्रियाँ रंगीन कपड़े और आभूषण पहने दिखाई गई है। इससे यह सिद्ध होता है कि बौद्धकालीन युग में स्त्रियाँ कपड़े और आभूषण पहनती थी। १६ वें चित्र में किसी देवता को परियों के साथ दिखाया गया है। परियों के चित्रो से ऐसा मालूम होता है कि उनके देवता भगवान इन्द्र होंगे। अजंता की गुफा के सम्बन्ध में जो पुस्तक अमेरिका मे लिखी गई है और जिसको संयुक्त राष्ट्र की उपसमिति ने प्रकाशित किया है, उसमें इस चित्र को भगवान इन्द्र का ही चित्र माना है और यह लिखा है कि भगवान इन्द्र को स्वर्ग में अप्सराओं के साथ दिखाया गया है। साथ में यह भी लिखा है कि यह चित्र पांचवी शताब्दी का बनाया हुआ है। २० वे चित्र में भी किसी अप्सरा का चित्र है। यह अप्सरा बहुत ही सुन्दर वस्त्र पहने हुए दिखाई गई है, जिससे यह सिद्ध होता है कि उस समय स्त्रियों में बड़े सुन्दर २ वस्त्र और आभूषण प्रचलित थे। इसी प्रकार २१ वे चित्र में महल का दृश्य दिया गया है। एक चित्र जो इसी १७वी गुफा मे बना हुआ है जिसमें घोड़ा, स्त्री और एक पुरुष दिखाया है। कहा जाता है कि यह चित्र उस समय के रीति रिवाज के अनुसार बनाया गया है, इस चित्र के देखने से ऐसा अनुमान लगता है कि बौद्धकालीन समय में राजे और महाराजे घोड़े की सवारी को बहुत पसन्द करते थे।

शेष चित्र भी इसी प्रकार के उच्चकोटि के नाना प्रकार के रंगों में रंगीन

कि दक्षिण भारत में बौद्धकालीन समय में कला, संस्कृति और वास्तुकला में उसका स्थान बहुत उच्च रहा था। स्त्री और पुरुष नानाप्रकार के रंगीन कपड़े पहनते रहे होंगे। चित्रों से तथा मूर्तियों से यह बात स्पष्ट होती है कि स्त्रियां रंगीन कपड़ों के साथ आभूषण भी पहनती होंगी। बौद्धकाल के जो सिद्धान्त, पाली और प्राकृतिक भाषा में लिखे हैं, उनसे उस समय की सभ्यता का भलीभांति पता चलता है। अजंता में लगभग २८ महत्वपूर्ण चित्र बने हैं, और इन सब चित्रों में गौतम बुद्ध का पूरा जीवनचरित्र अंकित है। सबसे पहला चित्र जिसको कुछ भूगर्भ विज्ञान जानने वालों ने बताया है कि छटी शताब्दी का बना हुआ है। इससे यह दिखाया गया है कि भगवान बुद्ध को किस प्रकार रोशनी प्राप्त हुई और उन्हें ज्ञान अपनी अंतरात्मा से मिला। दूसरे चित्र में जिसे भी छटी शताब्दी का बताया जाता है यह दिखाया गया है कि गौतम बुद्ध ने अपने राज्य को छोड़ने का निश्चय किया। किस प्रकार सत्य अहिंसा का व्रत धारण किया और संसार की और मानव जाति की सेवा करने का प्रण किया। तीसरे चित्र में यह दिखाया गया है कि वह अपने राज भार छोड़ने की घोषणा कर रहे हैं। इस चित्र को छटी या सातवीं शताब्दी का बताया जाता है। चौथे चित्र में भी इसी प्रकार का दृश्य है। पांचवे चित्र में गौतम बुद्ध के गद्दी पर बैठने और राज्यअभिषेक आदि का दृश्य दिखाई पड़ता है। किन्तु सही रूप से उस चित्र के सम्बन्ध में पता लगाना असंभव है। ६ वे चित्र में एक स्त्री अपने श्रृंगार की वस्तुएं लिए दिखाई पड़ती है। यह चित्र भी बौद्धकालीन समय का है। सातवीं गुफा में जो चित्र बना है उससे यह अनुमान लगाया जाता है कि युवराज के वेष में गौतम बुद्ध किसी साधू के आश्रम में बैठे हुए हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय मे साधू और महात्माओं का बड़ा सम्मान था और राज्य दरबार के बड़े लोग भी साधू और महात्माओं के आश्रम में आकर उनका बड़ा मान करते थे। आठवें चित्र में एक नृतकी एवं कुछ गाने वालों और सारंगी एवं बांसुरी बजाने वाली लड़कियों के चित्र हैं। इस चित्र से यह अनुभव न भलीभांति लगाया जा सकता है कि उस समय की चित्रकला और वास्तुकलाकी उन्नति के साथ २ संगीत और नृत्य कला भी उच्चकोटि की थी। नवें चित्र में भी इस प्रकार नृत्य करने वाली और गाना बजाने वाली स्त्रियों के चित्र हैं। दसवें चित्र में एक बड़े विशाल महल का दृश्य है। महल को देखने से उस समय की वास्तुकला का अनुमान भलीभांति लगाया जा सकता है। महल मे रंगीन मीनाकारी और नाना प्रकार के बेलबूटे दिखाई पड़ते हैं।

११ वे चित्र में भगवान गौतम बुद्ध का वह चित्र है जिसमें वह वस्त्र पहने हुए बैठे दिखाई देते हैं १२ वे चित्र म एक गाय एक तालाब म बनाया गया है और तालाब कमल के फूलों से भरा हुआ है इस चित्र के देखने से यह सिद्ध होता है कि उस

समय के चित्रकार बडे उच्चकोटि के थे जो फूल, तालाव, हाथी आदि के चित्र बडे सुन्दर ढंग से और रंग बिरंगे बनाते थे। १३ वे चित्र में जो कि दूसरी गुफा म बना हुआ है बड़ा ही विचित्र है। इसमें भगवान बुद्ध की एक हजार तस्वीरे बनी हुई है। जो नाना प्रकार के रंगों से रंगी हुई है। इस चित्र मे भगवान बुद्ध प्रार्थना मे मग्न दिखाई पड़ते हैं। चौदहवें चित्र में जो कि ११ वी गुफा में बना हुआ है। भगवान बुद्ध विचारों में लीन दिखाई देते है। इस चित्र की कला भी बड़ी ही अनोखी एवं उच्चकोटि की है। १५ वे चित्र में जंगल और पहाड़ों के दृश्य मे एक बत्तख की तस्वीर है। इससे यह अनुमान लगता है कि बौद्धकालीन समय में लोग पशु, पक्षियों से काफी रुचि रखते थे और अपने मकान एवं दिवारों मे उनके चित्र खीचते थे। १४वे चित्र म भगवान बुद्ध तपस्या करते हुए दिखाये गये हैं। उनके चारो ओर एक कुंडली बनी हुई दिखाई देती है। यह चित्र छठी शताब्दी के समय का बताया जाता है। १७ वे चित्र मे बौद्ध भगवान को अपने शिष्यो को उपदेश देते दिखाया गया है। इस चित्र में उनके शिष्यों की बहुत सी तस्वीरें है। सब हाथ जोड़े बैठे हैं। इससे यह भी अनुमान लगता है कि उस समय शिष्यों का व्यवहार अपने गुरुजनो के प्रति कैसा रहा होगा। इस चित्र के सम्बन्ध मे भूगर्भ विज्ञान के लोगों का कथन है कि लगभग पांचवी शताब्दी के समय का है। १८ वे चित्र में एक नौकरानी को मक्खी उड़ाने वाले चवर को लिये दिखाया गया है। स्त्रियाँ रंगीन कपडे और आभूषण पहने दिखाई गई है। इससे यह सिद्ध होता है कि बौद्धकालीन युग में स्त्रियाँ कपड़े और आभूषण पहनती थी। १९ वे चित्र मे किसी देवता को परियों के साथ दिखाया गया है। परियों के चित्रों से ऐसा मालूम होता है कि उनके देवता भगवान इन्द्र होंगे। अजंता की गुफा के सम्बन्ध में जो पुस्तक अमेरिका में लिखी गई है और जिसको संयुक्त राष्ट्र की उपसमिति ने प्रकाशित किया है, उसमें इस चित्र को भगवान इन्द्र का ही चित्र माना है और यह लिखा है कि भगवान इन्द्र को स्वर्ग मे अप्सराओं के साथ दिखाया गया है। साथ में यह भी लिखा है कि यह चित्र पांचवी शताब्दी का बनाया हुआ है। २० वे चित्र में भी किसी अप्सरा का चित्र है। यह अप्सरा बहुत ही सुन्दर वस्त्र पहने हुए दिखाई गई है, जिससे यह सिद्ध होता है कि उस समय स्त्रियों में बड़े सुन्दर २ वस्त्र और आभूषण प्रचलित थे। इसी प्रकार २१ वे चित्र में महल का दृश्य दिया गया है। एक चित्र जो इसी १७वी गुफा मे बना हुआ है जिसमें घोड़ा, स्त्री और एक पुरुष दिखाया है। कहा जाता है कि यह चित्र उस समय के रीति रिवाज के अनुसार बनाया गया है, इस चित्र के देखने से ऐसा अनुमान लगता है कि बौद्धकालीन समय में राजे और महाराजे घोड़े की सवारी को बहुत पसन्द करते थे।

शेष चित्र भी इसी प्रकार के उच्चकोटि के नाना प्रकार के रंगों में रंगीन

बनाई गई हैं। आज भी इस समय की चित्रकला को देखकर आश्चर्य होता है कि किस प्रकार उस समय की कला पहुँची हुई थी।

अजंता के अतिरिक्त एलोरा और भी अधिक सुन्दर है। एलोरा में जिस प्रकार पहाड़ों को काटकर मकान और मूर्तियाँ बनाई गई हैं, वह संसार में अद्भुत है। उस समय की वास्तुकला और संस्कृति कितनी उन्नतशील थी इसी बात से इसका अनुमान इन गुफाओं को देखकर ही भली भाँति लगाया जा सकता है। अजंता और एलोरा दोनों ही भारत में वे स्थान हैं जहाँ प्रत्येक वर्ष हजारों एवं लाखों की संख्या में यात्री आते जाते रहते हैं। पहले यह स्थान हैदराबाद राज्य में थे किन्तु अब महाराष्ट्र में है।

अमरावती :—आन्ध्र प्रदेश के गुन्टूर जिले में अमरावती बौद्धों की संस्कृति एवं सभ्यता का प्रसिद्ध केन्द्र है। यहाँ पर भारत का ही नहीं वरन संसार का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप बना हुआ है—कहा जाता है कि यह स्तूप पहली या दूसरी ईसा के पूर्व शताब्दी में बना था। इसकी गोलाई १६२ फीट और ऊँचाई ६५ फीट है। इस स्तूप की चित्रकला एवं वास्तुकला को देखकर मनुष्य को आश्चर्य होता है। बौद्ध स्तूपों में यह स्तूप न केवल सबसे बड़ा वरन् सबसे सुन्दर भी है।

दूसरा इसी प्रकार का स्थान गुंटूर जिले में चेजरला का है। यह प्राचीन समय से बौद्ध धर्म का बड़ा प्रसिद्ध स्थान रहा है। अब धीरे धीरे इस स्थान में बौद्धों के मंदिर खण्डहरों में बदल गये हैं।

नागूर :—भी आंध्र प्रदेश के करीम नगर जिले में बौद्धों की संस्कृति एवं सभ्यता का बड़ा प्रसिद्ध स्थान रहा है। इस स्थान पर बौद्धों के तीन स्तूप बने हुए हैं। इतिहासकारों का कहना है कि यह स्तूप सम्राट अशोक के समय के बने हुए हैं। यह भी स्तूप बड़े सुन्दर और अनोखे ढंग से बनाये गये हैं। इनकी कला बड़ी ही सुन्दर और आकर्षक है। इस स्थान में भी प्रत्येक वर्ष भारत के कोने कोने से यात्री आते हैं।

घंटसाल :—उपरोक्त स्थानों के अतिरिक्त आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में बौद्धों की संस्कृति एवं कला के कई बड़े बड़े स्थान हैं। इनमें घंटसाल नाम का स्थान बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ पर बड़ी बड़ी मूर्तियाँ और बौद्धों के स्तूप बड़े सुन्दर ढंग से बनाये गये हैं। कहते हैं कि यहाँ की कला और वास्तुकला दोनों ही प्राचीन हैं। मूर्तियाँ पत्थरों को काटकर बनाई गई हैं। कुछ स्थानों पर पहाड़ों को काटकर गुफाओं में भगवान बुद्ध की और गाय आदि की मूर्तियाँ बनाई हैं। यह कितनी पुरानी हैं इसका सही अनुमान लगाना बड़ा ही कठिन है। इसी प्रकार नालगोंडा जिले में जो कि हैदराबाद के पूर्व की ओर है बहुत से बौद्धकाल के प्राचीन स्थान हैं। ... भारत बना है

नागर जूना कोड़ा :—बौद्धों का प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ पर बुद्ध महा स्तूप के नाम से एक स्तूप बना हुआ है। इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध और भिक्षुओं की तस्वीरे पत्थरों मे काट काट कर बड़े सुन्दर ढंग से बनाई है। कहते है कि दक्षिण भारत मे तीसरी शताब्दी तक यह स्थान बौद्ध धर्म के प्रचार का मुख्य केन्द्र रहा है। यहाँ पर बहुत से स्तूप बने हुए हैं जिनमें बुद्ध धर्म के सिद्धान्त अंकित है। इसके अतिरिक्त काफी सख्या मे भिक्षुओं के रहने के स्थान भी बने है। इतिहासकारों का कहना है कि भारत और चीन, काश्मीर और काबुल से आने वाले बौद्ध भिक्षु यहाँ रहते थे। जहाँ तक जैन धर्म का सम्बन्ध है वह बौद्ध धर्म के मुकाबले में दक्षिण भारत में अधिक प्रचलित न हो सका किन्तु फिर भी कई स्थानों में जैन धर्म के बड़े बड़े मन्दिर और मूर्तिया बनी है। इन सबमें प्रसिद्ध स्थान रामतीर्थ का है। यह स्थान विशाखापटनम् जिले में है। यहाँ एक पहाड़ी पर जिसे बोडीकोडा कहते है जैनियों की तीन बड़ी बड़ी मूर्तियाँ है, जो कि पहाड़ काटकर बनाई गई है। इसके अतिरिक्त एक और महावीर स्वामी की मूर्ति बनी हुई है। इतिहासकारों का कहना है कि यह कला चालूकवंश के समय की है।

दक्षिण में जैन धर्म का प्रचार ईसा से ३०० वर्ष पूर्व हुआ। कन्हण देश के लगभग सभी शासक उस समय जैन मतालम्बी हो गये थे जिनमें गंग राजवंश, राष्ट्रकूट राजवंश और राज्यवंश के नाम उल्लेखनीय है। पांडया राज्य के राजा भी जैन मतावलम्बी थे। जैन धर्म का प्रचार वैसे तो छठी शताब्दी तक रहा किन्तु चालुक्य वंशी राजा पौराणिक हिन्दू धर्म के प्रचार में लग गये। इस समय के दिगम्बरों के मन्दिर बड़े ही सुन्दर और कला पूर्ण ढंग के बने हुये हैं। जैन धर्म का सबसे बड़ा प्रभावशाली राजा अमोघ वर्ष हुआ है।

दक्षिण भारत में जैन धर्म के पश्चात् बौद्ध धर्म का प्रचार अशोक राज्यकाल मे हुआ। अशोक के भाई महेन्द्र और उसकी पुत्री संघा मित्रा ने विशेषतया दक्षिण भारत मे और दक्षिण भारत से लेकर लंका तक बौद्ध धर्म का प्रचार किया। कुछ दिनों तक तो बौद्ध धर्म और जैन धर्म के अनुयायियों में काफी संघर्ष रहा किन्तु फिर भी बौद्ध धर्म ७वीं शताब्दी तक जोर में रहा। ७वी शताब्दी मे फिर हिन्दू धर्म प्रबल हो गया। बौद्ध धर्म के अब भी दक्षिण भारत में अनेको प्रकार के चिन्ह मिलते है। दक्षिण भारत मे बौद्ध स्तूप के अतिरिक्त बौद्ध संस्कृति और साहित्य का प्रचार करने के लिये बड़े बड़े छात्रावास, गुफा, मूर्तिया और स्तम्भ भी बनाये गये थे। बौद्धों की वास्तुकला बड़ी सुन्दर थी। अशोक की लाट बड़े सुन्दर ढग से बनाई गई थी, जिनकी प्रशंसा प्रसिद्ध चीनी दूत फाइहान ने भी की है। हालांकि फाह्यान ६०० वर्ष बाद दक्षिण भारत में गया था। उसने बौद्ध कालीन युग की कला की बड़ी प्रशंसा की है। अजंता और अलोरा में जो भी चित्र अङ्कित है और जिस प्रकार बनाये गये हैं वह संसार में अद्वितीय है

हिन्दू काल

दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के संघर्ष में प्राचीन हिन्दू धर्म और संस्कृति को फिर से पनपने का अवसर मिला। दक्षिण में हिन्दुओं के चार बड़े प्रसिद्ध राज्य थे—पल्लव, चालुक्य, चोल और पाण्ड्य। पल्लव राजाओं का उदय २५० सन् में होना आरम्भ हुआ। इनका सबसे प्रभावशाली राजा, महेन्द्र वर्मन और फिर नरसिंहवर्मा था जिनका सिक्का पूरे दक्षिण प्रदेश में चलता था। पल्लवों के समय में दक्षिण भारत में कला और संस्कृति में बड़ी उन्नति हुई। यहां तक कि उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में बड़े २ विद्वान और पंडितों को आश्रय मिला। वेदों और शास्त्रों की मीमांसायें लिखी गईं। पुराणों की अनेक कथाओं का प्रचार हुआ उन कथाओं के आधार पर बड़े मन्दिर स्थान २ पर बनाये गये। तामिल, तेलगू और कन्नड़ आदि दक्षिण की भाषाओं की बड़ी उन्नति हुई। सुन्दर २ इमारतें और महल बनाये गये। इस समय कई नाटक और काव्य लिखे गये। चित्तूर जो कि आन्ध्र प्रदेश का प्रसिद्ध जिला है तीसरी शताब्दी में यह जिला पल्लव राजाओं के राज्य का एक भाग था। इस नगर को कुछ दिनों के बाद चोल राजाओं ने विजय कर लिया था।

त्रिपुति :—कहा जाता है कि त्रिपुति का प्रसिद्ध मन्दिर सर्व प्रथम पल्लव राजाओं द्वारा ही बनाया गया था। यह मन्दिर दक्षिण भारत में न केवल प्रसिद्ध है वरन् वास्तुकला में अद्वितीय है। पल्लवों के पश्चात् चोल और पान्ड्या वंश के राजाओं ने इस मन्दिर की और अधिक उन्नति दी। इस मन्दिर के समीप ही एक पानी की झील प्राचीन काल से ती हुई है, जिसकी कथा पुराणों में भी मिलती है। इस झील में स्नान करने को समस्त भारत से यात्री आते हैं। जिस पहाड़ की चोटी पर यह मन्दिर बना है वह भी, उस समय के राजाओं की दृष्टि में बड़ा पवित्र माना गया है। इसके तीन प्रसिद्ध भाग हैं। एक का नाम है पाप विनाशन, दूसरे का नाम है आकाश गंगा और तीसरे का नाम गोगर्व तीर्थम्। इस मन्दिर के ऊपर जो नक्काशी की गई है उसमें भी मूर्तियों के ही चित्र बने है। यह मूर्तियां संगीत, नृत्य, पूजा, प्रेम प्रदर्शन सभी प्रकार की भावनाओं से ओत-प्रोत दिखायी गई हैं। जब यह नगर विजयनगर राज्य में सम्मिलित हुआ तो विजय नगर के प्रसिद्ध राजा कृष्ण देव राय ने अपनी स्मृति में अपनी एक मूर्ति भी इस मन्दिर के ही समीप बनवाई थी जो उस समय तक स्थापित है।

सागर जूना स गर —इसी प्रकार ग टर जिन म ँगा म ०० वष पर्व

चमुन्डी पर्वत पर नन्दी की मूर्ति

मैसूर में चमुन्डी पर्वत का सम्पूर्ण दृश्य

हिन्दू काल

दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के संघर्ष में प्राचीन हिन्दू धर्म और सभ्यता को फिर से फैलाने का अवसर मिला। दक्षिण में हिन्दुओं के चार बड़े प्रसिद्ध राज्य थे—पल्लव, चालुक्य, चोल और पाण्ड्य। पल्लव राजाओं का उदय २५० सन् में होना आरम्भ हुआ। उनका सबसे प्रभावशाली राजा, महेन्द्र वर्मन और फिर नरसिंहवर्मा था जिनका सिक्का पूरे दक्षिण प्रदेश में चलता था। पल्लवों के समय में दक्षिण भारत में कला और संस्कृति में बड़ी उन्नति हुई। यहां तक कि उत्तर भारत को छोड़ दक्षिण भारत में बड़े २ विद्वान और पण्डितों को आश्रय दिया। वेदों और शास्त्रों की मीमांसायें लिखी गईं। पुराणों की अनेक कथाओं का प्रचार हुआ उन कथाओं के आधार पर बड़े मन्दिर स्थान २ पर बनाये गये। तामिल, तेलगू और कन्नड़ आदि दक्षिण की भाषाओं को बड़ी उन्नति हुई। सुन्दर २ इमारतें और महल बनाये गये। इस समय कई नाटक और काव्य लिखे गये। चित्तूर जो कि आन्ध्र प्रदेश का प्रसिद्ध जिला है तीसरी शताब्दी में यह जिला पल्लव राजाओं के राज्य का एक भाग था। इस नगर को कुछ दिनों के बाद चोल राजाओं ने विजय कर लिया था।

त्रिपुति :—कहा जाता है कि त्रिपुति का प्रसिद्ध मन्दिर सर्व प्रथम पल्लव राजाओं द्वारा ही बनाया गया था। यह मन्दिर दक्षिण भारत में न केवल प्रसिद्ध है वरन् वास्तुकला में अद्वितीय है। पल्लवों के पश्चात् चोल और पान्ड्या वंश के राजाओं ने इस मन्दिर को और अधिक उन्नति दी। इस मन्दिर के समीप ही एक पानी की झील प्राचीन काल से [illegible]ती हुई है, जिसकी कथा पुराणों मे भी मिलती है। इस झील मे स्नान करने को समस्त भारत से यात्री आते है। जिस पहाड़ की चोटी पर यह मन्दिर बना है वह भी, उस समय के राजाओं की दृष्टि में बड़ा पवित्र माना गया है। इसके तीन प्रसिद्ध भाग है। एक का नाम है पाप विनाशन, दूसरे का नाम है आकाश गंगा और तीसरे का नाम गोगर्व तीर्थम्। इस मन्दिर के ऊपर जो नक्काशी की गई है उसमें भी मूर्तियों के ही चित्र बने हैं। यह मूर्तियां संगीत, नृत्य, पूजा, प्रेम प्रदर्शन सभी प्रकार की भावनाओं से ओत-प्रोत दिखायी गई है। जब यह नगर विजयनगर राज्य में सम्मिलित हुआ तो विजय नगर के प्रसिद्ध राजा कृष्ण देव राय ने अपनी स्मृति में अपनी एक मूर्ति भी इस मन्दिर के ही समीप बनवाई थी जो उस समय तक स्थापित है।

नागर जूना सागर इसी प्रकार गन्टूर जिले में [illegible] २० वर्ष [illegible]

चमुन्डी पर्वत पर नन्दी की मूर्ति

मैसूर में चमुन्डी पर्वत का सम्पूर्ण दृश्य

मैसूर में चमुन्डेश्वरी देवी की मूर्ति

मैसूर में नन्दी की मूर्ति

शत्रु वाहन, राजा ने एक मन्दिर बनवाया था । इस मन्दिर को पल्लव वंश के राजाओं ने और भी अधिक विस्तार दिया । इस मन्दिर में पल्लव वंश के सभी राजाओं के नाम सुन्दर ढंग से खोदकर पत्थरों से बनाये गये हैं । यह स्थान नागर जुग नू कोन्डा के समीप है । कहते है कि तीसरी शताब्दी में इस नगर के प्रसिद्ध राजा यक्षवाकु को पल्लव के राजा ने हराकर अपना अधिकार जमा लिया और तब से लेकर सातवीं, शताब्दी तक यह स्थान पल्लव राजाओं के अधिकार में रहा । फिर चालुक्य वंश के राजाओं के हाथ में आ गया । दूसरा स्थान गन्टूर जिले में दुर्गी का है ।

दुर्गी :—दुर्गी एक बहुत प्राचीन नगर है । यहां पर कई मन्दिर बराबर २ बने हुये हैं । आरकीलोजीकल विभाग, (पुरातत्व विभाग ने हाल में ही इन खण्डरों और मन्दिरों के भीतर खुदाई करके बहुत सी बातों की खोज की है । यह थान तामिल संस्कृति और भाषा का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है ।

महेन्द्र वर्मन इस वंश का सबसे प्रभावशाली राजा हुआ है । इन्हीं के समय मे संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भैरवी हुए थे जो सारे दक्षिण भारत में विख्यात है । महेन्द्र वर्मन को चालुक्य वंश के राजाओं ने पराजित करके अपनी राजधानी में उसका राज्य सम्मिलित कर लिया था । इस समय की जो इमारतें अथवा मन्दिर बने हुए है, और उनमें जो चित्र अंकित है अथवा बनाये गये है उनमे सिद्ध होता है कि स्त्रिया आभूषण पहनती थी, पुरुष धोती कुर्ता और राजे अथवा सरदार लोग अँगरखा पहनते थे । संगीत और नृत्य का सारे दक्षिण भारत में रिवाज था । तामिल, तेलगू के अतिरिक्त संस्कृत और प्राकृतिक भाषा भी साधारणतयः प्रचलित थी । अकसर मन्दिरों के गुम्बदो पर जो मूर्तियां बनायी गई है उनमें प्रेम का प्रदर्शन भी दिखाया गया है ।

पल्लवों के पश्चात् चालुक्य वंश का उदय हुआ । चालुक्य वंश ५९७ सन् से लेकर ७वी शताब्दी तक बडे जोरों के साथ रहा । इस वंश का राजा पुलकेश्वम बड़ा ही प्रसिद्ध हुआ है । पुलकेश्वम के अतिरिक्त सोमेश्वर और राजेन्द्र दो और भी राजा प्रसिद्ध हुए हैं । राजेन्द्र के नाम पर विजय वाड़ा जिला स्थापित किया गया ।

राजेन्द्र चोला पुरम :—राजेन्द्र चोलापुरम, विजय वाड़ा जिले में कृष्णा नदी के किनारे प्रसिद्ध स्थान है । चालुक्य वंश के अनेक मन्दिर और इमारतें आन्ध्र प्रदेश के करनूल जिले में भी मिलती हैं । श्री शैलाम या श्री पारवती नाम के स्थान बहुत प्रसिद्ध है । यहा शिवजी का प्रसिद्ध मंदिर है । यह मन्दिर बहुत पुराना है इस मंदिर की कला भी बडी ही अद्भुत है इस मंदिर की दीवारों पर जो मूर्तिया अंकित का

[illegible] भी [illegible] पूर्ण है। इसके सम्बन्ध में पुराणों में एक कथा प्रचलित है कि [illegible] शिवजी [illegible] का भक्त कहा जाता है, और जो बैल के रूप में था उसने [illegible] पर [illegible] किया था। इसके [illegible] भगवान शंकर पार्वती के साथ प्रकट हुए। कहते हैं कि [illegible] का एक प्रसिद्ध भक्त भिरंगी जो कि शिवजी की भक्ति में पार्वती से पक्षपात पूर्ण व्यवहार करता था, पार्वती के श्राप से [illegible] का ढांचा [illegible] रह गया। पार्वती ने उसे एक तीसरी टांग प्रदान की थी जिसके बल पर वह खड़ा रहता था। यह भक्त अब भी मन्दिर में तीन ही टांगो से खड़ा दिखाई देता है। उस मन्दिर को देखने से यह प्रतीत होता है कि उस समय शिवजी की पूजा दक्षिण भारत के हिन्दुओं में आम तौर से प्रचलित थी। चोल और चालुक्य दोनों ही कला प्रेमी थे।

चोल वंश :—चोल वंश ८५० से १२०० सन् तक रहा। इस बीच में लगभग चोल वंश के २० से भी अधिक राजा हुये होंगे। इनमें आदित्य, परकेशरी वर्मन वीर राजेन्द्र और विक्रम के नाम उल्लेखनीय है। कहते हैं कि चोलवंश के राजाओं ने अपनी संस्कृति और कला को लंका तक फैलाया था और कई बार लंका को विजय करने के लिए आक्रमण किये थे। राज राजा ने लंका को जीत कर कुछ दिनों अपने अधिकार में भी रक्खा था। चोल और चालुक्यों में कुछ दिनों तक काफी लड़ाई झगड़े और वैमनस्य चलते रहे। फिर इन दोनों वंशों में विवाह भी होने लगे। कहते हैं कि राजेन्द्र चोल ने विक्रमादित्य चालुक्य के साथ अपनी बहिन का विवाह किया था। इस युग का साहित्य और कला बड़ी उन्नति शील कही जाती है। काव्य, व्याकरण, जोतिष, विज्ञान, संगीत, और नृत्य में भी इस युग में बड़ी उन्नति हुई। इस युग की राज्य भाषा संस्कृत थी किन्तु क्षेत्रीय भाषायें तेलगू और तामिल आदि भी अक्सर भागों में प्रचलित थीं। धार्मिक क्षेत्र में भी पर्याप्त उन्नति हुई। वैष्णव शैव और शाक्य सम्प्रदाय इस समय खूब ही पनपे।

वोन्टी मिटा :—कुडाफ जिले में वोन्टिमिटा का प्रसिद्ध मन्दिर इसी काल का बनवाया हुआ हैं जो बहुत प्रसिद्ध है। इसी प्रकार दूसरा मन्दिर पिथा पुरम का बहुत प्रसिद्ध है। यह मन्दिर कहते हैं कुककुटेश्वर स्वामी का बनवाया हुआ है। इस मन्दिर मे शिवरात्रि के अवसर पर १५ दिन का मेला लगता है जिसमे दक्षिण भारत के सहस्त्रों स्त्री पुरुष यात्रा को आते है।

अहोवलम :—अहोवलम का मन्दिर भी इस युग के प्रसिद्ध मन्दिरो में से है। यह मन्दिर करनूल जिले में बना हुआ है। कहते है कि इस में ९ देवता हैं। इसलिये इसका नाम नवनरसीमा भी है इसके सबंध मे पौराणिक कथा प्रसिद्ध है कि

जहां भगवान विष्णु ने हरिणाकश्यप राक्षस का वध किया था इसी के समीप उकष्टास्तम्भ नाम का एक स्तम्भ है। कहते हैं कि इसी स्तम्भ में से भगवान प्रगट हुए थे और उन्होंने हरिणाकुश को पकड़ा था। अहोबनम के ऊपरी भाग मे जो मूर्ति है उसे स्वयंभू भी कहते हैं। इस मूर्ति की दस भुजाये है यह मूर्ति राक्षस के पेट को फाड़ती हुई बनाई गई है। नीचे के भाग में जो मूर्ति है वह प्रहलाद भक्त के नाम से प्रसिद्ध है। इस पहाड़ी का नाम ज्वाला पर्वत है। उसकी गुफा को जहाँ से भावनाशी नदी बहती है रक्त कुन्दन कहते हैं। इस नदी का पानी लाल है। पुराणो के अनुसार इस नदी में हरिणाकुश का खून बहकर गिरा था इसीलिये इसका पानी लाल हो गया है।

ह्वानसांग :—सन् ६४० ई० मे चीन का प्रसिद्ध यात्री ह्वांग सांग भारत म आया था। वह दक्षिण भारत मे भी गया था और दक्षिण भारत में इसने तैलगू और संस्कृत की बहुत सी किताबों का अध्ययन भी किया था। ह्वान सांग ने पल्लव और चालुक्य वंश के राजाओं द्वारा बनवाई हुई सुन्दर इमारते, मन्दिरों और अन्य प्रकार की वास्तुकला की बड़ी प्रशंसा की है। उसने यह भी लिखा है कि पल्लव वंश के राज्यों के समय दक्षिण भारत में कला और संस्कृति उन्नति के शिखर पर थी।

तीसरी शताब्दी से ११ वी शताब्दी तक पल्लव, चालुक्य चोल और पांड्या राज्यो मे जो कला और वास्तुकला की उन्नति हुई उनके संबंध में बहुत से लेख और खुदे हुये स्तम्भ मिलते हैं। न केवल तेलगू, कन्नड़ तामिल आदि भाषाओं की उन्नति हुई और उनमें ग्रन्थ लिखे गये बल्कि संस्कृत भाषा की भी बड़ी उन्नति हुई। इसी काल में द्रव्य नीति नाम का एक राजा हुआ जो संस्कृत और कन्नड़ दोनों भाषाओ का ही विद्वान था। इस काल के कई लेख अब भी मिलते है, जिससे उसकी विद्वता का अनुमान लगाया जा सकता है इस समय के अधिकांश बने हुए मन्दिर द्राविड़ काल के बने हुए है।

राजमन्दरी :—राजमन्दरी में कुकटेश्वरी स्वामी का एक बड़ा विशाल मन्दिर बना है, जो इसी काल का बना हुआ बताया जाता है। राजमन्दरी किसी समय मे राजा राजेन्द्र की राजधानी था। गोदावरी नदी के किनारे कई मन्दिरो में से दो मन्दिर एक मारकन्डे और दूसरा कोटली लिंगेश्वर नाम के बहुत प्रसिद्ध है। इस स्थान पर १२ वर्ष के पश्चात् पुष्कर का एक मेला लगता है जिनमें लाखो की संख्या में यात्री आते हैं। दक्षिण में यह स्थान सबसे अधिक पवित्र माना जाता है।

कोंकिन्डा का कथन है कि कोंकिन्डा किसी समय मे काकतीय

[illegible] के राजाओं की राजधानी रहा है। यह स्थान राजमहेन्द्री से लगभग ८० मील [illegible] राजमहेन्द्री और मद्रास रेलवे लाइन पर है।

अन्नावरम :- दूसरा स्थान गोदावरी जिले में अन्नावरम नाम का है। इस स्थान पर श्री सत्यनारायण स्वामी का मंदिर रत्नगिरि की पहाड़ियों पर बना हुआ है। इसी प्रकार दूसरा मन्दिर :--

बिक्कावोलू : बिक्कावोलू स्थान पर गोदावरी जिले में ही है। कहते हैं कि किसी समय में इस स्थान का नाम बिरुदनकाल वोलु था और यह नाम चालुक्य वंश के प्रसिद्ध नरेश [illegible] भीम के नाम पर पड़ा था। यहां पर एक ही स्थान पर ९ मन्दिर हैं। यह मन्दिर चालुक्यों की कला संस्कृति और वास्तुकला के प्रतीक है। इन मंदिरों को देखने से उस समय की संस्कृति और कला का अनुमान लगता है। यह मंदिर इतने सुन्दर बनाये गये हैं कि उन्हें देखकर आश्चर्य होता है कि चालुक्यो के समय की कला और संस्कृति इतनी उच्च कोटि की थी। इस समय की जो मूर्तियां और चित्र बने हैं उनसे यह अनुमान भली भाँति लगता है कि स्त्रियां चमक दमक के रंगीन कपड़े पहनती थी, जिन पर गोटा और कलाबत्तू के काम भी कढ़े होते थे। आभूषण पहनने की प्रथा आमतौर पर थी। पुरुष धोती कुर्ता और आभूषण पहनते थे। सुन्दर और अच्छे मकान नदी के किनारे और कहीं २ पर पहाड़ो की गुफाओं में भी बनाते थे। सुन्दर ढंग से पत्थर काटकर मूर्तियाँ बनाई जाती थी और मकानों में मीनाकारी की जाती थी।

सार्पवरम :—सार्पवरम नाम के स्थान में जो कि पूर्वी गोदावरी जिले में एक बड़ा ही सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। यह मन्दिर विष्णु भगवान को भवनारायण स्वामी द्वारा पुरानी कथाओं के अनुसार भेंट किया था। इसी जिले में अन्तर्वेदी नाम के स्थान पर वशिष्ट नदी के किनारे एक सुन्दर मंदिर बना हुआ है जो उस समय की संस्कृति को प्रदर्शित करता है।

दुर्गी :—कवाकटाय वंश के समय में भी दक्षिण भारत में कला और संस्कृति की बड़ी उन्नति हुई।

दुर्गी :—जो कि गंटूर जिले में एक बड़ा ही प्राचीन स्थान है। उनमें कवाकटाय वंश के खन्डहर और इमारतें तथा मंदिर बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। यहां पर एक प्रसिद्ध मंदिर गोपाल स्वामी का है जिसमें कवाकटाय वंश के सभी राजाओं का एक शजरा दिया हुआ है और किस राजा ने किस समय तक राज्य किया यह भी बड़े ही कलापूर्ण ढंग से पत्थरों में खुदा हुआ है
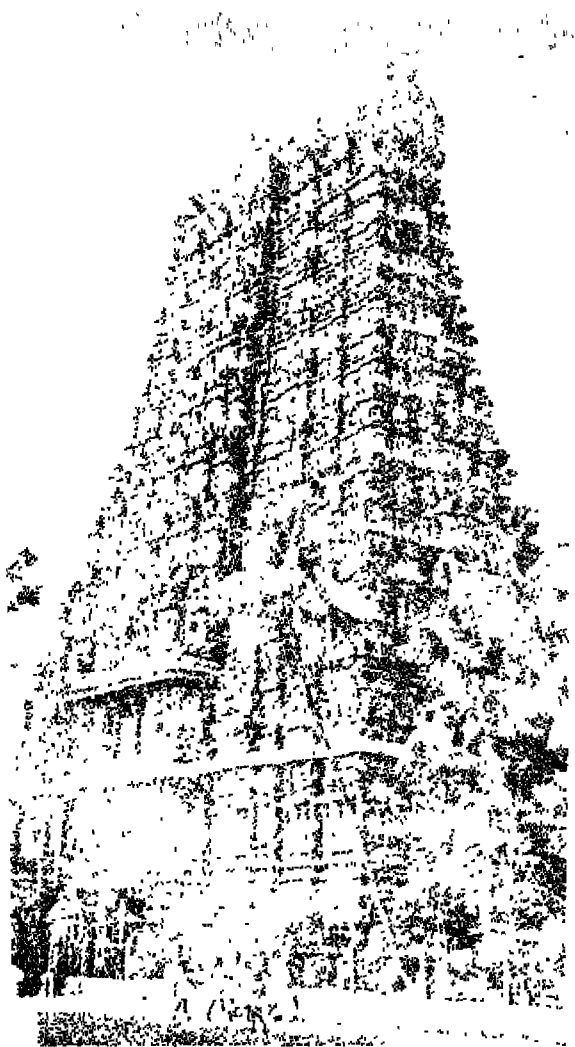
मीनाक्षी का प्रसिद्ध मन्दिर (मदुराई)

लेपाक्षी का प्रसिद्ध मन्दिर

टनाली :—इसके समीप ही टेनाली स्थान पर श्री टेनाली रामकृष्ण स्वामी का एक बड़ा ही सुन्दर मन्दिर है। इस मन्दिर पर संस्कृत भाषा में टेनाली राम लिंगेश्वरा का नाम खुदा हुआ है और बहुत से श्लोक भी संस्कृत में खुदे हुये हैं।

कोटप्पाकोनडा और मंगलगिरी नाम के मन्दिर भी बड़े ही सुन्दर और कलापूर्ण ढंग से गन्टूर जिले में बनाये गये हैं। इस मन्दिर की मूर्ति जो कि पहाड़ों पर है पाणकला लक्ष्मी नरसीमा स्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। पुराणों की कथा के अनुसार यह स्थान विष्णु भगवान के तपस्या करने का स्थान था और विष्णु भगवान ने किसी समय में लक्ष्मी नरसीमा स्वामी का रूप धारण करके इस मूर्ति के मुंह में पानी भर दिया। तब से यह मूर्ति बराबर पानी उगल रही है। वैज्ञानिकों की खोज के अनुसार यहाँ एक ज्वालामुखी पहाड़ है जहाँ से हर समय गन्धक का पानी निकलता रहता है।

काकतीय चोल, चालूक्य एवं पांड्या वंश

काकतीय वंश :---काकतीय वंश के राजाओं को भी कला और संस्कृति से बड़ी रुचि थी। इनमें गनपत नाम का राजा बड़ा ही प्रसिद्ध और प्रभावशाली रहा है। वारंगल जो कि उस समय मनकल के नाम से प्रसिद्ध था राजा गनपति ने सर्व प्रथम यहां पर किला बनवाया था। पहले काकतीय वंश के राजा चालुक्यों के आधीन थे, किन्तु कुछ ही दिनों में वे चालुक्यों से स्वतंत्र हो गये। काकतीय वंश के समय मे दक्षिण भारत में कला कौशल के साथ २ साहित्य की भी उन्नति हुई। इस समय एक विदेशी यात्री मारकोपोलो भारतवर्ष में आया था जिसने काकतीय वंश के राजाओं के सम्बन्ध उनके साहित्य और कला, संस्कृति एवं वास्तुकला की भूरि २ प्रशंसा की है उसने लिखा है कि न केवल पुरुष वरन स्त्रियाँ भी पढ़ी लिखी होती थी और पुरुषो के कार्य में हाथ बटाती थीं। मारकोपोलो के समय में काकतीय वंश की एक स्त्री रुद्रामा ही रानी थी और उसी के हाथ में सारा राज काज का काम था। काकतीय वंश का तीसरा प्रभावशाली राजा प्रताप रुद्र हुआ है। वह भी बड़ा ही कला का प्रेमी था और उसके समय में भी कई बड़ी इमारतें और मन्दिर बने।

आंध्र प्रदेश के खम्माम जिले में पल्लव, चालुक्य, चोल और पान्डया और काकतीय राजाओं के बनाये हुये बहुत से मन्दिर और तीर्थ स्थान हैं। ११वीं शताब्दी में खम्माम नगर में चोल और पान्डया राजाओं द्वारा कई इमारतें बनाई गई जिसमें खम्माम का किला बहुत प्रसिद्ध है। दूसरा इस जिले में सबसे अधिक सुन्दर स्थान भद्राचलम् का मंदिर है। यह मन्दिर गोदावरी नदी के किनारे बड़े ही सुन्दर और रमणीक स्थान में बना हुआ है। प्राचीन कथा के अनुसार इस मन्दिर मे भद्र नाम के महात्मा ने तपस्या की थी इसीलिये इसका नाम भद्राचलम् पड़ गया। पुराणों की कथा के अनुसार महाराज रामचन्द्र ने लक्ष्मण और सीता के साथ इस स्थान पर गोदावरी नदी को पार किया था। इसलिये दक्षिण भारत में इस स्थान की मान्यता और भी अधिक बढ गई है। यह मंदिर एक पहाड़ की चोटी पर बड़े सुन्दर वास्तुकला का प्रतीक है। इस मन्दिर की कला और कारीगरी को देखकर यात्री चकित रह जाते हैं और उनकी आँखें घंटों इस मन्दिर के दृश्य और कला को घूरती ही रहती है। इस मंदिर के समीप २४ छोटे मोटे मन्दिर और भी है जिनके सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की कथायें और गाथायें प्रसिद्ध हैं प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या मे इस मंदिर की यात्रा करने [illegible] देश के कोने २ से यात्री आते हैं

१७ वीं शताब्दी में एक स्त्री जिसका नाम टम्माला इम्माका था उसने इस मंदिर में तपस्या की। कहते हैं कि इसी समय रामदास नाम के एक महात्मा ने इस मन्दिर में तपस्या की थी। उसके पास ६ लाख रूपया सरकारी खजाने का था जो उसने इस मन्दिर में लगा दिया था। कहते हैं कि राजदर्बार से जब उसे सजा मिली तो भगवान राम मनुष्य का अवतार लेकर इस मन्दिर में आगये और उन्होंने ६ लाख रूपया अदा करके संत रामदास को छुड़ा लिया। रामदास के संबंध में दक्षिण मे बहुत सी गाथायें प्रचलित हैं।

श्री काकुलम् :---यह स्थान कृष्णा जिले में हिन्दू सभ्यता का मुख्य केन्द्र है। किसी समय यह आंध्र प्रदेश की राजधानी था। अब यहाँ भगवान विष्णु का एक बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर की कथा के अनुसार १५ वी शताब्दी मे कृष्णा देवराय नाम के राजा ने इस मन्दिर में तपस्या की थी। तपस्या के समय कृष्णा देव राय को आकाशवाणी हुई कि वह कोई कविता अपने संबंध मे लिखे। आकाशवाणी के संकेतानुसार कृष्णा देवराय ने कविता लिखी। उसी समय से उसकी कविता की पुस्तक दक्षिण प्रदेश में बहुत प्रसिद्ध हुई और जिसकी गणना दक्षिण प्रदेश के धार्मिक साहित्य में होने लगी। इसी के समीप एक दूसरा प्रसिद्ध मन्दिर कृष्णा नदी के किनारे काशी पल्ली का है। इस स्थान को दक्षिण का काशी भी कहा जाता है। यह मन्दिर नागेश्वर नाथ का है जहाँ प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि के दिन बहुत बड़ा मेला होता है।

घंटशाला :---कृष्णा जिले में आंध्र प्रदेश की कला की लिए बड़ा प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ काली भैरव और सरस्वती की मूर्तियां बड़े कलात्मक ढंग से बनाई गई है और भगवान नरसीमा की मूर्ति पत्थर में खोदकर बनाई गई है जिसको आंध्र प्रदेश की सर्वोच्च कला कहा जाता है।

करनूल जिले में भी चोल, चालुक्य और काकतीय युग के कला और संस्कृति की बड़ी इमारतें, मन्दिर और खन्डहर मिलते हैं। ८वीं शताब्दी में जब यह जिला चालुक्य वंश के राजाओं के राज्य का था तो भी यहाँ बड़ी २ सुन्दर इमारतें और मन्दिर बनाये गये। काकतीय वंश के समय में गनपति राजा ने इस जिले में कई सुन्दर स्थान बनाये। उस समय की कला और संस्कृति के अब भी इस जिले में न जाने कितने स्थान मिलते हैं। चोलवंश के राजाओं ने इस जिले में तैलुगू भाषा को बड़ी उन्नति दी। उस समय का तैलगू भाषा का साहित्य आज तक मिलता है। श्री शैलम का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान निजिमागिरि पहाड़ पर कृष्णा नदी के किनारे एक बड़ा ही प्राचीन संस्कृति और कला का केन्द्र है

स्थान की कथा के अनुसार यह स्थान भगवान शंकर की तपस्या करने का स्थान माना जाता है। १४वीं १५वीं शताब्दी में इस स्थान की कृष्ण राय राजा ने बड़ी उन्नति की और उसने कई सुन्दर स्थान बनवाये।

आलम्पुरम स्थान भी करनूल जिले में विशेष नागर ढंग की कला और वास्तुकला के लिये अति प्रसिद्ध है। यहां का प्रसिद्ध मंदिर चेन्न केशव अर्थात् विष्णु भगवान के नाम का है। इस मन्दिर में बहुत से लेख आदि खुदे हुये मिलते हैं। कुछ इतिहासकारों का विचार है कि यह मंदिर १६वीं शताब्दी के समय का है।

महानन्दी मंदिर :—करनूल जिले में एक और प्रसिद्ध मंदिर महानन्दी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। यह मंदिर नन्ददयाल रेलवे स्टेशन से लगभग १० मील दूर है। इस मंदिर के चारों ओर छोटी २ पहाड़ियों के बड़े ही सुन्दर दृश्य है। मन्दिर के समीप नन्दी की एक सुन्दर मूर्ति है जो पत्थर काट कर बनाई गयी है। नन्दी के मुंह से झरने का पानी निकाला गया है। इस पानी को बड़ा ही पवित्र और रोगनाशक माना जाता है। मंदिर के भीतर भगवान शिवजी की मूर्ति जहां प्रत्येक वर्ष लाखों यात्री दर्शन करने आते हैं।

आंध्र प्रदेश में चोल राजाओं ने वर्तमान महबूब नगर जिले में भी कई सुन्दर स्थान बनवाये थे। महबूब नगर का नाम भी प्राचीन समय में चोल वाड़ी अर्थात चोल वंश के राजाओं की भूमि था। सन् ४८० से लेकर काफी समय तक इस प्रदेश में चोल वंश के राजाओं ने कला, संस्कृति और साहित्य में बड़ी उन्नति की। इसी जिले में आलमपुर के समीप तुंगभद्रा नदी पर चालुक्य वंश के समय में बनाये गये कई मंदिर स्थित है। यह मंदिर दो विभागों में विभाजित हैं। मंदिरों का एक भाग विरहमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है और दूसरा पापन्थ के नाम से प्रचलित है। पहले भाग में ६ मंदिर है जिन्हे बालब्रह्म कहते हैं। इन मंदिरों की कला चालुक्यों के समय के अन्य मंदिरों और इमारतों के ही प्रकार है। चालुक्यों के समय में इमारतों में बड़े २ लम्बे सुन्दर ढंग की खिड़कियाँ और लाख एवं मीना कारी की प्रथा थी। वही ढंग इन मंदिरों का है। इनमें बहुत से मंदिर तो पहाड़ियों को काटकर बनाये गये हैं जिनके भीतर जाने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी गुफा में घुस गये हों। मंदिरों के भीतर लगातार खम्बे बने हुये हैं। इन मंदिरो और इमारतो में जो रोशनदान लगाये गये हैं वे भी अनोखे ही ढंग के हैं। कुछ मंदिर जिनमें कि खोद कर मूर्तियां और मीनाकारी बनाई गई है उनका ढंग भी अनोखा ही है। चालुक्य किस प्रकार कला प्रेमी थे और उन्हें सुन्दर इमारत बनाने की कितनी रुचि थी और उनके समय में वास्तुकला कितनी उच्च
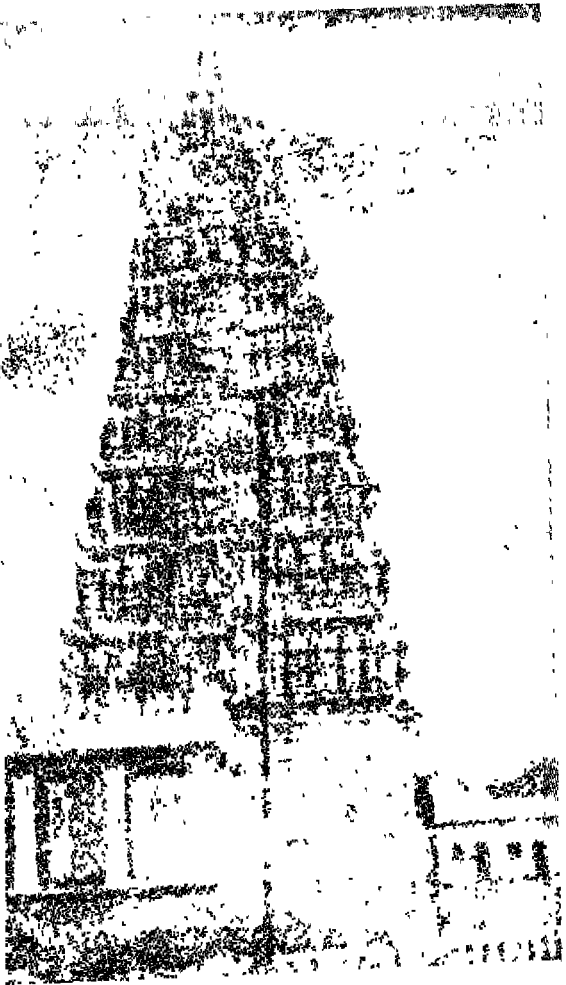
मीनाक्षी का प्रसिद्ध मन्दिर (मदुराई)

मैसूर का संत फ्लोमीना का प्रसिद्ध गिरजा

कोटि की थी यह उन मन्दिरों को देखकर भली भांति अनुमान लगाया जा सकता है।

आंध्र प्रदेशों में मेदक जिले में भी बहुत प्राचीन इमारतें और खंडहर मिलते हैं। कोन्डापुर नाम का गांव खुदाई के बाद निकला है। इस गांव को दक्षिण का टैक्सला कहा जाता है। साहित्यकारों का अनुमान है कि यह नगर चोटिया वंश के राजाओं द्वारा बसाया गया था। इस नगर की खुदाई में जो सिक्के मिले हैं वह आंध्र वंश के राजाओं के समय के हैं। कुछ सिक्के यहां पर रोम राज्य के भी मिले हैं जो ईसा के पूर्व के हैं। इन सिक्कों से ऐसा अनुमान मिलता है कि उस समय के राजाओं का व्यापार रोम से होता था। पुरातत्व विभाग के ज्ञाताओं का अनुमान है कि यह सिक्के ईसा से तीन हजार पूर्व के हैं। इस प्रदेश में इतिहास के अनुसार ११वीं शताब्दी के आरंभ से चोल वंश के राजाओं का अधिकार रहा। कोन्डापुर का अभी तक समस्त भाग पुरातत्व विभाग द्वारा खोदा नहीं जा सका है। केवल कुछ भाग की खुदाई हुई है। अन्य इमारतों के साथ बौद्धों का एक स्तूप भी है इसकी ऊंचाई १५ फीट है। यह इसी खुदाई में निकला है। इस नगर का उल्लेख एक रोमन लेखक ने भी किया है। जो रोमन सिक्के इस खुदाई में निकले हैं वह ईसा से ३७ वर्ष पूर्व सम्राट अगस्तस के समय के हैं। इन सिक्कों में कुछ सोने के कुछ चांदी के कुछ तांबे के हैं।

मैसूर :—दक्षिण भारत में मैसूर का महत्व भी कला, संस्कृति और सभ्यता की दृष्टि से बहुत प्राचीन और महत्वपूर्ण है मैसूर का नाम महसासुर नाम के एक शक्तिशाली दस्यु द्वारा पड़ा। अब भी मैसूर में चमुन्डीपर्वत पर महसासुर की विशाल मूर्ति बनी हुई है। बहुत समय तक मैसूर राज्य कदम्ब राजाओं के आधीन रहा। उस समय इस प्रदेश की राजधानी बनवासी थी। फिर यह प्रदेश चालुक्य राजाओं के आधीन आ गया। इतिहास में आठवीं शताब्दी में चेरा वंश के राजा मैसूर में राज्य करते थे। चेरा वंश के राजाओं को पराजित करके चोल वंश के राजाओं ने मैसूर में अधिकार किया। इस समय मिली जुली कला और वास्तुकला के चिन्ह, इमारतें और मन्दिर अब भी मैसूर में काफी संख्या में पाये जाते हैं। चालुक्य वंश के समय में मैसूर में बड़ी उन्नति हुई और वह उन्नति १२वीं शताब्दी तक जारी रही। मैसूर नगर में चमुन्डी पर्वत पर पौराणिक समय की कई इमारतें, मूर्तियां और मन्दिर मिलते हैं जिनमें महसासुर की मूर्ति, नन्दी की मूर्ति और चमुन्डी देवी का मन्दिर विशेषतयः उल्लेखनीय है।

मद्रास :—पान्डया, चोल और चेरा वंश के राजाओं का खास केन्द्र रहा है यहां इन राजाओं द्वारा बड़े २ विशाल मन्दिर और इमारतें बनवाई गई जिनमें मदूरा इमारतें और मन्दिर विशेषतया उल्लेखनीय हैं। कहते हैं कि ईसा से ५०० वर्ष पूर्व से लेकर ११वीं शताब्दी तक पान्ड्या वंश के राजाओं ने इस प्रदेश में कला और संस्कृति

ा विशेष उन्नति की। मथूरा में एक मन्दिर ६ बड़े २ स्तूनों से घिरा हुआ है। इनमें एक स्तून की लम्बाई १५२ फीट है। इस इमारत में ६० फीट लम्बे पत्थर लगाये गये हैं। इन मन्दिरों की जो दीवारें बनी हैं इनमें प्राचीन देवताओं की मूर्तियाँ पत्थरों में खोदी गई है। इसके अतिरिक्त मंदिर की दीवार और छत के पत्थरों मे हाथी, शेर, घोड़े, बैल और मोरों आदि की मूर्तियाँ भी खोदी गई है। इन मूर्तियों को देखकर उस समय की संस्कृति और सभ्यता का भली भांति अनुमान लगता है। स्त्रियों की जो मूर्तियां पत्थरों में खोदकर बनाई गई है, वह हीरे और जवाहरात से जड़े आभूषण पहने हुए दिखाई गयी है, इससे यह अनुमान लगता है कि उस समय स्त्रियां रंगीन कपड़े और सुन्दर २ आभूषण पहनती थी। मदूरा का सबसे सुन्दर महल संसार की सुन्दर और विशाल इमारतों मे से एक है। इस महल मे जो हाल बना है उसमें १००० स्तम्भ बने हुये है। इस महल का नाम त्रिमाला नामक महल है। यह मद्रास प्रदेश का सबसे सुन्दर स्थान है।

इसी प्रकार मद्रास राज्य में मदूरा जिले में दूसरा सबसे सुन्दर स्थान बसन्ता हाल है। इसकी लम्बाई ३३३ फीट है। इसको देखने से पता लगता है कि उस समय की कला और संस्कृति कितनी उच्च कोटि की होगी और जो इमारतें और मन्दिर बनाये गये हैं। उनके बनाने वाले कारीगर वास्तुकला में कितने निपुण और Expert होंगे। इन इमारतों के अतिरिक्त मदूरा जिले में ही बैगाई नदी पर बड़े सुन्दर और रमणीक घाट बने हुये हैं। सैकड़ों साल इन घाटों को बने हुए हो गये, किन्तु उनके सौन्दर्य और मजबूती में अब भी कोई अन्तर दिखाई नहीं पड़ता। वास्तव में यह समय दक्षिण भारत मे एक सुनहरा युग रहा होगा जबकि स्त्रियाँ इतने सुन्दर वस्त्र और आभूषण धारण करती थीं और पुरुष इतने बड़े २ आलीशान मकानों में रहते थे। उनके पूजा पाठ करने के स्थान कितने सुन्दर और रमणीक थे जिनका सौन्दर्य सैकड़ों वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् भी बाकी है। कहा जाता है कि उस समय विश्वनाथ नाम के एक राजा ने जो नायक वंश से संबंध रखता था मद्रास प्रदेश मे इतनीं इमारतें और मन्दिर बनवाये कि समस्त भारत में कहीं नहीं बने। पत्थर तराशने की कला उस समय इतने उच्च कोटि की थी कि दूर २ से लोग उन [illegible] को देखने आते थे आज भी इतनी बड़ी और विशाल इमारतों को देखकर लोग चकित रह जाते हैं कि किस प्रकार यह इमारतें बनाई गई होंगी जबकि [illegible] यंत्रों की कमी थी। उस समय इतने बड़े २ पत्थर जिनका बोझ [illegible] था [illegible] ऊपर छत पर रखे गये होंगे।

नालगोन्डा :—नीलगिरि पहाड़ पर प्राचीन नगरों में से एक है। नालगोन्डा संस्कृत का शब्द है। इसके संबंध मे पौराणिक कथा यह है कि यहाँ बनवास के समय में रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण के साथ लगातार १० वर्ष तक विचरते रहे। अ

राजाओं की जुरावर्ती तक यह राजधानी भी रही। इस प्रदेश को आन्ध्र राजाओं ने बहुत समय तक अपने अधिकार में रक्खा। कुछ समय पहले इस प्रदेश की राजधानी पनगल थी, जो कीर्ति वर्मन राजा के समय तक रही। कीर्ति बर्मन के पश्चात् इस प्रदेश में चालुक्य वंश का उदय हुआ। कुछ दिनों तक यह प्रदेश वारिंगल राज्य का भाग बना रहा। वारिंगल के काकतीय वंश के राजाओं ने इस प्रदेश में कला और संस्कृति बहुत उन्नति की। उन्होंने श्री पचाला सोमेश्वर और श्री चाला सोमेश्वर के मन्दिर पनगल नगर में जो नालगोन्डा की राजधानी का बनवाये। यह दोनों ही मन्दिर बड़े विशाल और सुन्दर ढंग के बने हुए हैं। नालगोन्डा मे जो किला, मन्दिर और मूर्तियां बनी हुई है। यह प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की महत्व पूर्ण प्रतीक है, और नालगोन्डा के प्राचीन इतिहास का स्मरण दिलाती है। भवानीगिरि की लम्बी, चौड़ी चट्टान और पद्म नायक द्वारा बनवाया हुआ सुन्दर किला इस स्थान की प्राचीन यादगारों में से है। इसके अतिरिक्त पिलाला मारी और नागुल पहाड़ भी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के दो सुन्दर स्थान हैं।

नालगोन्डा जिले में हुलयक स्थान पर एक बड़ा जैन मन्दिर बना हुआ है। इसके समीप ही यादगिरि पहाड़ पर एक शिव जी का सुन्दर मन्दिर नरसिंह स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हैं। एक दूसरा सुन्दर मन्दिर मूसी और कृष्णा नदी के संगम पर अगेश्थवरा नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर खुदाई करने पर पुरातत्व विभाग द्वारा बहुत सी आश्चर्यजनक वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। पिलालामारी सूर्य वंश के समीप एक प्रसिद्ध गाँव है। जोकि तेलगू के प्रसिद्ध कवि वीर भद्र जी का जन्म स्थान भी है। इसी के समीप एक बड़ा प्राचीन प्रसिद्ध मन्दिर बना हुआ है कहते हैं कि काकतीय वंश के राजाओं ने यहाँ बड़े सुन्दर मन्दिर और इमारतें बनवाई थी। इन इमारतों मे कुछ पत्थर लगे हुए है। जिनमें गनपति राजा का नाम और संवत् लिखा हुआ है। कई प्रकार की वास्तुकलाओं के मन्दिर इस स्थान पर मिलते हैं। एक मन्दिर में राजा रुद्र देव और उसके समय का संवत् भी खुदा हुआ है।

वाद्यपल्ली स्थान इस जिले में बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ नरसीमा स्वामी के मन्दिर में ११ प्रकार की ज्वालायें जलती है। इन सब में बीच की ज्वाला बड़ी तेजी के साथ जलती है। इस संबंध में एक कथा प्रचलित है, यह कि जो बीच की ज्वाला जलती है वह सीधी देवता के नाक में से होकर निकलती है। इसी के समीप एक दूसरा मन्दिर अगस्तेश्वर

में विशेष उन्नति की। मदूरा में एक मन्दिर ६ बड़े २ स्तूनों से घिरा हुआ है। इनमें एक स्तून की लम्बाई १५२ फीट है। इस इमारत में ६० फीट लम्बे पत्थर लगाये गये हैं। इन मन्दिरों की जो दीवारें बनी है इनमें प्राचीन देवताओं की मूर्तियाँ पत्थरों में खोदी गई है। इसके अतिरिक्त मन्दिर की दीवार और छत के पत्थरों में हाथी, शेर, घोड़े, बैल और मोरों आदि की मूर्तियां भी खोदी गई है। इन मूर्तियों को देखकर उस समय की संस्कृति और सभ्यता का भली भांति अनुमान लगता है। स्त्रियों की जो मूर्तियां पत्थरों में खोदकर बनाई गई है, वह हीरे और जवाहरात से जड़े आभूषण पहने हुए दिखाई गयी हैं, इनसे यह अनुमान लगता है कि उन समय स्त्रियां रंगीन कपड़े और सुन्दर २ आभूषण पहनती थीं। मदूरा का सबसे सुन्दर महल संसार की सुन्दर और विशाल इमारतों में से एक है। इस महल में जो हाल बना है उसमे १००० स्तम्भ बने हुये है। इस महल का नाम त्रिमाला नामक महल है। यह मद्रास प्रदेश का सबसे सुन्दर स्थान है।

इसी प्रकार मद्रास राज्य में मदूरा जिले में दूसरा सबसे सुन्दर स्थान वसन्ता हाल है। इसकी लम्बाई ३३३ फीट है। इसको देखने से पता लगता है कि उस समय की कला और संस्कृति कितनी उच्च कोटि की होगी और जो इमारतें और मन्दिर बनाये गये हैं। उनके बनाने वाले कारीगर वास्तुकला में कितने निपुण और Expert होंगे। इन इमारतों के अतिरिक्त मदूरा जिले में ही वैगाई नदी पर बड़े सुन्दर और रमणीक घाट बने हुये हैं। सैकड़ों साल इन घाटों को बने हुए हो गये, किन्तु उनके सौन्दर्य और मजबूती में अब भी कोई अन्तर दिखाई नही पड़ता। वास्तव में यह समय दक्षिण भारत में एक सुनहरा युग रहा होगा जबकि स्त्रियाँ इतने सुन्दर वस्त्र और आभूषण धारण करती थी और पुरुष इतने बड़े २ आलीशान मकानों में रहते थे। उनके पूजा पाठ करने के स्थान कितने सुन्दर और रमणीक थे जिनका सौन्दर्य सैकड़ों वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् भी बाकी है। कहा जाता है कि उस समय विश्वनाथ नाम के एक राजा ने जो नायक वंश से संबंध रखता था मद्रास प्रदेश में इतनी इमारतें और मन्दिर बनवाये कि समस्त भारत में कहीं नहीं बने। पत्थर तराशने की कला उस समय इतने उच्च कोटि की थी कि दूर २ से लोग [illegible] को देखने आते थे आज भी इतनी बड़ी और विशाल इमारतों को देखकर लोग [illegible] रह जाते हैं कि किस प्रकार यह इमारतें बनाई गई होंगी जबकि [illegible] यंत्रों की कमी थी। उस समय इतने बड़े २ पत्थर जिनका बोझा हजारों मन था [illegible] ऊपर छत पर रक्खे गये होंगे।

नालगोन्डा :—नीलगिरि पहाड़ पर प्राचीन नगरों में से एक है। [illegible] संस्कृत का शब्द है। इसके [illegible] में पौराणिक [illegible] है कि यहाँ बनवास के समय में रामचन्द्र सीता और लक्ष्मण के साथ लगातार १० वर्ष तक [illegible]। अ

वर्ष में कई मेले लगते हैं ।

जोनावाडा नैल्योर क्षेत्र में जोनावाड़ा स्थान श्री कामेक्षी मन्दिर के नाम से है। इस स्थान के सम्बन्ध में महाभारत की एक कथा प्रचलित है जिसका स्कन्ध पुराण से जोड़ा जाता है। कथा यह है कि महाभारत के रचियता ने ान पर आने आपको पवित्र करने के लिये यज्ञ किया था। इसी मन्दिर के एक दूसरा मन्दिर मन्नार पोलर में मन्नारु कृष्ण स्वामी का है। कहते हैं कि इ स्थान है जहाँ भगवान कृष्ण और जामवन्त के बीच युद्ध हुआ था। इस सम्बन्ध मे एक कथा प्रचलित है कि सत्यभामा और जामवन्ती नाम की दो भगवान कृष्ण की दासी के रूप में बनकर रहीं थीं।

शिवाजी :— आन्ध्र प्रदेश के निजामाबाद जिले मे भी कई प्राचीन काल के । एक मन्दिर कन्टेश्वर-महाराज का और दूसरा हनूमान का है। यहाँ पर यह र पर प्रसिद्ध है कि इन दोनों मन्दिरों मे छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु ने ों तक तपस्या की थी।

ी काकुलम :— आन्ध्र प्रदेश में एक और क्षेत्र श्री काकुलम के नाम से । कहते हैं कि यह क्षेत्र कलिङ्ग राजाओं के आधीन था और पाचवी शताब्दी ्वी शताब्दी तक यह क्षेत्र उन्ही के अधिकार में रहा। इस क्षेत्र की राजधानी लिगनगर थी जो अब श्री काकुलम जिले में मुखाली नगर के नाम से प्रसिद्ध लम के संबंध में कहा जाता है कि यहां पर विष्णु भगवान ने कछुये का र अवतार लिया था। यहां पर एक प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें कई पानी नी है। इसके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि अगर किसी भी मुर्दे की रर मे फेंकी जाये तो कछुये का रूप धारण कर लेती हैं। इस मंदिर र कुछ राजाओं के नाम भी खुदे हुए हैं जिन में विमलादत्त, राज ्क्य बंश के राजाओं के नाम हैं। इनके समय मे तेलगू भाषा मे नानय एक विद्वान ने महाभारत का अनुवाद किया था। इसी मंदिर मे एक लक्षमण और सीता की मूर्तियाँ बनी हैं और तेलगू भाषा में उनके नाम इस क्षेत्र में तेलगू भाषा की उन्नति शिखर पर थी। तेलगू भाषा कई धार्मिक पुस्तकें लिखी गई।

क्षेत्र में एक दूसरा मन्दिर सूर्य नारायण स्वामी का असबिली ा है और इसी के समीप एक सोमेश्वर स्वामी का मन्दिर दो

मे विशेष उन्नति की। मथूरा में एक मन्दिर ६ बड़े २ स्तूनों से घिरा हुआ है। इनमें एक स्तून की लम्बाई १५२ फीट है। इस इमारत मे ६० फीट लम्बे पत्थर लगाये गये है। इन मन्दिरो की जो दीवारे बनी है इनमें प्राचीन देवताओं की मूर्तियाँ पत्थरों में खोदी गई है। इसके अतिरिक्त मन्दिर की दीवार और छत के पत्थरों में हाथी, शेर, घोड़े, बैल और मोरो आदि की मूर्तियां भी खोदी गई है। इन मूर्तियों को देखकर उस समय की संस्कृति और सभ्यता का भली भांति अनुमान लगता है। स्त्रियों की जो मूर्तियां पत्थरों में खोदकर बनाई गई है, वह हीरे और जवाहरात से जडे आभूषण पहने हुए दिखाई गयी है, इससे यह अनुमान लगता है कि उस समय स्त्रियां रंगीन कपड़े और सुन्दर २ आभूषण पहनती थीं। मदूरा का सबसे सुन्दर महल संसार की सुन्दर और विशाल इमारतो मे से एक है। इस महल मे जो हाल बना है उसमें १००० स्तम्भ बने हुये हैं। इस महल का नाम त्रिमाला नामक महल है। यह मद्रास प्रदेश का सबसे सुन्दर स्थान है।

इसी प्रकार मद्रास राज्य में मदूरा जिले मे दूसरा सबसे सुन्दर स्थान वसन्ता हाल है। इसकी लम्बाई ३३३ फीट है। इसको देखने से पता लगता है कि उस समय की कला और संस्कृति कितनी उच्च कोटि की होगी और जो इमारतें और मन्दिर बनाये गये हैं। उनके बनाने वाले कारीगर वास्तुकला में कितने निपुण और Expert होगे। इन इमारतों के अतिरिक्त मदूरा जिले में ही वैगाई नदी पर बड़े सुन्दर और रमणीक घाट बने हुये है। सैकड़ों साल इन घाटों को बने हुए हो गये, किन्तु उनके सौन्दर्य और मजबूती में अब भी कोई अन्तर दिखाई नही पड़ता। वास्तव मे यह समय दक्षिण भारत में एक सुनहरा युग रहा होगा जबकि स्त्रियाँ इतने सुन्दर वस्त्र और आभूषण धारण करती थीं और पुरुष इतने बड़े २ आलीशान मकानो मे रहते थे। उनके पूजा पाठ करने के स्थान कितने सुन्दर और रमणीक थे जिनका सौन्दर्य सैकड़ों वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् भी बाकी है। कहा जाता है कि उस समय विश्वनाथ नाम के एक राजा ने जो नायक वंश से संबंध रखता था मद्रास प्रदेश मे इतनी इमारतें और मन्दिर बनवाये कि समस्त भारत में कहीं नही बने। पत्थर तराशने की कला उस समय इतने उच्च कोटि की थी कि दूर २ से लोग उन [illegible] को देखने आते थे आज भी इतनी बडी और विशाल इमारतों को देखकर लोग [illegible] रह जाते हैं कि किस प्रकार यह इमारतें बनाई गई होगी जबकि [illegible] यंत्रों की कमी थी। उस समय इतने बड़े २ पत्थर जिनका बोझा हजारों मन था [illegible] ऊपर छत पर रक्खे गये होगे।

नालगोन्डा :—नीलगिरि पहाड़ पर प्राचीन नगरों में से एक है। नालगोन्डा संस्कृत का शब्द है [illegible] यह है कि यहाँ [illegible] मे रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण के साथ लगातार १० वर्ष तक विचरते [illegible] । [illegible]

स्वामी का है।

यादगिरि गुफा :—सबसे प्रसिद्ध मन्दिर इस जिले में श्री लक्ष्मी नरसीमा स्वामी का यादगिरि गुफा में है। यह मन्दिर एक पहाड़ी पर बना हुआ है। इस मन्दिर की यात्रा करने के लिए इतने यात्री आते हैं कि १४० धर्मशालायें उनके ठहरने के लिये बनायी गईं। सबसे भारी मेला यहां रथ यात्रा के समय होता है जो मार्च के महीने में आरंभ होता है।

पानागल :—मन्दिर भी इसी जिले में नालगोंडा से केवल २ मील दूर है। कहते हैं कि काकतीय वंश के समय में यह मन्दिर बना था। इस मन्दिर की वास्तुकला इतनी सुन्दर है कि लोगों को आश्चर्य होता है कि उस समय के कलाकार कहां से बुलाये गये होंगे। इसी के समीप एक जंगल में एक गुफा के भीतर महापल्ली स्थान पर एक मन्दिर बना हुआ है जो बहुत प्राचीन है। इसमें संस्कृत भाषा में कुछ श्लोक भी लिखे हुए है।

आंध्र प्रदेश में आजकल जो नैल्योर तालुका है। वह भी प्राचीन कला, संस्कृति एवं सभ्यता का केन्द्र रहा है, इस प्रदेश में जो नैल्योर के नाम से प्रसिद्ध है। तीसरी शताब्दी तक पल्लव राजाओं का अधिपत्य रहा। फिर ६११ शताब्दी में चालुक्य वंश का उदय हुआ। चालुक्य वंश के समय में नैल्योर में तेलगू भाषा की बड़ी उन्नति हुई। पुलकेशी राजा ने अपने समय में बड़ी २ सुन्दर ईमारतें और मन्दिर बनवाये। फिर यह क्षेत्र काकतीय वंश के प्रसिद्ध राजा प्रताप रूद्र ने इस क्षेत्र में कला और साहित्य की बड़ी उन्नति की। यहाँ पर एक छोटा सा मन्दिर है जो इरगुलामा के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मन्दिर में जिस प्रकार के पत्थर काटकर लगाये गये हैं और उन पर जो मीनाकारी की गई है। वह वास्तव में अद्वितीय है। पुरातत्व विभाग के द्वारा इस मन्दिर के समीप जो खुदाई हुई है .उससे ज्ञात हुआ है कि यह मंदिर ६-७ शताब्दी मे बना है।

उदयगिरि :—नैल्योर क्षेत्र में उदय गिरि का किला बहुत प्रसिद्ध है यह किला किसी समय में दक्षिण में सबसे प्रसिद्ध और बड़ा किला था इस किले मे प्राचीन हिन्दू राजाओं ने सुरक्षा के बड़े २ साधन जुटाये थे दूसरा प्रसिद्ध मन्दिर पन्नार नदी के भगवान कृष्ण का है। यह मन्दिर ऐसा विचित्र ढंग का बना है कि इसकी छत का रंग शीशा जैसा मालूम पड़ता है प्रत्येक ओर से देखने से उसका रंग सामने का ही दिखाई पड़ता है। इस की

मे एक वर्ष में कई मेले लगते है।

जोनावाडा नैल्योर क्षेत्र में जोनावाड़ा स्थान श्री कामेक्षी मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान के सम्बन्ध में महाभारत की एक कथा प्रचलित है जिसका संबंध स्कन्ध पुराण से जोड़ा जाता है। कथा यह है कि महाभारत के रचियता ने इसी स्थान पर अपने आपको पवित्र करने के लिये यज्ञ किया था। इसी मन्दिर के समीप एक दूसरा मन्दिर मन्नार पोलर में मन्नार कृष्णा स्वामी का है। कहते हैं कि यह वह स्थान है जहाँ भगवान कृष्ण और जामवन्त के बीच युद्ध हुआ था। इस स्थान के सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है कि सत्यभामा और जामवन्ती नाम की दो सेविकायें भगवान कृष्ण की दासी के रूप में बनकर रही थी।

शिवाजी :— आन्ध्र प्रदेश के निजामाबाद जिले में भी कई प्राचीन काल के मन्दिर है। एक मन्दिर कन्टेश्वर-महाराज का और दूसरा हनुमान का है। यहाँ पर यह आम तौर पर प्रसिद्ध है कि इन दोनों मन्दिरों में छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु ने बहुत दिनो तक तपस्या की थी।

श्री काकुलम :— आन्ध्र प्रदेश में एक और क्षेत्र श्री काकुलम के नाम से प्रसिद्ध है। कहते है कि यह क्षेत्र कलिङ्ग राजाओं के आधीन था और पांचवी शताब्दी से लेकर १५वीं शताब्दी तक यह क्षेत्र उन्ही के अधिकार में रहा। इस क्षेत्र की राजधानी उस समय कलिंगनगर थी जो अब श्री काकुलम जिले मे मुखाली नगर के नाम से प्रसिद्ध है। श्री काकुलम के संबंध में कहा जाता है कि यहा पर विष्णु भगवान ने कछुये का रूप धारण कर अवतार लिया था। यहां पर एक प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें कई पानी की धारायें बहती हैं। इसके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि अगर किसी भी मुर्दे की हड्डियां इस मंदिर मे फेंकी जाये तो कछुये का रूप धारण कर लेती है। इस मंदिर में कई स्थानों पर कुछ राजाओं के नाम भी खुदे हुए हैं जिन में विमलादत्त, राज राजा आदि चालुक्य वंश के राजाओं के नाम हैं। इनके समय मे तेलगू भाषा में नानय नाम के तेलगू के एक विद्वान ने महाभारत का अनुवाद किया था। इसी मंदिर मे एक स्तम्भ पर राम लक्ष्मण और सीता की मूर्तियाँ बनी है और तेलगू भाषा में उनके नाम लिखे है। इस समय इस क्षेत्र में तेलगू भाषा की उन्नति शिखर पर थी। तेलगू भाषा मे इस समय और भी कई धार्मिक पुस्तकें लिखी गई।

अर्सावली इसी क्षेत्र में एक दूसरा मन्दिर सूर्य नारायण स्वामी का अर्सावली नाम के स्थान पर बना है और इसी के समीप एक सोमेश्वर स्वामी का मन्दिर दा

[illegible] बना हुआ है। जिसकी कला बहुत प्राचीन है। कहते हैं कि यह मन्दिर [illegible] राजाओं ने ही बनवाया था। मुखलिंगम् मन्दिर के [illegible] पुराना भी यह [illegible] मन्दिर है, जिसके अनुसार यह मन्दिर कलिंग [illegible] ने बनवाया था। इस मन्दिर की कला और मूर्तियां ऐसी बनाई गई हैं जिनमें [illegible] और [illegible] की सम्पूर्ण कथा प्रदर्शित हो जाती है।

सिंहाचलम् :— [illegible] वंश के राजाओं का दक्षिण भारत में दूसरा मुख्य [illegible] स्थान है सिंहाचलम्। सिंहाचलम् में कलिंग राजाओं के समय कला की [illegible] उन्नति हुई। उन्होंने इस क्षेत्र में कई बड़े २ मन्दिर और तीर्थ स्थान बनवाये। कुछ दिनों तक यह क्षेत्र कलिंग वंश के राजाओं के पश्चात् चालुक्य वंश के अधिकार में आया। इनका सबसे प्रभावशाली राजा जिसने इस क्षेत्र में प्राचीन हिन्दू कला और संस्कृति की उन्नति की वह था कुब्जविष्णुवर्द्धन। फिर चोल वंश के राजाओं ने [illegible] बार इस क्षेत्र में आक्रमण किये। १२१३ ई० में यह प्रदेश काकतीय वंश के अधिकार में आ गया और प्रसिद्ध काकतीय राजा गनपति देव ने इस क्षेत्र मे तेलगू भाषा की बड़ी उन्नति की। उसके दरबार में तेलगू भाषा के कई प्रसिद्ध विद्वान, कवि और नाटककार थे। काकतीय वंश के पश्चात कुछ समय तक यह देश कोन्डा वीडू राज्य में सम्मिलित रहा।

शिम्भाचलम :—इस क्षेत्र में शिम्भाचलम प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। जहां विष्णु भगवान कई रूप में दिखाये गये हैं। इस मन्दिर में बड़ी सुन्दर प्रकार की वास्तुकला का प्रदर्शन किया गया है। मन्दिर के ऊपर का भाग जिस प्रकार से बनाया गया है वह वास्तव में इस क्षेत्र की प्राचीन कला का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। इस मन्दिर के एक दरवाजे का नाम हनुमान दरवाजा है। यह दरवाजा प्राचीन ढंग की कला पूर्ण मीनाकारी से भरपूर है। इस मन्दिर के सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है वह यह है कि इस मन्दिर को हरिणकश्यप जो कि प्रह्लाद के पिता थे, ने बनवाया था। प्रह्लाद जो कि भगवान का भक्त था उसे हरिणकश्यप ने उस की भक्ति से क्रोधित होकर इस पहाड़ की चोटी पर से समुद्र में फेंका था। नरसीमा ने प्रह्लाद को बचाने के लिये इस पहाड़ की चोटी के नीचे से प्रह्लाद को गोद मे ले लिया था। कुछ कहते हैं उसके पश्चात् प्रह्लाद ने इसी स्थान पर यह मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिर में बहुत से खम्भे हैं। एक खम्भा मुख्य मंडप में कप्पम स्तम्भ के नाम से है। इस स्तम्भ के संबंध मे लोगों की धारणा है कि इस स्तम्भ के छूने से जानवरों की समस्त बीमारियाँ दूर होती और यदि स्त्रियां इस स्तम्भ को छू लें तो अवश्य इस स्तम्भ के

छो से उनके संतान उत्पन्न होती है। इस मन्दिर की मूर्ति नरसामा चन्दनकी लकड़ी से ढकी हुई रहती है। कहते हैं यह मूर्ति हरिणाकश्यप से क्रोधित होकर विकराल रूप धारण करके प्रकट हुई थी। यहाँ बैशाखी के दिन प्रत्येक वर्ष बडा भारी मेला लगता हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मन्दिर कलिंग वंश के राजाओं द्वारा बनवाया गया क्योंकि इस मन्दिर में कलिंग वंश के राजाओ के नाम खुदे हुए है। इस मन्दिर के अतिरिक्त और भी कई मन्दिर यहाँ बने हुए है जो चोल वंश के राजाओं के समय के है।

विशाखापटनम् हिन्दू धर्म के अनुसार एक नक्षत्र का नाम है। इसके संबंध में जो कथा प्रचलित हैं वह यह है कि आंध्र वंश के राजाओं ने यहा पर बाराणसी जाते समय विश्राम किया था। उन्होंने इस स्थान के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर वेंशाखा देवता के नाम पर एक मन्दिर बनवाया। उसी समय से इस स्थान का नाम विशाखापटनम् पड़ गया। अब विशाखापटनम् एक बडा ही सुन्दर बन्दरगाह है। विशाखापटनम् क्षेत्र में ही एक अनन्त गिरि स्थान है जहाँ अनन्तगिरि घाट भी है यह स्थान अराकू घाटी मे स्थित है। इस घाटी के लोगो की नृत्य कला और लोक गीत सदैव से प्रसिद्ध चले आते है। इसी के समीप रामतीर्थम् का वह स्थान है जहाँ रामचन्द्र जी का प्रसिद्ध मंदिर है। इस स्थान पर चालुक्य वंश के राजाओं ने और भी कई मंदिर बनवाये है जो चालुक्य वंश के समय की कला और संस्कृति के प्रतीक है।

विशाखापटनम् जिले में ही भीम मुनि पटनम् एक प्रसिद्ध स्थान है। यह चित्त बिगाल नदी के किनारे बडा ही सुन्दर और रमणीक स्थान है। दूसरा स्थान इसी क्षेत्र में संक्राम नाम है। यह स्थान बोजन्ना कोन्डा के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस पर एक बुद्ध स्तूप बना हुआ है जिसके संबंध में कहा जाता है कि अशोक के समय में यह स्तूप बना है।

बोरा की गुफायें इस क्षेत्र की महत्व पूर्ण सुन्दर स्थानों में से है। यह गुफाये अन्दर से ६ मील लम्बी हैं। इस गुफा के भीतर एक झरना बहता है जो अन्दर ही कहीं विलीन हो जाता है। इन गुफाओं को दक्षिण भारत में बहुत ही पवित्र माना जाता है और शिवरात्री के दिन एक बहुत बड़ा मेला होता है जिसमे समस्त भारत से सहस्त्रों की संख्या में यात्री आते हैं।

वारंगल :—विशाखापटनम् के पश्चात् दक्षिण भारत में चालुक्य वंश का प्रसिद्ध केन्द्र वारंगल रहा है। वारंगल में आज भी चालुक्य वंश के समय की प्रसिद्ध इमारतें किला और मंदिर मिलते हैं कहते हैं कि गनपति देव नाम के

इस प्रकार की कला दक्षिण में वास्तव में अद्वितीय है ।

वारंगल प्रदेश में ही दूसरा प्रसिद्ध स्थान रामप्पा और लंकावरम् का है । अब इन स्थानों पर बड़ी सुन्दर झीलें बनी हुई हैं। चालुक्य वंश के राजाओं ने इन स्थानों में बड़े २ सुन्दर मंदिर बनाये हुए हैं।

पश्चिमी गोदावरी क्षेत्र में श्री वेंलाकेन्ट सुरा स्वामी का बड़ा प्रसिद्ध मंदिर है। इसके संबंध में एक पौराणिक कथा प्रसिद्ध है और वह यह कि वेंनेकेट्श्वर भगवान देवताओं में झगड़ा करके द्वारका लिमाली में चले आये जहाँ पर वह कुछ समय तक तपस्या करते रहे। उनके चले आने के कुछ समय पश्चात् श्री मंगत त्यार द्वारका लिमाली में पधारे और भगवान वेंकटेश्वर स्वामी को फिर से ले गये। इस मंदिर में प्रत्येक वर्ष अप्रैल और मई के महीने में एक बड़ा मेला लगता है जिसमें दक्षिण भारत के कोने २ से सैकड़ों की संख्या में यात्री पधारते हैं। दूसरा प्रसिद्ध मंदिर इसी जिले में अजन्ता स्थान पर श्री रामेश्वर स्वामी का है। इस मंदिर के संबंध में पौराणिक कथा इस प्रकार है कि भगवान शंकर ने अपने भक्तों को प्रसन्न करने के लिये अपने आप को एक नृत्य करने वाली लड़की के रूप में प्रकट किया जिसको वहाँ की भाषा में कलहस्ती सतकम् के नाम से कहा जाता है। इस मंदिर के समीप कई गुफायें और कोलीरी नाम की एक बड़ी झील है जिनका प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिये प्रत्येक वर्ष सैकड़ों की संख्या में यात्री आते हैं।

साहित्य की उन्नति :—दक्षिण भारत में चोल, चालुक्य, पान्ड्या, काकतीय और कलिंग वंश के समय जितनी उन्नति कला साहित्य संस्कृत और वास्तुकला में हुई उतनी उत्तर भारत में नहीं हुई। लगभग सभी राजाओं ने संस्कृत, तेलगू, तामिल और अन्य दक्षिण की भाषाओं के उच्चकोटि के साहित्यकार, विद्वान और कवियों को शरण दी। चालुक्य राजपूतों में सभी राजे साहित्य प्रेमी थे। इसमें जयसिंह, सिद्धराज के नाम विशेषतौर से उल्लेखनीय हैं। दक्षिण के राजाओं में चोल, चालुक्य और काकतीय सभी सब साम्प्रदायों को बड़ी उदारता की दृष्टि से देखते थे। इस युग में कविता के **अतिरिक्त नाटक आदि भी लिखे गये प्रसिद्ध नाटक प्रबोध चन्द्रोदय कीतिवर्मन दस म २ म लिखा गया था बहुत स**

[illegible] और [illegible] भी इन राजाओं के दरबार में रहते थे जो लोक [illegible] के लिए अपना जीवन अर्पित कर देते थे । चोल वंश के शासन काल में बहुत [illegible] [illegible] विद्वान थे जिन्होंने [illegible] दीपिका नाम का एक ग्रंथ लिखा था । यह चारों वेद और [illegible] शास्त्रों के विद्वान थे । इन्होंने वेदों के [illegible] भी किया । [illegible] [illegible] में निपुण थे । दरबार में इनका बड़ा सम्मान होता था । इसी युग में श्रीमद् भागवत पुराण की रचना भी दक्षिण के एक विद्वान ने की थी ।

संगीत व नृत्य कला :—इस युग में संगीत और नृत्य कला की भी बड़ी उन्नति हुई । इस युग में चालुक्य नरेश जगदीश मल्ल के समय में संगीत में चूड़ामणि नाम का प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा गया । इसी प्रकार देवगिरि के यादव राजाओं ने जिनमें राजा सिंहण का नाम अति प्रसिद्ध है संगीत और नृत्य के ग्रंथों की रचनायें की । एक ग्रंथ को संगीत रत्नाकर कहते हैं जो इसी राजा ने लिखा । यह ग्रंथ दक्षिण भारत में अब भी बहुत लोकप्रिय है । इस ग्रंथ का अनुवाद भारत की कई भाषाओं में हो चुका है । कहते हैं कि मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने संस्कृत भाषा में इस ग्रंथ में टीका लिखी थी । इसी प्रकार श्री जय सेनापति ने नृत्य रत्नावली और हरपाल देव ने संगीत सुधाकर नाम के ग्रंथों की रचनायें की । जय सेनापति काकतीय वंश के महाराजा गणपति के सेनापति थे और श्री हरपाल देव चालुक्य वंश के एक प्रसिद्ध राजा थे जिनको कला संगीत, नृत्य और साहित्य में अटूट प्रेम था । काव्य नाटक कथा और साहित्य मीमांसा के अतिरिक्त और भी कई प्रकार की पुस्तकें लिखी गई, जैसे दर्शन साहित्य जिनमें रामानुज आचार्य और कुमारिल भट्ट के ग्रंथ विशेषतयः प्रसिद्ध है । स्वामी शंकराचार्य ने अद्वैत वाद का प्रचार करके दक्षिण में जैन और बौद्ध धर्म की जड़ों को ही हिला दिया । ब्रह्म सूर्य और उपनिषदो के भी कई अनुवाद इसी युग में हुए । शक्तिभद्र ने आश्चर्य चूड़ामणि नाम का एक प्रसिद्ध नाटक भी इसी युग में लिखा संस्कृत भाषा, राजदरबार और विद्वानों में प्रचलित थी । अधिकतर शिला लेख संस्कृत भाषा में ही मिलते है । १२वीं शताब्दी से यहाँ की प्राकृतिक भाषाओं की वृद्धि हुई जिनमें तेलगू, तामिल, कन्नड़ आदि भाषायें थीं किंतु इन भाषाओं में भी संस्कृत के अनेकों शब्द प्रयोग होते थे और अब भी होते है । कहते हैं कि इन सब भाषाओं की जननी तामिल थी जो संस्कृत पर आश्रित थी तेलगू कनाडी भाषाओं म संस्कृत के शब्द तामिल से भी अधिक है कहीं २ पर

दक्षिण भारत में मराठी भाषा भी प्रचलित हुई ।

इस युग के मंदिरों और इमारतों की कलायें विशेषतया दो प्रकार की है एक तो वह जो पत्थरों को काट कर नाना प्रकार की मूर्तियाँ आदि खोदकर बनाई गयी है दूसरे वे जो इमारत पत्थरों के बनाई गयी है । अजंता और अलोरा की कला और कारीगरी भिन्न प्रकार की है ।

मुस्लिम काल

दक्षिण में उत्तर की अपेक्षा मुस्लिम राज्य दूसरे प्रकार से स्थापित हुआ। चौदहवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक कई वंश के मुसलमानों ने दक्षिण में प्रमुख राज्य स्थापित किये, जिनमें खिलजी, बहमनी, कुतुबशाही, मुगल, आसफजाही और टीपू सुल्तान आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। दक्षिण के मुस्लिम राज्यों में यह विशेष बात रही कि वे अपने पड़ोसी हिंदुओं से मिलकर रहे और दक्षिण की संस्कृति, सभ्यता, भाषा और धर्म का मुसलमान राजाओं ने इस प्रकार विध्वंस नहीं किया जैसा उत्तर भारत में किया। इसके कई कारण थे। १, दक्षिण भारत में जब तक कि मुसलमानों ने वहाँ के हिंदुओं की सहायता न ली उनके पैर न जम सके। २. उत्तर भारत में पठान, मुगल और अन्य मुसलमान बादशाह जो अफगानिस्तान तथा ईरान आदि से आये उन्हें यह आशा रहती थी कि किसी समय भी वे उन मुल्कों से सैनिक सहायता और हथियार मंगा सकते है, किंतु दक्षिण मे उनकी यह आशा टूट जाती थी। वह समझते थे कि इतने दूर देश में जहाँ उस समय आने जाने के अधिक साधन भी उपलब्ध न थे वहाँ की स्थानीय जनता के आश्रय और सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था।

३. दक्षिण भारत की संस्कृति और कला सभ्यता और भाषा पर वहाँ के लोगों की इतनी अटूट श्रद्धा थी कि उसे कोई भी विदेशी शासक मिटा न सका और न उसके धर्म का परिवर्तित करने का मुस्लिम बादशाहों ने कोशिश ही की।

४. औरंगजेब जो धर्म के पक्षपात के लिये समस्त भारत में प्रसिद्ध था। दक्षिण के लोगों ने उसके पैर वहाँ नहीं जमने दिये। वह दक्षिण में आकर ऐसा फंसा कि उसे मृत्यु ने ही छुटकारा दिलाया। उसने समस्त दक्षिण को जीतने के लिए अपनी सारी शक्ति, धन और सेना जुटा दी किंतु फिर भी उसे निराशा का ही मुँह देखना पड़ा और उसके मरने के पश्चात् उसके नियुक्त किये गये गवर्नर जनरल निजामउलमुल्क ने अपने को मुगल राज्य से स्वतंत्र घोषित कर दिया।

नकन्डा किले के भीतर बना हुआ मन्दिर
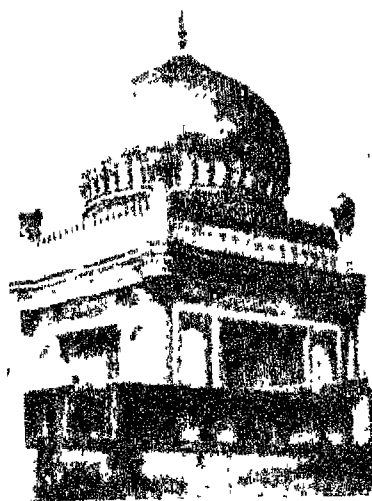
। के प्रसिद्ध सुलतान कुतुबशाह का मकबरा

न्डा का प्रसिद्ध किला आंध्र प्रदेश

किले के पीछे वह पेड़ की गुफा जहां प्राय
और विशेषतया पंडारी लोग छिपे रहते थे
और लूटमार करते थे।

दक्षिण भारत में सर्व प्रथम खिलजी वंश के मुसलमानों का आगमन हुआ। मुहम्मद तुगलक ने दक्षिण के प्रसिद्ध स्थान देवगिरि को दौलता बाद के नाम से अपने राज्य की राजधानी बनाया और दिल्ली के समस्त नागरिकों को देवगिरि अपने आदेश द्वारा ले गया। दूसरा आक्रमण विजयनगर के राज्य पर हुआ। यह आक्रमण अलाउद्दीन के एक सिपाही मलिक काफूर ने किया। इस आक्रमण में दक्षिण के राजपूत राजाओं को [illegible] हुई और उन्होंने विजय नगर राज्य की स्थापना की। १३७० ई० में यह राज्य स्थापित हुआ और लगभग दो शताब्दियों तक रहा। इस राज्य के सबसे प्रभावशाली और प्रसिद्ध राजा कृष्ण देव राय हुये हैं। इनके समय में एक पुर्तगीज यात्री आया था जिसका नाम 'पेज' था। इसने उस समय के विजय नगर का हाल वर्णन किया है। उसने लिखा है विजय नगर राज में बड़े २ विद्वान पंडित और राजनीतिज्ञ थे। विदेशियों का बड़ा आदर होता था। धार्मिक कार्यों के लिये राजा की ओर से बड़े २ दान दिये जाते थे। कहते हैं कि विजय नगर ६० मील के घेरे में बना हुआ था। इसकी पुष्टि 'निकोलोकोन्टी' नाम के इटली के एक यात्री ने भी की है। एक मुसलमान यात्री अब्दुल रज्जाक जो ईरान से आया था उसने लिखा है कि विजय नगर में हीरा और जवाहरात का व्यवसाय होता है। स्त्रियाँ और पुरुष भी हीरे और जवाहरात के आभूषण पह[illegible] संसार का एक प्रसिद्ध सोना, चाँदी हीरा [illegible]

विजय नगर की कला और साहित्य : [illegible] उस समय विजय नगर राज में तेलगु, तामिल [illegible] यौवन पर थी। प्रसिद्ध वेद भाष्यकार [illegible] विजय नगर राज्य में राज दरबार के पंडित थे। [illegible] और साहित्यकार था। उसकी राज्य सभा [illegible] दार्शनिक [illegible] और ज्योतिषी रहते थे। उसका जनता में बड़ा [illegible] ने तेलगु भाषा में एक सुन्दर ग्रन्थ आमुक्तमाल्यदा [illegible] यह ग्रन्थ उस समय की राजनीति और शासन पद्धति से भरपूर है। [illegible] के राज दरबार के प्रकार विजयनगर के महाराज कृष्ण देव राय के [illegible] थे जो अष्ट दिग्गज कहलाये थे।

देवगिरि और वारंगल मुसलमान [illegible] ही दक्षिण में खिलजी वंश का आधिपत्य आरम्भ हुआ, किन्तु [illegible] देहली से बढ़कर दक्षिण पर आधिपत्य करने में [illegible] रहे। परिणाम यह हुआ कि बहमनी वंश के एक मुसलमान सरदार ने [illegible] बहमनी था

१३४८ ई० में एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया। यह राज्य लगभग १५० वर्ष तक चलता रहा। कुछ दिनों के पश्चात बहमनी राज्य ५ मुसलिम राज्यों में विभाजित हो गया। बहमनी वंश के समय दक्षिण भारत में कला और संस्कृति की उन्नति हुई। बहमनी राज्य में प्राचीन कला और संस्कृति का आदर और सम्मान किया जाता था। इस समय बड़ी २ इमारतें और सुन्दर २ स्थान दक्षिण भारत की वास्तुकला के आधार पर ही बनाये गये।

दक्षिण भारत में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय आंध्र प्रदेश के मदाकासिरा और हिंदुओं के क्षेत्रों में होयसाल राजाओं का राज्य था। इन राजाओं ने खिलजी राज्य से बचने के लिये अपने को विजय नगर राज्य में सम्मिलित कर लिया किंतु विजयनगर के छिन्न भिन्न हो जाने पर १६वीं शताब्दी में यह क्षेत्र जो अब अनन्तपुर के नाम से प्रसिद्ध है गोलकंडा के नवाब के अधिकार में आ गया। १६७७ ई० के पश्चात् इस क्षेत्र पर जब औरंगजेब का अधिकार हुआ तो छत्रपति शिवाजी ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया और बहुत समय तक यह क्षेत्र उनके अधिकार में रहा। १६८७ ई० में जब औरंगजेब ने इस क्षेत्र पर अधिकार किया तो उसने निजामउलमुल्क को इस क्षेत्र का सूबेदार नियुक्त किया किन्तु निजामउलमुल्क ने १७२३ में अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया और यह क्षेत्र सदैव के लिये मुगलों के हाथ से निकल गया। १७६१ में कुछ दिनों के लिए इस क्षेत्र में हैदरअली का अधिकार भी रहा। हैदरअली के पश्चात् टीपू सुलतान का अधिकार हुआ किन्तु १७९२ में निजाम ने अंग्रेजों की सहायता करके इस क्षेत्र को अपने राज्य में मिला लिया। शेष भाग अनन्तपुर जिले का ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हड़प कर लिया विजयनगर राज्य की तल्ली कोटा के युद्ध में पराजय हुई। उस समय वहाँ के राजा ने भागकर तेलू कोन्डा के स्थान में शरण ली। उस समय से तेलू कोन्डा कुछ समय तक विजयनगर की अगली राजधानी रही। १५७७ ई० में बीजापुर के नवाब ने इस क्षेत्र में घेरा डालकर अपनी सेनाओं को लगा दिया किंतु उसकी सेनायें असफल रहीं और सहस्रों की संख्या में उसके सिपाही मारे गये। फिर १५८९ ई० में गोलकुन्डा के नवाब ने इस पर घेरा डाला किंतु वह भी असफल रहा और जगदेव राय नाम के राजा ने उसे पराजित किया। १६५२ ई० तक यह राज्य स्थापित रहा। १७६२ ई० में पूरे १०० वर्ष बाद इस राज्य पर हैदरअली का अधिकार हुआ जो १७९९ ई० तक मैसूर राज्य का एक भाग बना रहा। इस क्षेत्र में मुस्लिम बादशाओं ने कई सुन्दर इमारतें बनवाई जिसमें सबसे अधिक सुन्दर इमारत शेरखाँ मस्जिद के नाम से है दूसरी इमारत जो वाबियात दरगाह है

नाम से प्रसिद्ध है। उसके संबंध में स्थानीय 'गाथा के अनुसार यह प्रसिद्ध है कि इस क्षेत्र का शहजादा संसार को छोड़कर फकीर बन गया उसके गुरु ने उसे एक पौधा दिया और उसे यह आदेश दिया कि वह यात्रा करते समय जिस स्थान पर भी ठहरे वहां लगा दे। शहजादे ने वह पौधा पेनूकोन्डा के स्थान पर ही लगाया। इसमें फूल खिलने लगे। वहां पर एक प्रसिद्ध दरगाह उस फकीर के अनुयायियों ने बनवाई। वह यही दरगाह है। इस दरगाह की वास्तुकला दक्षिण भारत के ढंग की है और यह विजयनगर की इमारतों के ढंग की इमारतों में से एक है। इसी प्रकार इसी क्षेत्र में एक बहुत विशाल किला बना हुआ है जो श्री रंगपटनम् के किले से मिलता जुलता है।

श्री रंगपटनम् के किले के संबंध में यह प्रसिद्ध है कि इसे हैदरअली से पूर्व मैसूर राज्य के राजाओं ने बनवाया था किंतु हैदरअली के अधिकार होने पर उन्होंने और उनके पश्चात् टीपू सुलतान ने इस किले को और अधिक विस्तार दिया। यह किला मैसूर राज्य में कावेरी नदी के किनारे प्रसिद्ध प्राचीन इमारतों में से है। किले के खंडहर नदी के किनारे बहुत दूर तक पाये जाते हैं। नगर में घुसते ही एक बहुत बड़ा फाटक है जिसको इसी किले का एक भाग बताया जाता है। किले के एक भाग में कुछ टूटी हुई इमारतें है। इनमें से एक इमारत की छत पर एक बहुत बड़ी तोप रक्खी हुई है जो अब छत को तोड़कर कुछ नीचे के भाग में धँस गई है। कहते हैं कि यह तोप टीपू सुलतान द्वारा अंग्रेजी आक्रमण का मुकाबला करने के लिये लगाई गई थी तब से अब तक उसी दशा में लगी हुई है।

कादरी :—अनंतपुर जिले में ही दूसरा स्थान कादरी है। इस स्थान पर मुस्लिम बादशाहों द्वारा कई सुन्दर इमारतें बनवाई गईं। इन इमारतों में बहुत से मकबरे और मस्जिदें भी सम्मिलित है। यह इमारतें और स्थान भारत सरकार द्वारा दर्शकों के लिये सुरक्षित स्थान घोषित कर दिये गये हैं। इसके चारों तरफ खंडहरों के रूप में किले की दीवारें दिखाई देती हैं। वे भी प्रायः उसी समय की बनी हुई हैं।

१३२४ ई० में अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओं ने आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले पर आक्रमण किया किन्तु कुछ ही समय में यह जिला उसके हाथ से निकल गया। १५४६ ई० में यह जिला गोलकंडा के नवाब के अधिकार में आ गया किंतु इस जिले का कुछ भाग नवाब अर्कीट ने अपने अधिकार में कर लिया। नवाब अर्कीट ने कुछ ही दिनों में गोलकंडा पर भी विजय प्राप्त कर ली किन्तु फिर कुछ

दिनों पश्चात् इस क्षेत्र पर हैदरअली ने अपना अधिकार कर लिया और फिर टीपू सुलतान के समय तक यह क्षेत्र उसके अधिकार में रहा।

दूसरा स्थान चन्द्र गिरि जो इसी के समीप है १६४६ ई० में गोलकुंडा के राजा के अधिकार में आया किन्तु १७५८ में इस स्थान पर कर्नाटिक के नवाब के भाई अब्दुलवहाब खां ने अधिकार कर लिया। फिर १७८२ ई० में चन्द्रगिरि हैदरअली के अधिकार में आ गया और सन् १७९२ ई० तक यह स्थान मैसूर राज्य का एक भाग बना रहा। चंद्रगिरि में मंदिरों के अतिरिक्त मुस्लिम राजाओं द्वारा बनवाया हुआ महल स्थित है जो अब खंडहर के रूप में है। इसकी दीवारें बड़े सुन्दर ढंग से केवल मिट्टी से बनाई गई थीं। इस महल की लम्बाई सैकड़ों फिट है।

कुडाफ :—आंध्र प्रदेश में मुस्लिम कला का दूसरा प्रसिद्ध स्थान कुडाफ है। यह स्थान हैदरअली के मैसूर राज्य में था किन्तु १७९९ ई० में अंग्रेजों ने निजाम की सहायता का धन्यवाद देते हुए इस जिले को निजाम के अधिकार में दे दिया था। तब से यह नगर हैदराबाद राज्य का एक अंग बन गया। इस नगर में कई प्राचीन मुस्लिम इमारतें और उनके खंडहर मिलते हैं।

इसी के समीप **बोमन पिल्ले** स्थान है जहाँ पर मीरजुमला के समय का बना हुआ एक प्रसिद्ध किला है। कुछ दिनों तक यह स्थान कर्नाटिक के नवाब की राजधानी भी रही। इस स्थान पर इतिहास की दृष्टि से हैदरअली के पिता फतेहनायक भी रहे हैं और हैदरअली ने भी इस स्थान के किले को और अधिक लम्बा चौड़ा किया। कहते हैं कि १७९१ में अंग्रेजों और टीपू सुलतान के बीच हुए युद्ध में यह किला भी अंग्रेजों के हाथ में आ गया था।

तालीकोटा विजय नगर राज्य का वह प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ नवाब गोलकुंडा और विजयनगर राज्य के बीच घमासान युद्ध हुआ था और इस युद्ध में विजयनगर का राजा पराजित हुआ था। तब से यह स्थान गोलकुण्डा के नवाब के अधिकार में आ गया। १७वीं शताब्दी में इस स्थान पर मुगल सम्राट औरंगजेब का अधिकार हुआ और फिर कुछ ही वर्षों के पश्चात् यह स्थान निजाम हैदराबाद के अधिकार में हो गया जो १७७६ ई० तक निजाम के अधिकार में रहा। इस स्थान पर युद्ध का ऐतिहासिक मैदान अब भी आसपास बस्तियों में से है।

ार (हैदराबाद का एक दृश्य)

ैदराबाद जो प्राचीन निज़ाम का
राजमहल था।
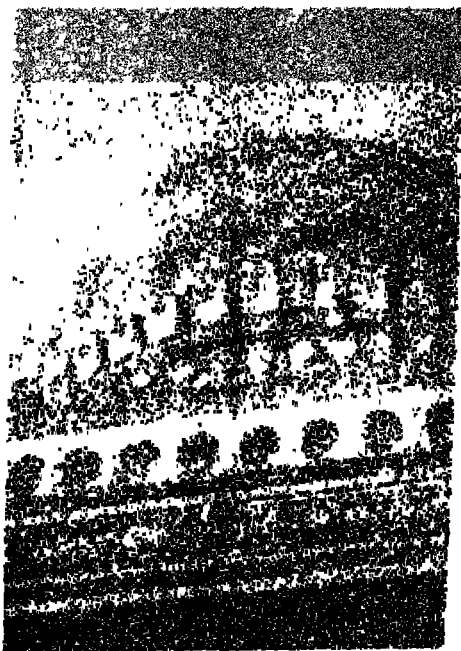
...ा के प्रसिद्ध सुल्तान कुली कुतुबशाह का मकबरा
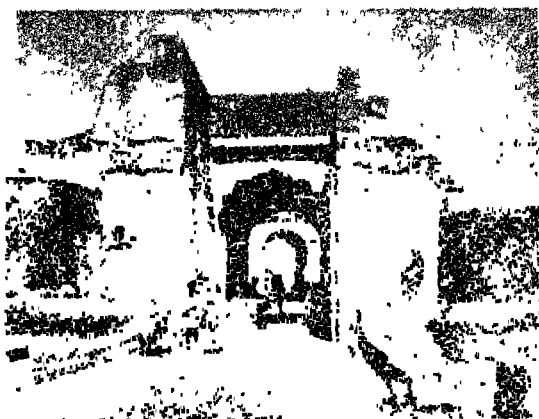
...ोरंगपटनम का टीपू सुलतान का किला

द्राक्षारामम् जिसे दक्ष वाटिका भी कहते हैं। यह स्थान प्राचीन हिंदू सभ्यता का भी प्रतीक रहा है। कहते हैं कि प्रसिद्ध मुसलमान फकीर सैय्यादशाह अली औलिया मदीना से यहाँ आये थे। वह यहाँ एक मठ में रहे जो बाद को एक मस्जिद मे बदल गयी। अब इस स्थान पर औलिया साहब का मकबरा बना हुआ है। इस मकबरे की जियारत करने के लिए दूर २ से मुसलमान आते हैं। यह मकबरा दक्षिण की मुस्लिम कला की एक सुन्दर इमारत है। इसके समीप ही **ओलन्दू** दिब्बा नाम के स्थान पर दो और मकबरे उन यात्रियों के है जो ७वी शताब्दी के आरंभ में बने थे। इन मकबरों की वास्तुकला बहुत ही सुन्दर और देखने योग्य है। यह दोनों स्थान पूर्वी गोदावरी जिले में है।

तालीकोटा के युद्ध के पश्चात् गंटूर जिले के समुन्द्र के किनारे के और भी स्थान गोलकंडा के नवाब के अधिकार में आ गये। गन्टूर स्वयं गोलकंडा के नवाब के अधिकार में आ गया किंतु १७वीं शताब्दी में गन्टूर पर औरंगजेब ने अधिकार किया फिर निजाम के राज्य का एक भाग बना। निजाम ने इस नगर का नाम मुर्तजानगर भी रक्खा था। इसमें अब भी मुस्लिम ढंग की कई इमारतें मिलती हैं जो उस समय की मुस्लिम कला का प्रतीक है।

दक्षिण भारत में मुस्लिम कला और मुस्लिम संस्कृति एवं सभ्यता का सबसे प्रसिद्ध स्थान **हैदराबाद, सिकन्दराबाद और गोलकंडा** हैं। हैदराबाद भारतवर्ष के ६ बड़े नगरों में से एक है। हैदराबाद और सिकन्दराबाद केवल एक झील हुसेन सागर द्वारा एक दूसरे से पृथक हैं। दोनों नगर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, मस्जिद, बाजार, पुल और झीलों के लिए प्रसिद्ध हैं। हैदराबाद को इतिहासकारों ने टर्की के प्रसिद्ध नगर कुसतुनतुनिया से उपमा दी है। हैदराबाद के चारों तरफ प्राकृतिक सौन्दर्य और प्लेटू के रमणीक दृश्य उसमें और चार चाँद लगा देते हैं। हैदराबाद की इमारतें प्राचीन दक्षिण की हिंदू कला से लेकर मुगल, स्वयं इगलिश, अमरीकन, जर्मन और फ्रांस की कलाओं तक का मिश्रण है। न केवल कला वरन् हैदराबाद की संस्कृति भी विभिन्न धर्म और भाषाओं के आधार पर आधारित है। हैदराबाद जितना ही विशाल और सुन्दर है उतना ही नया है। हैदराबाद कुतुबशाही के समय पूर्व एक छोटे से गांव के अतिरिक्त और कुछ न था। हाँ, **गोलकंडा** जो कि किसी समय इस क्षेत्र की राजधानी था उसका इतिहास कुछ पुराना है। वह काकतीय वंश के राजाओं द्वारा बसाया गया था। और उस समय

[illegible] नगर आबाद था। मोहम्मदशाह तृतीय जो कि बहमनी वंश का एक प्रसिद्ध बादशाह था और जिसके पूर्व लगभग १५० वर्ष तक बहमनी वंश के राजाओं ने राज्य किया। १४७० ई० में जब मोहम्मद शाह तृतीय गद्दी पर बैठा तो तिलंगाना के देश में विद्रोह की आग भड़क उठी। उस समय मोहम्मदशाह तृतीय के दरबार में [illegible] का एक तुर्की सिपाही जिसको बहादुर कहते थे इस विद्रोह को दबाने के लिये एक छोटी सी सेना के साथ भेजा गया। बहादुर ने इस विद्रोह को दबा लिया। मोहम्मद शाह तृतीय ने प्रसन्न होकर बहादुर को कुली शाह की उपाधि दी। इसके पश्चात् मोहम्मद शाह चतुर्थ ने कुली शाह को सुल्तान कुली के नाम से कुतुबुल्मुल्क की उपाधि देकर गोलकुन्डा का जागीरदार बना दिया। कुछ ही दिनों पश्चात उसकी नियुक्ति तिलंगाना के सेनापति पर कर दी गई। सन् १५१२ ई० में कुतुब शाह ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया क्योंकि इस समय बहमनी राज्य बहुत कमजोर और निकम्मा हो चुका था। अब यह सेनापति सुल्तान कुली कुतुब शाह के नाम से गोलकुन्डा को अपनी राजधानी बनाकर यहाँ का बादशाह बन बैठा।

सुल्तान कुली कुतुब शाह ने गद्दी पर बैठते ही सबसे पहला कार्य यह किया कि गोलकुन्डा का किला जो कि मिट्टी का बना हुआ था उसे सुन्दर ढंग में पहाड़ काटकर पत्थरों की दीवारों से बनवाया। और भी कई सुन्दर इमारतें और दरबार आम व दरबार खास उसने इस किले के भीतर बनवाये। गोलकुंडा के किले को देखकर आज भी विदेशी यात्रियों को आश्चर्य होता है कि इतना बड़ा किला पहाड़ों को काटकर किस प्रकार उस समय बनवाया होगा जबकि पत्थरों को काटने वाली मशीनें पर्याप्त नहीं थी। कुली कुतुब-शाह के पश्चात् कुतुबशाही वंश के और भी कई बादशाह हुये, जो कुतुबशाह की उपाधि से ही गद्दी पर बैठे। कुतुबशाही वंश के बादशाह ने गोलकुंडा के किले को और भी अधिक बढ़ाया और पूरे नगर के चारों ओर पत्थर की ऊंची २ दीवारें खड़ी करा दी। किले के भीतर अब अधिक इमारतों की फैलाव की गुञ्जाइश नहीं थी इसलिये इस बादशाह ने मूसी नदी के पार एक नया नगर बसाने की ठानी। यह वही नगर है जो आज हैदराबाद के नाम से प्रसिद्ध है, किंतु उस समय कुली कुतुबशाह ने इस नगर का नाम हैदराबाद नहीं वरन् भाग्यनगर रक्खा था। कारण यह था भाग्यवती नाम की एक स्त्री मूसी नदी के पार इसी गांव में रहती थी। यह बड़ी सुन्दर और रूपवती थी। बादशाह उससे मिलने के लिये गोलकुंडा से घोड़े पर सवार होकर मूसी नदी को पार करके जाता था। इसीलिये बादशाह ने भाग्यमती के नाम पर इस नगर का नाम भी भाग्यनगर रक्खा अब भी

हैदराबाद का एक बाजार और कुछ भाग भाग्यनगर के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि जब भाग्यमती का विवाह बादशाह से हो गया तो उस समय की प्रथा के अनुसार बादशाह की सबसे बड़ी रानी को हैदरबाई की उपाधि दी जाती थी। अतः भाग्यवती को भी हैदरबाई की उपाधि मिली। उस समय से भाग्यनगर का नाम हैदराबाद रक्खा गया।

हैदराबाद का मुख्य प्रतीक चारमीनार है जो हैदराबाद की मुस्लिम कला और संस्कृति की जीती जागती तस्वीर है। चारमीनार हैदराबाद नगर के मध्य में एक मुख्य बाजार में स्थित है। इसके चारों ओर नगर की प्रसिद्ध बाजारें है। इसकी कला दिल्ली की कुतुब की लाट से मिलती जुलती है। केवल अन्तर इतना है कि चारमीनार में जिस प्रकार पत्थर काटकर लगाये गये हैं कुतुब की लाट में नहीं है। चारमीनार के चारों ओर कुतुब की लाट की प्रकार बड़े २ गुम्बद बने हुये है जिनपर चढ़कर यात्री हैदराबाद नगर का पूरा दृश्य देख सकते हैं।

इस युग की दूसरी सुन्दर इमारत जो १५६० ई० में बनी वह जामा मस्जिद है। यह मस्जिद भी कुली कुतुबशाह पंचम के युग में ही बनी थी। इस मस्जिद को देखने से कुतुबशाही युग की कला और संस्कृति और वास्तुकला का अनुमान भलीभांति किया जा सकता है। इस मस्जिद में जो पत्थर लगाये गये हैं उनको बड़े सुन्दर ढंग से तराशा गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय पत्थर तराशने के बड़े निपुण और योग्य कलाकार थे।

हैदराबाद में मूसी नदी का पुराना पुल जो कि पुराने पुल के नाम से ही प्रसिद्ध है। इसी समय का इसी बादशाह का बनवाया हुआ है। यह पुल गोलकुंडा से हैदरबाद जाने का मार्ग था। इस पुल को जितने सुन्दर और मजबूत ढंग से बनवाया गया है उसे देखकर यह अनुमान भली भांति लगाया जा सकता है कि कुतुबशाही युग में वास्तुकला बडी ही उच्च कोटि की थी। उस समय की इमारतें और पुल आज भी उतने ही मजबूत और सुन्दर है जितने उस समय मे थे और उन्हें देखने से ऐसा लगता है जैसे कि वह अभी २ बने हों। कुतुबशाही युग में फरिश्ता नाम का एक विदेशी यात्री हैदराबाद में गया था। उसने उस समय के हैदराबाद के सुन्दर दृश्यों, आलीशान इमारतों और मूसी नदी पर बने हुए पुल की बडी प्रशंसा की है और उसने यहां तक लिखा हैं "जितना सुन्दर और स्वच्छ यह नगर है उतना सुन्दर और स्वच्छ नगर भारतवर्ष में कोई दूसरा नही।" आगे चलकर उसने लिखा है कि इस नगर में जिस प्रकार बाजार बनाई गई है और

[illegible] के अन्तर्गत किया गया है।

[illegible] ने कुतुबशाही बादशाह के विरुद्ध सन् १६८४ में अपनी सेनायें युद्ध [illegible] को, किन्तु उन प्रयासों को १६८७ तक सफलता प्राप्त न हो सकी। [illegible] ८ महीने लगातार औरंगजेब की मुगल सेनाएँ गोलकोंडा का घेरा डाल पड़ी रहीं किन्तु उन्हें बराबर निराशा का ही मुंह देखना पड़ा और कुतुबशाही मुट्ठी भर सेनाओं ने समुन्द्र की प्रकार उमड़ती हुई औरंगजेब की भारी सेनाओं [illegible] किये जैसे शायद भारतवर्ष में कभी भी औरंगजेब की सेनाओं के नहीं किये होंगे। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि औरंगजेब के संबंध में [illegible] प्रसिद्ध था कि वह जिस क्षेत्र को भी विजय करता है वहाँ के लोगों को जबर-दस्ती मुसलमान बनने के लिये बाध्य करता है और मंदिरों को तुड़वाकर मस्जिदें खड़ी करा देता है। इससे दक्षिण की हिन्दू जनता में एक आतंक सा छा गया और उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध कुतुबशाही सेनाओं की तन, मन, धन से सहायता की। दूसरा यह कि कुतुबशाही बादशाहों ने स्वयं भी हिंदुओं के साथ मेलजोल और उदारता का व्यवहार बनाये रखा था और हिंदू संस्कृति, हिंदुओं की भाषायें और उनके मन्दिरों को कभी कोई ठेस नहीं पहुंचाई थी। उनका बर्ताव हिन्दू और मुसलमान जनता के साथ समान था। स्वयं कुतुबशाही बादशाहों ने तेलगू भाषा सीखी और उसे उन्नति दी। इससे कुतुबशाही बादशाहों के हाथ और भी मजबूत हो गये। औरंगजेब ने गोलकुण्डा विजय करने के लिये और हैदराबाद पर अधिकार जमाने के लिये अपनी सारी शक्ति जुटा दी थी। आखिर कुतुबशाही फौजें मुगलों की इतनी बड़ी सेनाओं के मुकाबले में पराजित हुईं और १६८८ में हैदराबाद मे मुगल राज्य स्थापित हो गया किन्तु दक्षिण के छोटे मोटे राजाओं और नवाबों और विशेषतयः शिवाजी ने जो कि मरहठों के सरदार थे, दक्षिण में औरंगजेब को चैन से नहीं बैठने दिया। औरंगजेब ने हैदराबाद में निजामउलमुल्क को अपना सूबेदार बनाकर भेजा, किन्तु सन् १७२४ ई० में निजामउलमुल्क ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया और हैदराबाद में मुगल साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। तब से आसफिया वंश के बादशाह निजाम की उपाधि से हैदराबाद में राज्य करते रहे जो भारत के स्वतंत्र होने तक स्थापित रहा।

गोलकंडा का किला जो सुलतान कुतुबशाह ने बनवाया था ४०० फी ऊंचे पहाड़ों पर लगभग ७ मील के क्षेत्रफल में बना हुआ है। इसका आलीशा दरवाजा और दरबारेआम और दरबारेखास, खिलवत खान बनाते महल विशेषतयः प्रसिद्ध है। इनमें तारावती महल, प्रेमवती महल, भागम
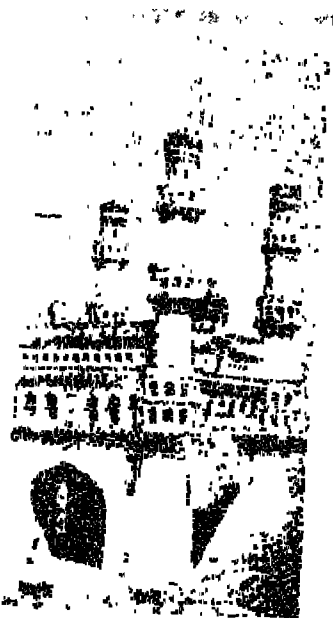
बाद की कला का प्रतीक
चार मीनार।
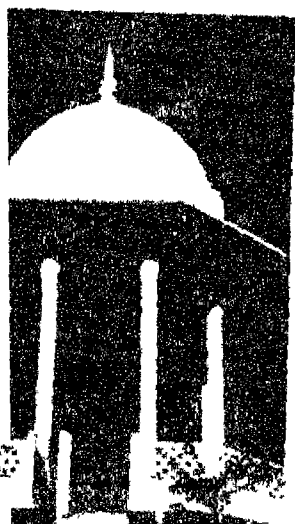
सालारजंग द्वितीय जिन्होंने प्रसिद्ध
सालारजंग आजायब घर की नींव रक्खी

महल और बख्शी बेगम महल बहुत ही प्रसिद्ध है जो कुतुबशाही बादशाहों द्वारा अपनी २ प्रेमिकाओं के नाम से बनवाये गये हैं। इसके अतिरिक्त ६ महल जो कि नौ महला के नाम से प्रसिद्ध है अलग से बने हुए है। इन महलों की कला और चित्रकारी देखने से उस समय की संस्कृति और सभ्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। गोलकंडा के समीप ही उत्तर पश्चिम में एक सुन्दर फूलों का बाग है जिसे इब्राहीम बाग कहते हैं। इस बाग में कुतुबशाही वंश के ७ बादशाहों के मकबरे बड़ी सुन्दर वास्तुकला में बने हुए हैं उनके नाम इस प्रकार हैं :—

१. सुल्तान कुली कुतुबशाह, २. सुबहान कुली ३. इब्राहीम कुली ४. जमशेद कुली ५. मोहम्मद कुली ६. मोहम्मद कुतुब ७. अब्दुल्ला कुतुब शाह। इनमें सबसे सुन्दर मकबरा सुलतान कुली कुतुबशाह का है। इसके अतिरिक्त हयात बख्शी बेगम निजामउद्दीन और प्रेमवती के मकबरे भी बने हुए हैं। इन मकबरों की कला अपने ही ढंग की है जो उस समय प्रचलित थी। इसमें ऊपर जो गोल गुम्बद बनाये गये है अन्दर से उनमें मीनाकारी और नक्काशी का काम बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। इन मकबरों में उस समय के दक्षिण भारत की हिंदू वास्तुकला की झलक भी दिखाई देती है। उदाहरण के रूप में कमल के फूल, कमल के पत्ते और कमल की अधखिली कलियाँ आदि २। जो स्तम्भ इन मकबरों में बने हैं वे भी हिन्दू ढंग के प्राचीन इमारतों के प्रकार हैं।

हैदराबाद की दूसरी आलीशान और सुन्दर इमारत मक्का मस्जिद है। यह मस्जिद अपने ढंग की निराली और सुन्दर है। इसमें जो पत्थर तराश कर लगाये गये हैं उनकी कला इतनी सुन्दर और स्वच्छ है कि शायद भारत के किसी अन्य नगर में नहीं मिलेगी। इस मस्जिद को मोहम्मद कुतुबशाह ने १६५४ ई० में बनवाया था। इस मस्जिद का क्षेत्रफल ३६० वर्ग फीट है। इस मस्जिद में निजाम वंश के सभी बादशाहों और अन्य परिवार के लोगों की कब्रें बनी है। इसी प्रकार मुशीराबाद मस्जिद और टोली मस्जिद भी कुतुबशाही युग की वह सुन्दर मस्जिदें हैं जिनकी कला को देखकर मनुष्य को आश्चर्य होता हैं।

हाशिम पिट के मकबरे भी कुली कुतुबशाही युग की प्रसिद्ध इमारतों में से है जिनकी कला कुतुबशाही ढंग की वास्तुकला की प्रतीक है। हाशिम पिटगाँव सिकन्दराबाद से ४ मील दूर है। इस गाँव में ५०० से अधिक मकबरे बने हुये हैं। कहते हैं कि यह मकबरे अब से लगभग २ हजार वर्ष पूर्व के बने हुए हैं।

फतेह मैदान हैदराबाद में एक प्रसिद्ध और ऐतिहासिक स्थान है। अब वह स्थान हैदराबाद की सार्वजनिक संस्था में परिणत हो गया है। यह मैदान पहाड़ियों के ऊपर बना सुन्दर स्थान है। यह मैदान वह स्थान है जहाँ मुगल सम्राट औरंगजेब ने गोलकुण्डा पर घेरा डालने के लिये अपनी सेनाओं के डेरे डाले थे और गोलकुंडा पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् इस मैदान का नाम फतेह मैदान रक्खा था।

इसी प्रकार फलकनुमा महल हैदराबाद की सुन्दर इमारतों और दृश्यों में से एक है। यह महल हैदराबाद के सबसे ऊँचे सैनाई पर्वत पर स्थित है। इस महल को देखकर हैदराबाद की वास्तुकला का अनुभव भली प्रकार हो सकता है। यह महल इतना विशाल और सुन्दर है कि इसको सन् १८९७ में वर्तमान निजाम के पिता निजाम महबूब अली पाशा ने ३५ लाख रुपये में विकारुलउमरा से मोल लिया था। इस महल में सोने चांदी के बर्तन, सुन्दर झाड़ और अन्य सजावट की बहुत सी वस्तुयें हैं। अब यह महल एक बहुत बड़े पुस्तकालय और अतिथि भवन में परिणत हो गया है।

हिमायत सागर भी हैदराबाद के सुन्दर दृश्यों में से एक है। यह लगभग डेढ़ मील लम्बा है और इसके एक तरफ पत्थर की सुन्दर दीवार बनी हुई है। हिमायत सागर हैदराबाद नगर से लगभग १२ मील दूर है। हिमायत सागर से कुछ दूर उस्मान सागर है। उस्मान सागर भी हैदराबाद का एक बहुत ही रमणीक और सुन्दर दृश्य है। उस्मान सागर के किनारे जो दीवार और डाम बना है उसकी लागत ५०,००,००० रु० है। इस झील के समीप ही एक सुन्दर बाग है जहाँ इतवार के दिन पिकनिक करने वाले यात्रियों की भीड़ रहती है। इसके समीप अब बड़े २ सुन्दर बंगले और अतिथि हाउस बनाये गये हैं।

हुसेन सागर हैदराबाद का सबसे पुराना सागर है जो कुतुबशाही समय में बनाया गया था। इसका दृश्य भी बड़ा ही सुन्दर और आकर्षक है। यह २१ मील के क्षेत्र में है। इस पर पुल जो बना है उसकी लम्बाई एक मील है। अब इस पुल के किनारे २ बहुत चौड़ी सीमेंट की रोड बना दी गई है जो हैदराबाद और सिकन्दराबाद को एक दूसरे से मिलाती है। सायंकाल को इसके किनारे सैर करने वाले स्त्री और पुरुषों के झुंड के झुंड दिखाई पड़ते हैं।

इसी प्रकार मीर आलम टैंक (झील हैदराबाद के सुन्दर और ऐतिहासिक

दृश्यों में से एक है। यह झील सन् १८०६ में बनवाई गई थी। इस झील के किनारे जो पत्थर लगे हैं उनको बड़े सुन्दर ढंग से तराशा गया है। कहते हैं कि यह पत्थर किसी फ्रांस के इन्जीनियर की संरक्षकता में तराशे गये थे। इस झील पर एक सुन्दर डाम बना हुआ है और एक डाक बंगला है जो सालार जंग अतिथि हाउस के नाम से प्रसिद्ध है।

मुस्लिम कला और संस्कृति के दृष्टिकोण से आँध्र प्रदेश में करीम नगर भी बहुत प्रसिद्ध है। पहले इस नगर का नाम सरकार एलागगनदल था। यह नगर पहले वारंगल के नवाबों के हाथ में था फिर मालिक काफूर ने जो अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति था सन् १३०६ ई० में इस क्षेत्र पर आक्रमण किया और राजा प्रताप को पराजित करके इस क्षेत्र को खिलजी राज्य में मिला दिया। सन् १५०७ में करीमनगर कुतुबशाही वंश के राजाओं के हाथ में आ गया। उसके पश्चात् निजाम राज्य का यह एक भाग बना। करीम नगर का किला बहुत ही प्रसिद्ध और प्राचीन हिन्दू मुस्लिम मिश्रित कला का प्रतीक है।

दूसरा प्रसिद्ध किला खम्माम का है। कहते है कि यह किला और इसके भीतर एक मस्जिद, जिसकी वास्तुकला बड़ी सुन्दर है, जफरउलदौला ने सन् १७६८ में बनवाई। इस मस्जिद में जो गुम्बद बने हैं वह वास्तव में दक्षिण भारत की हिन्दू मुस्लिम कला का मिश्रित उदाहरण है।

आंध्र प्रदेश में करनूल जिला मुस्लिम बादशाहों द्वारा बनवाई हुई इमारतों के लिए प्रसिद्ध है। इस नगर को किसी समय अब्दुल वहाब खां नाम के सूबेदार ने नबाब बोजापुर की संरक्षता में उन्नति दी और कई सुन्दर इमारतें बनवाई। सन् १७५१ में फ्रांस के एक सैनिक बुसी ने करनूल के किले पर अपना अधिकार जमा लिया किंतु १७५५ में हैदरअली ने करनूल पर आक्रमण किया तब करनूल के नवाब ने २,२२,००० रु० देकर उससे संधि कर ली। फिर १७६६ में करनूल निजाम के राज्य का एक अंग बन गया। १८०० ई० में निजाम ने यह नगर और कई नगरों के साथ अंग्रेजों को दे दिया। अंग्रेजों ने इस नगर को फिर नबाब करनूल के हवाले कर दिया और एक लाख रुपया सालाना नबाब से लेते रहे। सन् १८३८ में अंग्रेजों ने नबाब को विद्रोहियों से शामिल करने के अभियोग में गद्दी से उतार दिया और नबाब अंग्रेजी हकूमत द्वारा मार डाला गया। इस नगर में कई इमारतें उस समय की खंडहर के रूप में है। इन इमारतों में दक्षिण भारत की कला का ही प्रयोग किया गया है

( )

महबूब नगर बहमनी राज्य का एक प्रसिद्ध क्षेत्र रहा है। इसमें बहमनी वंश के बादशाहों ने एक किला और कुछ इमारतें बनवाईं जो अब खंडहर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। बहमनी बादशाहों की पराजय के पश्चात् महबूब नगर का कुछ क्षेत्र कुतुबशाही बादशाहों के अधिकार में आ गया और कुछ भाग नवाब बीजापुर के आधिपत्य में आ गया। महबूब नगर का उस समय का नाम महबूब करनूल था। [illegible]शाह बहमनी ने इस नगर की बड़ी उन्नति की। इस जिले में फरहाबाद २००० फीट की ऊंचाई पर पहाड़ पर बसा हुआ बड़ा ही सुन्दर स्थान है। दक्षिण के लोग अक्सर गर्मियों में यहाँ हवा खाने जाते हैं।

तिलंगाना क्षेत्र में बेशक मुस्लिम कला और संस्कृति का एक प्रसिद्ध स्थान रहा है। बहमनी बादशाहों ने इस क्षेत्र में कई सुन्दर इमारतें बनवाईं, फिर जब यह क्षेत्र कुतुबशाही राजाओं के अधिकार में आया तो उन्होंने भी दक्षिण की हिन्दू और मुस्लिम वास्तुकला से पूर्ण कई इमारतें बनवाईं। १७६१ में यह भाग निजाम राज्य में सम्मिलित हुआ। उस समय भी यहाँ की वास्तुकला में काफी उन्नति हुई। इस समय तेलगू भाषा का भी पर्याप्त प्रचार हुआ और स्वयं बहमनी व कुतुबशाही बादशाहों ने तेलगू के विद्वानों को अपने दरबार में स्थान दिया।

बहमनी राज्य में गोलकोण्डा क्षेत्र में भी उस समय की कला और संस्कृति का काफी उत्थान हुआ। फिर जब यह क्षेत्र कुतुबशाही राजाओं के अधिकार में आया तो उनके समय में भी दक्षिण की भाषाओं, कला और संस्कृति की काफी प्रगति हुई। निजामुलमुल्क के अधिकार में आने के पश्चात् इस क्षेत्र में कई सुन्दर इमारतें और स्थान बनाये गये।

नेलौर जिले में उदयगिरि स्थान भी हिन्दू और मुसलमान दोनों की ही कला और संस्कृति का मिला जुला स्थान है। इसके पहाड़ की चोटी पर एक बड़ी सुन्दर मस्जिद है जो सन् १६६० ई० में गोलकंडा के सुल्तान अब्दुल्ला के समय बनी थी। इस मस्जिद में फारसी भाषा में भी मस्जिद के बनने की सन् लिखी हुई है। नवाब अर्काट का जब इस स्थान पर आधिपत्य हुआ तो उन्होंने इसे एक व्यक्ति मुस्तफा अली खां को जागीर में दे दिया। इस स्थान पर कई सुन्दर झरने भी बड़ा सुन्दर दृश्य उपस्थित किये हुए हैं।

निजामाबाद आंध्र प्रदेश में मुस्लिम कला और संस्कृति का बहुत बड़ा केन्द्र रहा है। १३११ ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने इस स्थान पर आक्रमण
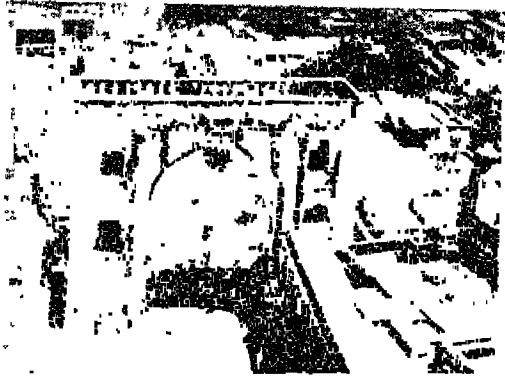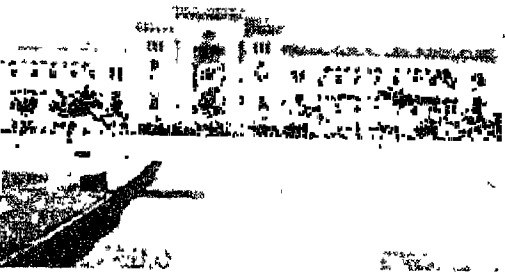
चारमीनार बाज़ार का पूरा दृश्य

उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद

म्यूजियम में शाहजहाँ बादशाह के समय की कला
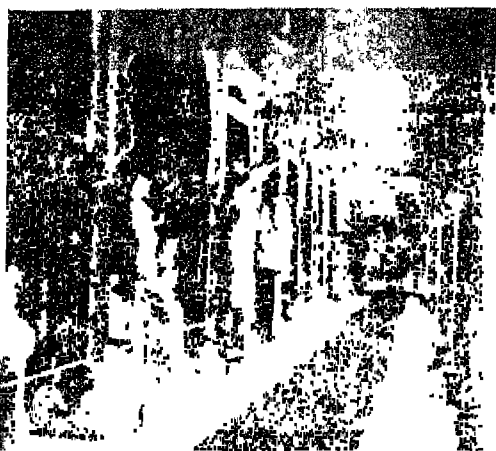
ंग म्यूज़ियम में शीशे के महल का एक फोटू
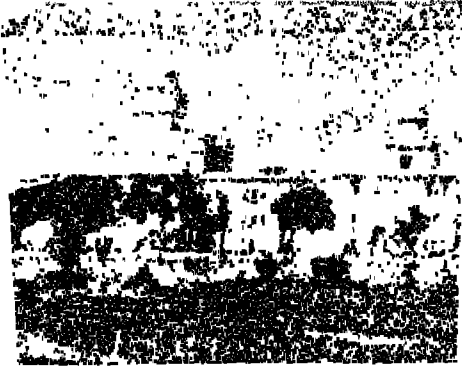
उस्मानिया अस्पताल हैदराबाद

प्रसिद्ध इमारत जो हिमायत सागर के किनारे बनी है।

हैदराबाद में स्टेट लाइब्रेरी की इमारत

अजन्टा पवैलियन हैदराबाद

करके इसे अपने राज्य में सम्मिलित किया फिर कुछ ही दिन पश्चात् यह क्षेत्र बहमनी राज्य में सम्मिलित हो गया उस के पश्चात् इस क्षेत्र पर गोलकुन्डा के कुतुबशाही वंश के राजाओं का अधिकार हुआ। और फिर मुगल और निजाम के राजाओ का अधिकार हुआ तत्पश्चात मुगल और निजाम के अधिकार में आया। इस जिले में कई सुन्दर इमारतें और स्थान दक्षिण की कला मे पूर्ण बने हुए हैं। निजाम सागर नाम का एक डाम मनजीरा नदी पर बड़े सुन्दर ढंग से बनाया गया है। एक डाम की कला बड़ी ही सुन्दर और अनोखी है। इसके किनारे अब कई बंगले भी बन गये हैं। जामा मस्जिद एक बड़ी ही सुन्दर इमारत है, जो दक्षिण की वास्तुकला और पत्थर काटने की कला का एक अद्वितीय उदाहरण है।

वारंगल भी मुस्लिम कला और संस्कृति का केन्द्र रहा है। सन् १४२२ ई० में बहमनी बादशाहों ने वारंगल पर अधिकार किया और कई सुन्दर इमारतें बनवाईं फिर कुतुबशाही बादशाहों के अधिकार में आया। उन्होंने भी कई सुन्दर इमारतें बनवाईं। निजाम के समय की भी कुछ इमारतें बनी हुई हैं। इस जिले में पखाल झील का दृश्य सबसे अधिक सुंदर और आकर्षक है। यह झील १२ वर्ग मील के क्षेत्रफल मे है। इस पर एक बांध भी बना हुआ है जो लगभग ३ मील लम्बा है। यह झील चारों तरफ से बड़े सुन्दर दृश्यों से घिरी हुई है। यहां जंगली हाथी और भी जंगली जानवर पाये जाते है। इस झील के बांध से बीच मे मुस्लिम समय की इमारतों के खंडहर भी पाये जाते है। एक चबूतरा बना हुआ है जिसे शिताब खाँ के चबूतरे के नाम से पुकारते हैं।

वारंगल जिले में ही दूसरा प्रसिद्ध स्थान मुस्लिम कला से परिपूर्ण काजीपेट है इस स्थान पर एक मकबरा बना हुआ है जिसे किसी प्रसिद्ध काजी ने बनवाया था इसीलिये इस स्थान का नाम काजी पेट पड़ गया। इस मकबरे की वास्तुकला और उसके गुम्बद का ढंग प्राचीन दक्षिण की वास्तुकला से मिलता जुलता है।

मैसूर राज्य में भी श्री रंगपटनम् और उसके निकट हैदरअली और टीपू सुलतान द्वारा कई इमारतें और विशेषतया: श्री रंगपटनम् का किला दक्षिण की कला का प्रतीक है इसके समीप ही हैदरअली का मकबरा है इस मकबरे के समीप और भी कई मकबरे हैं इनकी कला प्राचीन दक्षिण कला से मिलती जुलती है

प्रायः उत्तरी भारत में हुआ सन् १३९८ में एक ब्राह्मण के घर में, किन्तु एक मुसलमान जुलाहा कबीर को जब वह अबोध बच्चे थे एक तालाब के किनारे से उठा ले गया। उसने उनका पालन पोषण किया। कबीर के दोहे भारतवर्ष के कोने २ में प्रसिद्ध है। वह हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही समान दृष्टि से देखते थे। उनकी संस्कृति और सभ्यता का प्रभाव उत्तर के अतिरिक्त दक्षिण में भी उतना ही पड़ा। इसी प्रकार मुसलमान धर्म में कुछ सूफी विचारधारा के व्यक्ति उत्पन्न हुए जिनका प्रभाव भी दक्षिण में उत्तर से अधिक पड़ा। बहमनी राज्य में ऐसे लोगों और विद्वानों का बड़ा ही आदर सत्कार होता था जो हिंदू मुस्लिम संस्कृति के मिश्रण की शिक्षा देते थे। बहमनी वंश के राजा दूसरे धर्मों के साथ बड़े ही उदार थे। दक्षिण में वैसे भी रैदास, रामदास और भी कई बड़े २ संत हुए है जिन्होंने मस्जिद, मंदिर दोनों को भगवान का घर कहकर हिन्दू और मुसलमानों को एक दूसरे के निकट आने का आवाहन किया था। यही कारण था कि उत्तर की अपेक्षा दक्षिण भारत में मुसलमान युग में ऐसी घटनाये नहीं घटी जैसी उत्तर में घटी और यही कारण था कि दक्षिण में औरंगजेब के पैर नहीं जमे।। वह दक्षिण में अपना साम्राज्य स्थापित करने के स्वप्न को देखता ही देखता मर गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् तो दक्षिण भारत में जो कुछ स्थान उसने अपनी समस्त शक्ति लगाकर प्राप्त भी किये थे वे भी निकल गये।

औरंगजेब के दक्षिण में पैर न जमने के कारण दक्षिण की कला और सभ्यता की मन्दिरों और तीर्थ स्थानों को कोई ठेस नहीं पहुंची। निजामुलमुल्क ने अपने को १७२४ में स्वतन्त्र घोषित करते ही औरंगजेब की नीति और औरंगजेब के फरमानों को मूसी नदी में डुबो दिया। उसने हिन्दुओं से मेल जोल की वही नीति जो बहमनी बादशाहों, कुतुबशाही बादशाहों, बीजापुर के नवाबों और हैदरअली व टीपू सुलतान ने रक्खी थी जारी रक्खी। उसने दक्षिण की प्राचीन भाषाओं तेलगू और तामिल के प्रति उदारता का परिचय दिया। हिन्दू और बौद्ध कालीन जो मंदिर, स्तूप और तीर्थ स्थान बने थे उनके प्रति भी उसने उदारता रक्खी अजंता और एलोरा जैसे महत्वपूर्ण स्थानों की रक्षा की और सरकारी कोष से उनके रख रखाव और देख रेख का प्रबन्ध किया। इससे निजामुलमुल्क के पैर मजबूत हो गये और दक्षिण में मुस्लिम साम्राज्य की बुनियाद हिल चुकी थी वह पुनः मजबूत हो गई।

तीर्थ स्थानों के लिये जाना आर [illegible] दिया । यही कारण था कि श्री रंगपट्टनम् में जब अंग्रेजी फौजों ने आक्रमण किया तो वहाँ की हिन्दू मुसलमान जनता ने एक मत होकर टीपू सुल्तान की सहायता की, किन्तु दक्षिण के कुछ मुसलमान राजाओं ने जिनमें निजाम का भी हाथ था अंग्रेजों की सहायता करके टीपू सुल्तान को पराजित किया फिर भी टीपू सुल्तान की वीरता की गाथायें न केवल दक्षिण भारत में वरन् भारत के कोने २ में प्रसिद्ध है। मुस्लिम काल में हिन्दू और मुस्लिम मिश्रित कला और संस्कृति और वास्तुकला की उन्नति दिन दूनी और रात चौगुनी होती रही। इस युग में भी दक्षिण भारत में तामिल, तेलगू कन्नड़ और मलयालम भाषाओं के बड़े २ प्रसिद्ध विद्वान कवि और नाटककार हुये हैं। इनमें त्यागराज, रवि वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस युग में फारसी और उर्दू का प्रचार भी दक्षिण के कई स्थानों विशेषतया: हैदराबाद और गोलकुंडा आदि राज्यों में हुआ किन्तु उससे दक्षिण भारत की भाषाओं को कोई अधिक ठेस नहीं पहुंची। कुछ गिने चुने नगरों को छोड़कर शेष देहातों और ग्रामों की भाषायें दक्षिण की स्थानीय भाषायें ही बनी रही।

आधुनिक युग

दक्षिण में मुगल साम्राज्य की समाप्ति के साथ २ कई छोटे मोटे राज्य स्थापित हो गये। मराठों की लूट मार से दक्षिण में और भी आतंक पैदा हो गया। जनता की सुरक्षा खतरे में पड़ गयी और एक प्रकार की अराजकता सी फैलने लगी। छोटे मोटे राजे और बादशाहों की आर्थिक दशा निरंतर बिगड़ती गई। यहाँ तक बहुत से राज्यों में वेतन भी बहुत मुश्किल से मिलता था। उधर पिन्डारियों का आतंक और भी अधिक ज़ोर पकड़ गया। पिन्डारी अमीर खां, करीम खां और चीतू नाम के तीन सरदारों ने तो महाराष्ट्र से लेकर गोलकुन्डा के किले तक आतंक फैला दिया। परिणाम यह हुआ कि पश्चिम के विदेशी लोग भारत में आ धमके। पहले यह लोग व्यापारी के रूप में दक्षिण भारत और पश्चिमी घाट के किनारे पर आये। इनमें पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच और अंगरेज मुख्यतयः व्यापारियों के रूप में भारत में आये। आरंभ में तो यह लोग राजनीति से अलग रहे किंतु अंत में जब उन्होंने भारत के राजाओं और बादशाहों में एक दूसरे के प्रति घृणा, ईर्षा और द्वेष की नीति देखी तो उन्हें दक्षिण भारत में भी अपने पैर जमाने का अवसर मिला। पहले इन लोगों में आपस में ही मतभेद आरंभ हुआ और एक देश के व्यक्ति को नीचा दिखाकर भारत से हटाने की सोचने लगे। इनमें एक फ्रांसीसी सैनिक डियूप्ले का नाम उल्लेखनीय है। इसने मद्रास के कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों से मिलकर अपना अड्डा जमाया और वह मद्रास के लोगों से इतना मिल जुल गया कि उनके शादी विवाह आदि में भी सम्मिलित होने लगा।

उधर पूना में अंगरेज व्यापारियों ने पेशवा से मेल जोल करके वहाँ के लोगों से मिलना जुलना आरम्भ किया। पेशवा अंग्रेजों से बड़ा प्रभावित हुआ और वह अक्सर त्योहारों और उत्सवों के समय उन्हें बुलाने लगा। इस प्रकार अंग्रेजों ने पूना से लेकर बम्बई और मद्रास तक आना जाना आरंभ किया। फिर शनै २ ईस्ट इंडिया कम्पनी की नींव जमने लगी। पुर्तगाली लोगों ने कुछ दक्षिण के लोगों को ईसाई बनाने का कार्य किया। इस कारण वे गोवा दामन द्यू से आगे नहीं बढ़ सके पुर्तगालियों ने धर्म के मामलों में [illegible] बरतीं और उन्होंने जबरदस्ती धर्म परिवर्तन
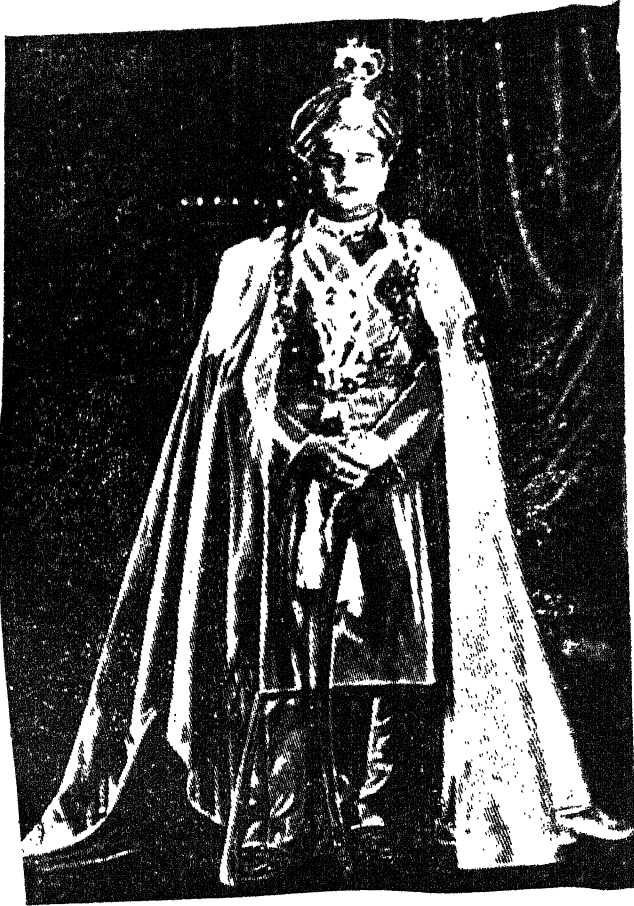
मैंसूर राज्य के कला प्रेमी महाराज चामराज वाडियार